वर्ष-07 - अंक 289
पृष्ठ-12 मूल्य : 03 रुपया

लखनऊ
रविवार ,26 जुलाई 2026

RNI.No. UPHIN/2019/79073
केंद्रीय सुचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार CBC (DAVP) द्वारा जारी दर पर विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय हिंदी दैनिक अख़बार

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
swatantraprabhat.com

स्वतंत्र प्रभात

epaper.swatantraprabhat.com
जो लिखेगा, वही टिकेगा

लखनऊ से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून गाज़ियाबाद , दिल्ली ,पंजाब , हरियाणा ,चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

संचारी रोग नियंत्रण अभियान की समीक्षा, सभी विभागों 3
अंतरराष्ट्रीय खेल सुविधाओं से लैस होकर बरेली का स्पोर्ट्स 4
इफको कॉर्डेट, में नैनो उर्वरकों पर सहकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम 11

सरकार से समझौते के बाद सीजेपी ने खत्म किया जंतर-मंतर का आंदोलन

तीसरे दौर की वार्ता रही सफल, एफआईआर वापस लेने और पांच सूत्रीय मांगों पर कार्रवाई का आश्वासन

नई दिल्ली(एजेंसी)। दिल्ली के जंतर-मंतर पर एक महीने से अधिक समय से जारी कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) का विरोध प्रदर्शन शनिवार को समाप्त हो गया। केंद्र सरकार के साथ तीसरे दौर की बातचीत सफल रहने के बाद पार्टी ने तत्काल प्रभाव से आंदोलन वापस लेने की घोषणा की। सीजेपी का कहना है कि सरकार ने उसकी प्रमुख मांगों पर सहमति जताई है और तय समय-सीमा में उन्हें लागू करने का भरोसा दिया है। आंदोलन समाप्त होने के बाद पार्टी ने देशभर से आए प्रदर्शनकारियों से शांतिपूर्ण ढंग से अपने-अपने घर लौटने की अपील की। शनिवार को केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा और डॉ. जितेंद्र सिंह ने सीजेपी के दो सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल में पार्टी के मुख्य प्रवक्ता सौरव दास शामिल थे। दोनों पक्षों के बीच हुई तीसरे दौर की वार्ता के बाद सीजेपी ने प्रेस वार्ता कर आंदोलन समाप्त करने की घोषणा की। सीजेपी के मुख्य प्रवक्ता सौरव दास ने बताया कि सरकार ने प्रदर्शनकारियों के खिलाफ दर्ज मामलों पर सकारात्मक रुख अपनाया है। उनके अनुसार, दिल्ली के साथ-साथ भाजपा शासित और भाजपा

समर्थित राज्यों में आंदोलनकारियों के खिलाफ दर्ज एफआईआर वापस लेने पर सहमति बनी है। उन्होंने कहा कि सरकार ने आश्वासन दिया है कि दर्ज सभी एफआईआर की प्रतियां तीन से चार दिनों के भीतर उपलब्ध करा दी जाएंगी तथा इन्हें वापस लेने की प्रक्रिया भी शीघ्र शुरू होगी। दास ने कहा कि इस संबंध में पार्टी ने सरकार को एक मसौदा भी सौंपा है, जिस पर मंगलवार तक अंतिम जवाब मिलने की उम्मीद है। सौरव दास ने कहा कि सरकार की ओर से मिले आश्वासनों पर विश्वास जताते हुए सीजेपी ने आंदोलन समाप्त करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि पार्टी यह मानकर आंदोलन वापस ले रही है कि तय समय-सीमा के भीतर सभी सहमत बिंदुओं को लागू किया जाएगा। सीजेपी के प्रवक्ता आशुतोष रांका ने बताया कि आंदोलन के दौरान सरकार और पार्टी के बीच लगातार तीन दौर की वार्ता हुई। उन्होंने कहा कि पार्टी की पहली प्रमुख मांग केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा थी, जो वार्ता से पहले ही पूरी हो गई। इसके अलावा छात्रों से जुड़े मुद्दों पर सरकार को पांच सूत्रीय मांगपत्र सौंपा गया है, जिस पर गंभीरता से कार्रवाई का आश्वासन मिला है। रांका के अनुसार, पीड़ित परिवारों को मुआवजा देने, प्रदर्शनकारियों पर दर्ज मुकदमे वापस लेने तथा शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक सुधार जैसे मुद्दों पर सरकार ने सैद्धांतिक सहमति जताई है। उन्होंने बताया कि इन मांगों पर होने वाली प्रगति की समीक्षा के लिए सीजेपी का प्रतिनिधिमंडल एक महीने बाद फिर सरकार के साथ बैठक करेगा। केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने वार्ता के बाद कहा कि सीजेपी द्वारा सौंपा गया पांच सूत्रीय चार्टर शिक्षा परीक्षाओं में सुधार से जुड़ा है। सरकार इस पर गंभीरता से विचार करेगी और जहां तक संभव होगा, आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि सरकार ने प्रदर्शनकारियों की सभी मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया है और सकारात्मक समाधान निकालने का प्रयास किया है। लगातार एक महीने से अधिक समय तक चले इस आंदोलन के समाप्त होने के साथ ही जंतर-मंतर पर बना राजनीतिक और सामाजिक गतिरोध भी खत्म हो गया। अब सभी की नजर सरकार द्वारा किए गए आश्वासनों के क्रियान्वयन और प्रस्तावित समीक्षा बैठक पर रहेगी, जिसमें मांगों पर हुई प्रगति का आकलन किया जाएगा।

आगरा में गरजे योगी, बोले- सैफई सिंडिकेट युवाओं की नौकरियां खा जाता था

आगरा(एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को आगरा के फतेहाबाद रोड स्थित टाटा मैदान में आयोजित जनसभा में 53 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इस दौरान उन्होंने पूर्ववर्ती समाजवादी पार्टी (सपा) और कांग्रेस सरकारों पर तीखा राजनीतिक हमला बोलते हुए कहा कि वर्ष 2017 से पहले प्रदेश में विकास की योजनाओं का लाभ जनता तक नहीं पहुंचता था। उन्होंने आरोप लगाया कि उस समय 'सैफई सिंडिकेट' विकास का पैसा हड़प लेता था और युवाओं की नौकरियां भी उसी की भेंट चढ़ जाती थीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले भर्ती प्रक्रियाओं में पारदर्शिता का अभाव था और 'चाचा-भतीजे की जोड़ी' वसूली में लगी रहती थी। उन्होंने दावा किया कि वर्तमान सरकार ने सरकारी भर्तियों में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित की है, जिसके चलते लाखों युवाओं को बिना किसी भेदभाव के रोजगार मिला है। उन्होंने कहा कि आज प्रदेश में योग्यता के आधार पर नियुक्तियां हो रही हैं और युवाओं का भविष्य सुरक्षित हुआ है। सभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने विपक्ष पर तंज कसते हुए कहा कि जो नेतृत्व जनता की समस्याओं के बजाय अपने निजी जीवन में व्यस्त रहता है, वह प्रदेश का विकास नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार बनने के बाद आगरा

सहित पूरे उत्तर प्रदेश में विकास परियोजनाएं तेजी से आगे बढ़ी हैं और बुनियादी ढांचे को मजबूत किया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकारों की सोच आक्रमणकारियों के महिमामंडन तक सीमित थी, जबकि वर्तमान सरकार राष्ट्रनायकों के सम्मान को प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने बताया कि आगरा में छत्रपति शिवाजी महाराज के नाम पर बनने वाले भव्य संग्रहालय का निर्माण कार्य इस वर्ष के अंत तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके साथ ही कैलाश मंदिर और गुरु का ताल क्षेत्र के विकास कार्यों को भी स्वीकृति दी गई है। महिलाओं की सुविधा के लिए 500 क्षमता वाले श्रमजीवी छात्रावास के निर्माण को मंजूरी दी जा चुकी है और इसके लिए बजट भी जारी कर दिया गया है। आगरा के विकास का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि शहर के एयरपोर्ट को अंतरराष्ट्रीय स्तर का बनाने की दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है। किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से आगरा में अंतरराष्ट्रीय आलू अनुसंधान केंद्र के लिए भूमि उपलब्ध कराई गई है, जहां कार्य भी शुरू हो चुका है। इसके अलावा 400 से अधिक औद्योगिक इकाइयों से संबंधित लंबित प्रस्तावों को स्वीकृति देकर निवेश और रोजगार को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है। उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय की मंशा के अनुरूप आगरा को भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर भी विपक्ष को घेरते हुए कहा कि पहले गरीबों की योजनाओं में भ्रष्टाचार होता था और बेटियों व व्यापारियों की सुरक्षा चिंता का विषय बनी रहती थी। उन्होंने दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और डबल इंजन सरकार के प्रयासों से प्रदेश में सुरक्षा, सुशासन और विकास का नया वातावरण बना है। उन्होंने कहा कि जनता के सहयोग और विश्वास के कारण आज उत्तर प्रदेश देश के अग्रणी राज्यों में शामिल हो रहा है। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री एवं आगरा सांसद प्रो. एस.पी. सिंह बघेल, एमएसएमई मंत्री भूपेंद्र चौधरी, उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय, कैबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य सहित कई जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त ख़बरें

यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल हुआ सारनाथ, 28 साल का इंतजार खत्म

वाराणसी। भगवान बुद्ध की प्रथम धर्मदेशना स्थली सारनाथ को आखिरकार यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल कर लिया गया है। दक्षिण कोरिया के बुसान में आयोजित यूनेस्को विश्व धरोहर समिति के 48वें सत्र में शनिवार को इस ऐतिहासिक निर्णय की घोषणा की गई। करीब 28 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद मिली इस मान्यता के साथ सारनाथ भारत का 45वां और उत्तर प्रदेश का चौथा यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल बन गया है। इस उपलब्धि से न केवल प्रदेश की समृद्ध बौद्ध विरासत को वैश्विक पहचान मिलेगी, बल्कि पूर्वांचल में धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन को भी नई गति मिलने की उम्मीद है। सारनाथ को 3 जुलाई 1998 को यूनेस्को की टेंटेटिव (संभावित) सूची में शामिल किया गया था। इसके बाद विशेषज्ञों द्वारा लंबे समय तक मूल्यांकन और विभिन्न चरणों की प्रक्रिया पूरी होने के बाद अब इसे आधिकारिक रूप से विश्व धरोहर का दर्जा प्रदान किया गया है। इससे पहले उत्तर प्रदेश के ताजमहल, आगरा किला और फतेहपुर सीकरी ही यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल थे। सारनाथ के जुड़ने के साथ पहली बार पूर्वांचल का कोई स्थल इस प्रतिष्ठित सूची का हिस्सा बना है।

ग्वालियर के इलेक्ट्रॉनिक गोदाम में भीषण आग

ग्वालियर। मध्य प्रदेश के ग्वालियर स्थित मुरार आर्मी कैंट क्षेत्र के बंसीपुरा में शनिवार को एक निजी इलेक्ट्रॉनिक गोदाम में भीषण आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। आग इतनी तेजी से फैली कि कुछ ही देर में पूरे गोदाम को अपनी चपेट में ले लिया। आग की ऊंची लपटें और आसमान में उठते धुएं के घने गुबार को दूर-दूर तक देखा गया, जिससे आसपास के इलाके में दहशत फैल गई। घटना की सूचना मिलते ही नगर निगम की दमकल की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। आग की भयावहता को देखते हुए अब तक 40 से 50 फायर ब्रिगेड वाहनों को राहत एवं बचाव कार्य में लगाया गया है। गोदाम आर्मी कैंट क्षेत्र के समीप होने के कारण सेना के जवान भी आग बुझाने और राहत कार्य में सहयोग कर रहे हैं। दमकल कर्मी लगातार आग पर काबू पाने का प्रयास कर रहे हैं ताकि लपटें आसपास के गोदामों और अन्य प्रतिष्ठानों तक न फैल सकें। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार गोदाम में बड़ी मात्रा में टीवी, फ्रिज, एयर कंडीशनर, वॉशिंग मशीन, अलमारियां, पानी की मोटर सहित अन्य महंगे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण रखे हुए थे।

राष्ट्रपति ने मंजूर किया धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा

प्रह्लाद जोशी को शिक्षा मंत्रालय का अतिरिक्त प्रभार

नई दिल्ली(एजेंसी)। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने स्वीकार कर लिया है। राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री की सलाह पर शनिवार को प्रधान का इस्तीफा मंजूर करते हुए केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी को उनके वर्तमान मंत्रालयों के साथ शिक्षा मंत्रालय का अतिरिक्त प्रभार सौंप दिया है। इस संबंध में आधिकारिक आदेश जारी कर दिए गए हैं। धर्मेंद्र प्रधान ने शनिवार को अपने पद से इस्तीफा दिया था। इसके बाद प्रधानमंत्री की अनुशंसा पर राष्ट्रपति ने उनका इस्तीफा स्वीकार करते हुए शिक्षा मंत्रालय की जिम्मेदारी अस्थायी रूप से प्रह्लाद जोशी को सौंपने का निर्णय लिया। प्रह्लाद जोशी

वर्तमान में खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण, ऊर्जा तथा उपभोक्ता मामले मंत्रालयों का दायित्व संभाल रहे हैं। अब इन मंत्रालयों के साथ-साथ वे शिक्षा मंत्रालय के कार्यों का भी अतिरिक्त प्रभार संभालेंगे। सरकार का कहना है कि इससे मंत्रालय के कामकाज में किसी प्रकार की बाधा नहीं आएगी और सभी प्रशासनिक प्रक्रियाएं सुचारु रूप से जारी रहेंगी। इस्तीफा देने के बाद धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि राष्ट्रसेवा उनके जीवन की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है और आगे भी रहेगी। उनके आवास पर भाजपा और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के कई वरिष्ठ नेताओं का पहुंचना लगातार जारी रहा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल, केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, पूर्व सांसद रमेश बिधूड़ी सहित भाजपा और एनडीए के अनेक वरिष्ठ नेताओं ने उनके आवास पहुंचकर उनसे मुलाकात की और उनके कार्यों की सराहना की। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि धर्मेंद्र प्रधान का शिक्षा मंत्री के रूप में कार्यकाल देश के शिक्षा क्षेत्र में उनके समर्पण और राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक रहा है। उन्होंने कहा कि छात्र जीवन से सार्वजनिक जीवन तक धर्मेंद्र प्रधान ने निरंतर अनुशासन, समर्पण और युवाओं की आकांक्षाओं के प्रति संवेदनशीलता का परिचय दिया। गोयल ने उनके योगदान की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए और राष्ट्रहित को सदैव सर्वोपरि रखा।

भारी बारिश और जलभराव से रेल यातायात प्रभावित

नई दिल्ली(एजेंसी)। देश के विभिन्न हिस्सों में लगातार हो रही भारी बारिश और जलभराव का असर अब रेल यातायात पर भी दिखाई देने लगा है। पश्चिम रेलवे और पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे के कई रेलखंडों पर पानी भर जाने से ट्रेनों का संचालन प्रभावित हुआ है। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कई ट्रेनों को निरस्त किया गया है, जबकि कई अन्य ट्रेनों के मार्ग में परिवर्तन कर उन्हें वैकल्पिक रेल मार्गों से संचालित किया जा रहा है। रेलवे प्रशासन ने यात्रियों से यात्रा पर निकलने से पहले अपनी ट्रेन की स्थिति की जानकारी लेने की अपील की है। पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक महेश यादव ने बताया कि गुजरात स्थित गवड-उभराट रेलखंड पर लगातार बारिश के कारण रेल पुल संख्या-203 के पास जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर पहुंच गया। ट्रैक और पुल की सुरक्षा को देखते हुए इस रेलखंड पर ट्रेनों का संचालन

एहतियातन रोक दिया गया। इसके चलते शुक्रवार को गाड़ी संख्या 19019 बांद्रा टर्मिनस-हरिद्वार एक्सप्रेस का संचालन निरस्त करना पड़ा। इसी क्रम में शनिवार को गाड़ी संख्या 19020 हरिद्वार-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस भी निरस्त कर दी गई। रेलवे अधिकारियों का कहना है कि जलस्तर सामान्य होने और ट्रैक की तकनीकी जांच पूरी होने के बाद ही इस मार्ग पर ट्रेनों का संचालन दोबारा शुरू किया जाएगा। उधर, पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे क्षेत्र में भी लगातार हो रही बारिश के कारण रेल सेवाएं प्रभावित हुई हैं। असम के सिमालगुड़ी यार्ड के समीप नदी का जलस्तर बढ़ने से रेलवे ट्रैक पर पानी भर गया, जिससे कई ट्रेनों के संचालन में बाधा आई।

महिला को बचाने पहुंची यूपी-112 टीम पर हमला, पुलिसकर्मियों से मारपीट

बलरामपुर(एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बलरामपुर जिले में पति-पत्नी के घरेलू विवाद की सूचना पर पहुंची यूपी-112 पुलिस टीम पर ग्रामीणों द्वारा हमला किए जाने का मामला सामने आया है। पुलिस का आरोप है कि महिला को भीड़ से सुरक्षित निकालकर उसकी शिकायत दर्ज करने की प्रक्रिया शुरू करते ही कुछ लोगों ने पुलिस टीम को घेर लिया और पुलिसकर्मियों के साथ मारपीट शुरू कर दी। घटना में दोनों पुलिसकर्मी घायल हो गए। राहगीरों और कुछ ग्रामीणों की मदद से पुलिसकर्मी किसी तरह मौके से निकलकर अपनी जान बचा सके। घटना कोतवाली देहात क्षेत्र के खमौवा गांव की है। शुक्रवार शाम यूपी-112 कंट्रोल रूम पर नज्जो नामक महिला ने सूचना दी कि उसके पति ने उसके साथ मारपीट कर उसे घर से निकाल दिया है और उसकी बच्ची को अपने पास रखा हुआ है। सूचना मिलते ही पीआरवी-5038 पर तैनात आरक्षी दीपक कुमार राय और चालक आरक्षी मोहम्मद आरिफ मौके पर पहुंचे। पुलिस टीम जब गांव स्थित ईदगाह के पास पहुंची तो वहां बड़ी संख्या में ग्रामीण एकत्र थे। महिला भीड़ के बीच घिरी हुई थी।

जौहर विवि दौरे के दौरान सपा में दिखी गुटबाजी, इकरा हसन और आजम समर्थकों में धक्का-मुक्की

रामपुर(एजेंसी)। समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमंडल के रामपुर दौरे के दौरान शनिवार को जौहर रोड स्थित संत शिरोमणि गेस्ट हाउस में उस समय अफरातफरी मच गई, जब सांसद इकरा हसन और वरिष्ठ सपा नेता आजम खां के समर्थक हॉल में प्रवेश को लेकर आमने-सामने आ गए। दोनों पक्षों के बीच पहले तीखी नोकझोंक हुई, जो देखते ही देखते धक्का-मुक्की तक पहुंच गई। हालांकि मौजूद नेताओं और कार्यकर्ताओं ने बीच-बचाव कर मामला शांत कराया, जिससे कोई बड़ा विवाद नहीं

हुआ। जानकारी के अनुसार, समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमंडल की बैठक के लिए गेस्ट हाउस के हॉल में व्यवस्था की गई थी। बैठक शुरू होने से पहले बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता और समर्थक भी हॉल के भीतर जाने का प्रयास करने लगे। इसी दौरान सांसद इकरा हसन के समर्थकों ने उनके साथ प्रवेश करने की कोशिश की, जबकि आजम खां के समर्थक भी बड़ी संख्या में मौके पर मौजूद थे। सीमित स्थान और भारी भीड़ के कारण दोनों पक्षों के बीच कहासुनी शुरू हो गई और माहौल तनावपूर्ण हो गया। स्थिति कुछ देर के लिए इतनी बिगड़ गई कि प्रवेश द्वार पर अव्यवस्था फैल गई और प्रतिनिधिमंडल के कार्यक्रम की व्यवस्थाएं भी प्रभावित हुईं। मौके पर मौजूद वरिष्ठ नेताओं और सुरक्षा कर्मियों ने तत्काल हस्तक्षेप कर दोनों पक्षों को अलग किया। इसके बाद सांसद इकरा हसन को सुरक्षा घेरे में हॉल के भीतर ले जाया गया। स्थिति सामान्य होने के बाद प्रतिनिधिमंडल की बैठक निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार शुरू हुई। गौरतलब है कि दो दिन पहले भी समाजवादी पार्टी के विधायकों और पदाधिकारियों के प्रतिनिधिमंडल के रामपुर दौरे के दौरान रामपुर सांसद मोहिबुल्लाह नदवी और आजम खां के समर्थकों के बीच तीखी नोकझोंक हुई थी। उस दौरान दोनों पक्षों के समर्थकों ने जमकर नारेबाजी की थी, जिससे पार्टी के भीतर गुटबाजी खुलकर सामने आई थी।

सरकारी कोर्ट केसों का पूरा रिकॉर्ड अब डिजिटल, झारखंड में 'विधि पोर्टल 2.0' लॉन्च

रांची(एजेंसी)। झारखंड सरकार ने सरकारी न्यायालयीन मामलों के प्रबंधन को अधिक पारदर्शी, तेज और प्रभावी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए 'विधि पोर्टल 2.0' का शुभारंभ किया है। झारखंड हाईकोर्ट के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित कार्यक्रम में राज्य के महाधिवक्ता रोहिताश्य रॉय ने पोर्टल का औपचारिक उद्घाटन किया। इस अवसर पर सूचना प्रौद्योगिकी सचिव पूजा सिंघल, विधि विभाग के सचिव नीरज कुमार श्रीवास्तव, वरीय अतिरिक्त महाधिवक्ता अच्युत केशव सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी एवं सरकारी अधिवक्ता उपस्थित रहे। राज्य सरकार ने इसे डिजिटल सुशासन की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि बताते हुए कहा कि

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में विकसित यह पोर्टल सरकारी मुकदमों के प्रबंधन को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और दक्ष बनाएगा। इसके जरिए विभिन्न सरकारी विभागों, विधि विभाग, महाधिवक्ता कार्यालय तथा सरकारी अधिवक्ताओं को एक साझा डिजिटल मंच पर जोड़ा गया है, जिससे न्यायालयीन मामलों की निगरानी और समन्वय पहले की तुलना में अधिक आसान और प्रभावी होगा। 'विधि पोर्टल 2.0' में रियल टाइम मॉनिटरिंग, ऑटोमैटिक अलर्ट, स्मार्ट वर्कफ्लो और एडवांस एनालिटिक्स जैसी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। इनकी मदद से अधिकारियों को लंबित मामलों की स्थिति, अगली सुनवाई की तारीख और आवश्यक कार्रवाई की जानकारी समय पर मिल सकेगी। इससे सरकारी पक्ष की प्रभावी पैरवी सुनिश्चित करने के साथ-साथ मुकदमों के शीघ्र निस्तारण में भी मदद मिलने की उम्मीद है। सरकार के अनुसार, नए संस्करण में 20 से अधिक नई सुविधाएं जोड़ी गई हैं। इनमें ई-कोर्ट्स सिस्टम के साथ इंटीग्रेशन, स्मार्ट कॉज लिस्ट, दैनिक एवं साप्ताहिक केस डाइजेस्ट, एग्जीक्यूटिव डैशबोर्ड, केंद्रीकृत नोटिस प्रबंधन प्रणाली तथा मोबाइल ऐप जैसी सुविधाएं प्रमुख हैं। इन सुविधाओं के माध्यम से संबंधित अधिकारी और अधिवक्ता किसी भी मामले की अद्यतन जानकारी डिजिटल माध्यम से प्राप्त कर सकेंगे। सरकार ने बताया कि भविष्य में इस पोर्टल में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित कानूनी विश्लेषण की सुविधा भी जोड़ी जाएगी। इससे न्यायालयीन मामलों का डेटा विश्लेषण, संभावित कानूनी रणनीति तैयार करने और प्रभावी निर्णय लेने में सहायता मिलेगी।

धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा नई पीढ़ी और इंकलाब की जीत: अखिलेश यादव

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

आजमगढ़। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे को नई पीढ़ी, छात्रों और युवाओं के आंदोलन की बड़ी जीत बताया है। उन्होंने कहा कि युवाओं के संघर्ष ने केंद्र सरकार को झुकने पर मजबूर कर दिया और यह लोकतांत्रिक आंदोलन की सफलता का प्रतीक है। शनिवार को आजमगढ़ में मीडिया से बातचीत करते हुए अखिलेश यादव ने कहा कि शिक्षा मंत्री का इस्तीफा पहले ही हो जाना चाहिए था। उन्होंने कहा कि नीट परीक्षा पेपर लीक होने और इससे जुड़े घटनाक्रम के बाद सरकार को तुरंत जिम्मेदारी तय करनी चाहिए थी। उनका आरोप था कि सरकार ने लंबे समय तक मामले को संभालने की कोशिश की, जबकि छात्रों की मांगों पर समय रहते निर्णय लिया जा सकता था। अखिलेश यादव ने कहा कि देश की नई पीढ़ी ने सोशल मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से अपने आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाया। उन्होंने कहा कि युवाओं की एकजुटता के कारण सरकार को अपना रुख बदलना पड़ा। उनके अनुसार, यह आंदोलन लोकतांत्रिक तरीके से युवाओं की आवाज को बुलंद करने का उदाहरण है। उन्होंने कहा कि सरकार को इस पूरे घटनाक्रम से सबक लेते हुए प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की व्यवस्था को मजबूत करना चाहिए। भविष्य में किसी भी प्रतियोगी परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक न हो, इसके लिए पारदर्शी और मजबूत प्रणाली विकसित की जानी चाहिए। सपा अध्यक्ष ने कहा कि नीट पेपर लीक मामले में छात्र-युवा संगठनों के साथ-साथ विपक्ष ने भी शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग लगातार उठाई थी।

संक्षिप्त खबरें

महिलाओ ने पुलिस अधीक्षक से मिलकर लगाई न्याय की गुहार

बस्ती। बस्ती जिले के नगर थानाक्षेत्र के कोठवा भरथापुर कि रहने वाली उर्मिला पाण्डेय ने अपने परिवार के साथ पुलिसअधीक्षक से मिलकर लगाई न्याय की गुहार। बता दें नगर थानाक्षेत्र के कोठवा भरथापुर की रहने वाली उर्मिला पाण्डेय, संगीता पाण्डेय,सावित्री पाण्डेय ने पुलिसअधीक्षक यशवीर सिंह से मुलाकात कर बताया की हम लोगो का गांव के रहने वाले अनिल पाण्डेय पुत्र शिव प्रसाद से जमीन के बंटवारे को लेकर कोर्ट में मुकदमा चल रहा था जिसमे कोर्ट द्वारा हम लोगो के पक्ष में आदेश हुआ है लेकिन अनिल पाण्डेय व उनके पिता हम लोगो की जमीन 20 जून की रात 2 बजे 40,50 लोगो के साथ हम लोगो की जमीन कब्जा कर रहे थे जिसकी सूचना स्थानीय थाना पर दिया गया। वहीं सूचना मिलते ही थानाध्यक्ष नगर अपनी पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंच कर कुछ लोगो को गिरफ्तार कर जेल भेज दिए थे और अवैध निर्माण कार्य को रोकना दिए थे। इसी बात को लेकर आयें दिन अनिल पाण्डेय हम लोगों को किसी फर्जी मुकदमें में फंसाने कि धमकी देते हुए भद्दी भद्दी गाली देते है व जान से मारने कि धमकी देते है। वही पुलिसअधीक्षक ने बताया कि जांच कर कार्रवाई की जायेगी।

थाना समाधान दिवस में जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने सुनीं जनसमस्याएं, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के दिए निर्देश

अम्बेडकरनगर। शासन की मंशा के अनुरूप आमजन की शिकायतों का त्वरित, निष्पक्ष एवं प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित करने के उद्देश्य से आयोजित थाना समाधान दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी ईशा प्रिया एवं पुलिस अधीक्षक प्राची सिंह ने थाना टांडा पहुंचकर दूर-दराज़ से आए फरियादियों की समस्याओं को सुना। जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने प्राप्त प्रत्येक शिकायत का अवलोकन करते हुए संबंधित अधिकारियों को सभी प्रकरणों का समयबद्ध, निष्पक्ष एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने जनता की समस्याओं के समाधान में किसी प्रकार की शिथिलता न बरतने, शिकायतों का निस्तारण पूरी पारदर्शिता एवं संवेदनशीलता के साथ करते हुए पात्र व्यक्तियों को त्वरित न्याय सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि राजस्व एवं पुलिस से संबंधित प्रकरणों में समन्वय स्थापित कर मौके पर जाकर आवश्यक जांच कर स्थाई समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी टांडा, तहसीलदार टांडा, क्षेत्राधिकारी टांडा, संबंधित लेखपाल एवं अन्य संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

एसडीएम के आदेश के बाद भी दबंग कोटेदार संजय कुमार के खिलाफ नही किया कोई कार्रवाई

पूर्ति निरीक्षक कप्तानगंज की जांच में ग्राम पंचायत नरहरपुर के अधिकांश ग्रामीणों ने कोटेदार संजय कुमार के खिलाफ दिया था बयान- ग्रामीण

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। उप जिलाधिकारी हरैया उमाकांत तिवारी ने पूर्ति निरीक्षक कप्तानगंज को 07 कार्य दिवस के अन्दर ग्राम पंचायत नरहरपुर कोटेदार संजय कुमार के खिलाफ जांच कर कार्यवाही करने का निर्देश दिया था लेकिन 07 कार्य दिवस बीत जाने के बाद भी राशन वितरण में गड़बड़ी करने वाले कोटेदार संजय कुमार के खिलाफ कार्रवाई नहीं हो पाई है। आपको बता दें कि ग्राम पंचायत नरहरपुर के ग्रामीणों ने कोटेदार संजय कुमार के खिलाफ राशन वितरण में घटतौली करने का आरोप लगाया था। ग्रामीणों की शिकायत पर एडीओ पंचायत कप्तानगंज सुशील कुमार श्रीवास्तव ने सेक्टर प्रभारी अरुण कुमार पटेल व सचिव पंकज सिंह को जांच करके जांच रिपोर्ट प्रेषित करने का निर्देश दिया था। एडीओ पंचायत के निर्देश पर एडीओ पंचायत को जांच टीम ने जांच कर के जांच रिपोर्ट दिनांक- 12-07-2026 को दिया था एडीओ पंचायत ने जांच रिपोर्ट प्रभारी खण्ड विकास अधिकारी कप्तानगंज कृष्ण कुमार सिंह को दिनांक- 15-07-2026 को दिया था प्रभारी खण्ड विकास अधिकारी ने जांच रिपोर्ट उप जिलाधिकारी हरैया उमाकांत तिवारी को दिनांक- 17-07-2026 को अग्रिम कार्यवाही हेतु भेजा था। उप जिलाधिकारी ने दिनांक- 17-07-2026 को पूर्ति निरीक्षक कप्तानगंज को 07 कार्य दिवस के अन्दर उक्त प्रकरण में की गई कार्यवाही से अवगत कराने का निर्देश था। एसडीएम के आदेश के 07 दिन बीतने के बाद भी पूर्ति निरीक्षक कप्तानगंज ने कोटेदार संजय कुमार के खिलाफ कोई कार्रवाई नही किया है जिसको लेकर जिले में तरह - तरह की चर्चाएं चल रही है। मीडिया टीम ने फोन के माध्यम से पूर्ति निरीक्षक कप्तानगंज से कई बार फोन किया लेकिन पूर्ति निरीक्षक कप्तानगंज ने न तो मीडिया टीम के फोन को रिसीव किया और न ही मीडिया टीम को पुनः फोन नही किया।

शिक्षकों को अभी तक नहीं मिला जनगणना के प्रथम चरण का भुगतान, जिम्मेदारों ने साधा चुप्पी

जून की भीषण जानलेवा गर्मी में शिक्षकों ने पूरा किया था जनगणना के

छुट्टी में काम के बदले प्रतिकर अवकाश पर भी अभी तक नहीं हो पाया है कोई सार्थक पहल

कभी भी आन्दोलन का रुख अख्तियार कर सकते हैं जनगणना कर्मी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। बस्ती जनपद के शिक्षकों व जनगणना में लगे अन्य कार्मिकों को अभी तक जनगणना के प्रथम चरण का मानदेय नहीं मिल पाया है जिसको लेकर सुगबुगाहट शुरू हो चुकी है । अवकाश में कार्य के बदले मिलने वाले प्रतिकर अवकाश के बारे में भी जिम्मेदारों के स्तर से अभी तक कोई सार्थक पहल नहीं हो पाया है जिसको लेकर कर्मचारियों में उहापोह की स्थिति बनी हुई है।

मिली जानकारी के अनुसार जनपद में जून की उमस भरी जानलेवा गर्मी में शिक्षकों व अन्य जनगणना कर्मियों ने जनगणना के प्रथम चरण का कार्य सम्पन्न किया है जिसके पारिश्रमिक का भुगतान जनगणना कर्मियों को अभी तक नहीं हो पाया है जिसको लेकर चर्चाएं शुरू हो गयी हैं।

अवकाश में कार्य के बदले मिलने वाले प्रतिकर अवकाश के बारे में भी जिम्मेदारों ने अभी तक कोई पहल नहीं किया जिसको लेकर चर्चाओं का दौर शुरु हो गया है ब्र वर्ष 2027 में होने वाली जनगणना वर्ष 2021 में ही हो जानी थी परन्तु कोविड महामारी के चलते तत्समय जनगणना टाली गयी थी। जनगणना 2027 का प्रथम चरण जून 2026 में समाप्त हो चुका है परन्तु जनगणना में लगे कार्मिकों को उनके पारिश्रमिक का भुगतान अभी तक न होना निश्चित ही जाँच का विषय बना हुआ है।

मुख्यमंत्री आवास योजना से बदली सविता राव के परिवार की जिंदगी

देवरिया। मुख्यमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत विकासखंड तरकुलवा के ग्राम वृन्दावन निवासी सविता राव को पक्का आवास मिलने से उनके परिवार को सुरक्षित आशियाना मिल गया है। पति के निधन के बाद वह दो बेटियों और एक बेटे के साथ जर्जर झोपड़ी में रहने को मजबूर थीं। बरसात में झोपड़ी की छत टपकने से परिवार को भारी परेशानी होती थी। योजना के तहत उन्हें 1.20 लाख की सहायता राशि तीन किस्तों में मिली, जिससे उन्होंने अपना पक्का मकान बनवाया। निर्माण के दौरान मनरेगा में कार्य कर उन्हें ?19,170 की अतिरिक्त मजदूरी भी प्राप्त हुई। सविता राव ने बताया कि अब उनके परिवार को सुरक्षित आवास के साथ शौचालय, बिजली और गैस कनेक्शन जैसी मूलभूत सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। इससे परिवार का जीवन स्तर और सामाजिक सम्मान दोनों बढ़े हैं। उन्होंने इस सहायता के लिए सरकार का आभार व्यक्त किया। जिला प्रशासन ने इसे जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन का उदाहरण बताया।

डिफाल्टर प्रधान बना प्रशासक प्रधान के ऊपर पहले से भ्रष्टाचार का आरोप लगा

बस्ती। बस्ती जिले मे भ्रष्टाचार को लेकर आदित्यनाथ सरकार की जीरो टालरेंस पालिसी महज कागजों मे है। अफसर वन टू का फोर करने मे आये दिन बेनकाब हो रहे हैं। ताजा मामले मे बस्ती जिला प्रशासन की बड़ी लापरवाही सामने आई है। दुबौलिया ब्लॉक क्षेत्र की ग्राम पंचायत बर्दिया लोहार के निवर्तमान ग्राम प्रधान को प्रशासक नियुक्त कर दिया गया। जबकि प्रधान पहले से डिफाल्टर हैं। शिकायतकर्ता ने जिलाधिकारी को पत्र देकर आपत्ति जताई है। शिकायतकर्ता ने पंचायती राज विभाग के शासनादेश का हवाला देते हुए प्रधान को प्रशासक पद से हटाने की मांग की है। रमना तौफीर निवासी सूरज सिंह ने जिलाधिकारी को दिए पत्र में आदेश 15 जुलाई के आदेश का हवाला दिया है। इसी आदेश के तहत दुबौलिया ब्लॉक के ग्राम पंचायत बर्दिया लोहार के प्रधान को वित्तीय अनियमितता का दोषी पाए जाने पर 16 लाख 81 हजार 328 रुपये की रिकवरी का आदेश दिया गया है। शिकायतकर्ता ने अपने पत्र में पंचायतीराज विभाग, उत्तर प्रदेश अनुभाग-3 के कार्यालय ज्ञाप का उल्लेख किया है। इसमें स्पष्ट है कि वित्तीय अनियमितता में दोषी पाए गए निवर्तमान ग्राम प्रधान को प्रशासक नियुक्त नहीं किया जा सकता। ऐसे मामलों में संबंधित क्षेत्र के एडीओ पंचायत को प्रशासक नियुक्त किया जाएगा। सूरज सिंह ने मांग की है कि शासनादेश का पालन करते हुए दोषी प्रधान को प्रशासक पद से हटाकर एडीओ पंचायत को प्रशासक बनाया जाए। इस मामले में जिलाधिकारी ने जिला पंचायत राज अधिकारी को आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए है।

जिलाधिकारी ने शनिवार को सदर तहसील अंतर्गत ग्राम बैराड़ी एतमाली के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। बस्ती जिलाधिकारी श्रीमती कृत्तिका ज्योत्स्ना ने शनिवार को सदर तहसील अंतर्गत ग्राम बैराड़ी एतमाली के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण कर बाढ़ की वर्तमान स्थिति, राहत एवं बचाव कार्यो तथा बाढ़ विभाग द्वारा की जा रही व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने ग्रामीणों से संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त किया। जिलाधिकारी ने कहा कि संबंधित अधिकारी बाढ़ की स्थिति पर निरंतर नजर बनाए रखे तथा राहत एवं बचाव कार्यो को सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ संचालित किया जाए। उन्होंने कहा कि नावों, राहत शिविरों एवं आपदा से संबंधित सभी संसाधनों को पूरी तरह सक्रिय रखा जाए, ताकि किसी भी आपात स्थिति में तत्काल कार्रवाई की जा सके।

निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि बाढ़ विभाग तटबंधों एवं संवेदनशील स्थलों की नियमित निगरानी करते रहें, किसी भी प्रकार के कटान अथवा जलस्तर में वृद्धि की सूचना मिलते ही तत्काल आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित किया जाय। जिलाधिकारी ने कहा कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में तैनात सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी सतर्कता एवं संवेदनशीलता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें। किसी भी प्रकार की सूचना प्राप्त होने पर तत्काल मौके पर पहुंचकर आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाए, जिससे जन-धन की हानि को न्यूनतम रखा जा सके। उन्होंने ग्रामीणों से अपील की कि अफवाहों पर ध्यान न दें तथा प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए किसी भी आपात स्थिति की सूचना तत्काल संबंधित अधिकारियों या जिला प्रशासन को दें। उन्होने चॉदपुर कटरिया कैम्प कार्यालय का भी निरीक्षण कर जायजा लिया। उन्होने कहा कि बाढ़ कार्य में प्रयोग होने वाले बोरी का स्टाक पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहें। निरीक्षण के दौरान अधिशासी अभियन्ता बाढ़ दिनेश कुमार, उपजिलाधिकारी सदर हिमांशु कुमार सहित संबंधित विभागीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

गौर स्वास्थ्य केंद्र पर प्रधानमंत्री मातृ वंदना दिवस कैंप में लापरवाही, भटकती रहीं गर्भवती महिलाएं

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। बस्ती जनपद के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHC) गौर में स्वास्थ्य सेवाओं की बड़ी लापरवाही सामने आई है। अस्पताल प्रशासन की उदासीनता के कारण शासन की महत्वपूर्ण योजना 'प्रधानमंत्री मातृ वंदना दिवस' हवा-हवाई साबित हो रही है। शुक्रवार, 24 जुलाई को निर्धारित दिवस होने के बावजूद सुबह 10 बजे तक कैंप का आयोजन शुरू नहीं हो सका, जिससे अस्पताल पहुंचीं गर्भवती महिलाओं और मरीजों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा।अस्पताल के सूत्रों के अनुसार, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सुबह करीब 8 बजे ही खुल गया था। इसके बावजूद, मौके पर कोई भी नर्सिंग स्टाफ मौजूद नहीं मिला। कैंप में जांच, परामर्श और अन्य स्वास्थ्य सेवाओं की उम्मीद लेकर दूर-दराज से आई दर्जनों गर्भवती महिलाएं और तीमारदार सुबह से ही परिसर में इधर-उधर भटकने को मजबूर दिखे। कई घंटों तक इंतजार करने के बाद भी जब डॉक्टर और स्टाफ नहीं पहुंचे, तो मरीजों का सब्र टूट गया और उन्होंने नाराजगी जाहिर की।बता दें कि CHC गौर में प्रत्येक माह की 1, 9, 16 और 24 तारीख को इस विशेष कैंप का आयोजन अनिवार्य रूप से तय है। इसके बावजूद जिम्मेदार अधिकारियों की लापरवाही से नियमों का खुला उल्लंघन हो रहा है। स्थानीय लोगों ने उच्चाधिकारियों से इस मामले की जांच कर लापरवाह स्टाफ के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है।

बीएसए कार्यालय के बाबू पर एफआईआर

नौकरी दिलाने के नाम पर विमल कुमार त्रिपाठी ने छः लाख का लिया था उत्कोच

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। जिले मेंपूर्व में बीएसए कार्यालय में बाबू के रूप में तैनात विमल कुमार त्रिपाठी के विरुद्ध नौकरी दिलाने के नाम पर ली गयी ठगी को लेकर बस्ती कोतवाली में पीड़ित विनोद कुमार शुक्ला की शिकायत पर धारा 406 व 506 के अन्तर्गत प्राथमिकी दर्ज कर जाँच शुरू हो गयी है। इस एफआईआर ने बीएसए कार्यालय में व्याप्त भ्रष्टाचार की कलई खोल दी है। मिली जानकारी के अनुसार थाना कोतवाली के अन्तर्गत स्थित साकिन जिगिना निवासी विनोद कुमार शुक्ला पुत्र स्व0 कृष्ण प्रसाद शुक्ला से नौकरी दिलाने के नाम पर आरोपी विमल कुमार त्रिपाठी ने नकद छः लाख रुपया विगत 18 नवम्बर 2016 को समक्ष गवाहान लिया था बाकी का रुपया बारह लाख काम होने के बाद देने की बात तय हुई थी। इस दौरान पीड़ित द्वारा तमाम बार अपने काम को लेकर आरोपी विमल से सम्पर्क किया गया परन्तु पीड़ित का न तो काम हुआ न ही रुपया वापस मिला। थक हार कर पीड़ित ने उच्चाधिकारियों का दरवाजा खटखटाया और दिनाँक 23 जुलाई 2026 को आरोपी विमल कुमार त्रिपाठी के विरुद्ध धारा 406 व 506 अन्तर्गत मुकदमा दर्ज कर जाँच शुरू कर दी गयी है। वैसे भी बस्ती का बीएसए कार्यालय

लेनदेन के मामने में चर्चाओं में रहता है और अधिकांश बाबू करोड़पति की श्रेणी में दर्ज हैं। सूत्रों की माने तो जल्द ही बीएसए आफिस के कुछ चर्चित बाबुओं पर आय से अधिक सम्पत्ति प्रकरण में कानूनी शिकंजा कसेगा।

फेसबुक पर फेक आईडी बनाकर हुई ठगी, महराजगंज तराई पुलिस ने पीड़ित के खाते में वापस कराए 10 हजार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलरामपुर। जनपद के थाना महराजगंज तराई पुलिस ने साइबर ठगी के एक मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए पीड़ित के खाते में ?10 हजार की धनराशि वापस कराकर सराहनीय कार्य किया है। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के ग्राम कौवापुर निवासी मो. शफीक पुत्र हकीकुल्लाह ने पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर बताया कि 7 मार्च 2026 को एक अज्ञात व्यक्ति ने उसके परिचित की फर्जी फेसबुक आईडी बनाकर दोस्त होने का विश्वास दिलाया और पैसों की मांग की। भरोसा कर पीड़ित ने 10 हजार भेज दिए। बाद में जानकारी हुई कि यह उसके मित्र की फेक आईडी थी और उसके साथ साइबर ठगी की गई है।

घटना के बाद पीड़ित ने राष्ट्रीय साइबर क्राइम पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई। शिकायत मिलते ही थाना महराजगंज तराई की साइबर हेल्पडेस्क एवं संबंधित बैंक की टीम ने तत्काल कार्रवाई करते हुए आरोपी के खाते में गई10 हजार की धनराशि होल्ड करा दी। इसके बाद तकनीकी जांच और विधिक प्रक्रिया पूरी कर, न्यायालय से आवश्यक आदेश प्राप्त किए गए तथा संबंधित बैंक के नोडल अधिकारी से समन्वय स्थापित कर

पूरी धनराशि सफलतापूर्वक पीड़ित के बैंक खाते में वापस करा दी गई। रुपये वापस मिलने पर पीड़ित ने बलरामपुर पुलिस और साइबर टीम का आभार व्यक्त किया। इस सराहनीय कार्रवाई में प्रभारी निरीक्षक संतोष कुमार तिवारी, उपनिरीक्षक अविनाश कुमार सिंह, कांस्टेबल धीरज तिवारी, कांस्टेबल अर्जुन प्रसाद वर्मा तथा महिला आरक्षी पूजा सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

पुलिस की अपील: बलरामपुर पुलिस ने आमजन से अपील की है कि किसी भी प्रकार की साइबर ठगी होने पर बिना विलंब 1930 हेल्पलाइन पर कॉल करें या राष्ट्रीय साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराएं, ताकि समय रहते धनराशि होल्ड कर पीड़ित को वापस कराई जा सके।

घर में मिला युवक का शव; संदिग्ध परिस्थितियों में मौत, पुलिस ने जांच शुरू की

सुल्तानपुर- धनपतगंज थाना क्षेत्र के मायंग गांव में शनिवार सुबह एक युवक का शव घर के अंदर संदिग्ध परिस्थितियों में मिला। सूचना मिलने पर ग्रामीणों की भीड़ मौके पर जमा हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। मृतक की पहचान मायंग गांव निवासी 36 वर्षीय पिंटू उर्फ विजय पुत्र मोदन के रूप में हुई है। वह चाट की दुकान लगाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। परिजनों के अनुसार, शुक्रवार रात करीब 11 बजे पूरा परिवार भोजन के बाद सोने चला गया था। पिंटू अपनी पत्नी प्रिया के साथ घर की ऊपरी मंजिल पर बने कमरे में सो रहा था, जबकि परिवार के अन्य सदस्य नीचे के कमरों में थे। शनिवार सुबह जब उसकी मां मालती उसे जगाने के लिए ऊपर पहुंचीं, तो वह बिस्तर पर अचेत अवस्था में पड़ा मिला। कई बार आवाज देने पर भी कोई प्रतिक्रिया न मिलने पर परिजनों ने आसपास के लोगों को बुलाया और पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही धनपतगंज थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया। आवश्यक विधिक कार्रवाई पूरी करने के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया गया। मृतक पिंटू की शादी लगभग एक वर्ष पूर्व प्रिया से हुई थी। उसके परिवार में मां मालती, पत्नी प्रिया और छोटा भाई विनोद हैं।

थाना समाधान दिवस में डीएम ने सुनीं फरियादियों की समस्याएं

समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के दिए निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलरामपुर। शासन की मंशा के अनुरूप जनसामान्य की शिकायतों के त्वरित, पारदर्शी एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के उद्देश्य से शनिवार को थाना गौरा चौराहा में जिलाधिकारी डॉ. विपिन कुमार जैन की अध्यक्षता में थाना समाधान दिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान जिलाधिकारी ने फरियादियों की समस्याओं को गंभीरता एवं संवेदनशीलता के साथ सुना तथा कई मामलों का मौके पर ही निस्तारण कराया। शेष शिकायतों के संबंध में संबंधित अधिकारियों को समयबद्ध एवं निष्पक्ष कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। थाना समाधान दिवस को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि आमजन की शिकायतों का त्वरित एवं प्रभावी समाधान शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक शिकायत का निस्तारण तथ्यों और अभिलेखों के आधार पर पूरी पारदर्शिता के साथ किया जाए, जिससे जनता का प्रशासन और पुलिस पर विश्वास और अधिक मजबूत हो। डीएम ने विशेष रूप से भूमि विवाद एवं कानून-व्यवस्था से जुड़े मामलों को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित करने पर जोर दिया। उन्होंने राजस्व एवं पुलिस विभाग की संयुक्त टीम बनाकर मौके पर जाकर जांच

करने तथा विवादों का स्थायी और गुणवत्तापूर्ण समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि भूमि संबंधी मामलों का समय रहते निस्तारण होने से अनावश्यक विवादों और कानून-व्यवस्था की समस्याओं पर प्रभावी नियंत्रण संभव हो सकेगा। इस दौरान जिलाधिकारी ने थाना समाधान रजिस्टर, भूमि विवाद रजिस्टर सहित अन्य अभिलेखों का भी गहन निरीक्षण किया। उन्होंने पूर्व में प्राप्त शिकायतों के निस्तारण की समीक्षा करते हुए लंबित एवं संवेदनशील मामलों की जानकारी ली और अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रत्येक शिकायत का नियमित अनुश्रवण किया जाए तथा निर्धारित समय सीमा के भीतर उसका निस्तारण कर शिकायतकर्ता को भी कार्रवाई से अवगत कराया जाए। थाना समाधान दिवस में अपर पुलिस अधीक्षक विशाल पाण्डेय, उपजिलाधिकारी सदर, थाना प्रभारी गौरा चौराहा, राजस्व विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी सहित अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

जिलाधिकारी ने आत्मा फार्म स्कूल में डीएसआर विधि का किया निरीक्षण

आधुनिक कृषि तकनीकों से किसानों को किया गया जागरूक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अम्बेडकरनगर। जिलाधिकारी ईशा प्रिया ने उप निदेशक कृषि अश्विनी सिंह के साथ सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन (SMAE) योजनांतर्गत ग्राम पंचायत परस कटुई में संचालित आत्मा फार्म स्कूल का भ्रमण कर डीएसआर (धान की सीधी बुवाई) विधि से तैयार धान की फसल का स्थलीय निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने खेत पर अपनाई जा रही आधुनिक कृषि तकनीकों का अवलोकन किया तथा किसानों से संवाद कर उनके अनुभवों की जानकारी प्राप्त की। निरीक्षण के अवसर पर उप निदेशक कृषि, कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ रामजीत एवं कृषि विभाग के विशेषज्ञों द्वारा किसानों को डीएसआर (Direct Seeded Rice) तकनीक सहित आधुनिक एवं वैज्ञानिक खेती की विधियों का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण में किसानों को धान की सीधी बुवाई की तकनीक, उन्नत बीजों के चयन, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, कीट एवं रोग नियंत्रण तथा अन्य कृषि निवेशों के समुचित उपयोग की विस्तृत जानकारी दी गई। विशेषज्ञों ने बताया कि डीएसआर विधि अपनाने से परंपरागत रोपाई की तुलना में बीज, उर्वरक एवं सिंचाई जल की उल्लेखनीय बचत होती है। इस तकनीक से खेती की लागत में लगभग 30 प्रतिशत तक कमी लाई जा सकती है, जबकि फसल के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। साथ ही श्रम की आवश्यकता कम होने से किसानों को समय एवं संसाधनों की भी बचत होती है।

जिलाधिकारी ने किसानों से वैज्ञानिक एवं आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाकर खेती को अधिक लाभकारी एवं टिकाऊ बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कृषि विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि आत्मा फार्म स्कूलों के माध्यम से अधिकाधिक किसानों को नवीन कृषि तकनीकों का प्रशिक्षण देकर उन्हें कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जाए। इस अवसर पर कृषि विभाग के अधिकारी, तकनीकी विशेषज्ञ तथा क्षेत्र के अनेक प्रगतिशील किसान उपस्थित रहे।

30 जुलाई को विकास भवन में लगेगा मोटराइज्ड ट्राइसाइकिल पात्रता परीक्षण शिविर

देवरिया। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग एवं एलिम्को, कानपुर के संयुक्त तत्वावधान में एडीप योजना के तहत मोटराइज्ड ट्राइसाइकिल के लिए पात्र दिव्यांगजनों के चिन्हांकन एवं पात्रता परीक्षण हेतु 30 जुलाई को विकास भवन परिसर में विशेष शिविर आयोजित किया जाएगा। जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी प्रियंका चौधरी ने बताया कि शिविर में वही दिव्यांगजन पात्र होंगे, जिनकी दिव्यांगता 80 प्रतिशत या उससे अधिक है तथा जिन्होंने पिछले पांच वर्षों में विभाग से कोई उपकरण प्राप्त नहीं किया है। उन्होंने पात्र दिव्यांगजनों से अधिक से अधिक संख्या में शिविर में पहुंचकर परीक्षण कराने की अपील की है। उन्होंने बताया कि शिविर में आने वाले लाभार्थी अपने साथ आय प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, यूडीआईडी कार्ड तथा दिव्यांगता प्रमाण पत्र अनिवार्य रूप से लेकर आएं, ताकि पात्रता निर्धारण की प्रक्रिया सुचारु रूप से पूरी की जा सके।

नेता नजरबंद, कार्यकर्ता गुपचुप रवाना... पुलिस पहरे के बीच भी लखनऊ कूच

आलापुर में दिनभर गरमाई सियासत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

आलापुर, अंबेडकरनगर। आज़ाद समाज पार्टी एवं भीम आर्मी के संस्थापक एवं नगीना सांसद चंद्रशेखर आज़ाद 'रावण' के प्रस्तावित लखनऊ धरना-प्रदर्शन से पहले अंबेडकरनगर जनपद में राजनीतिक गतिविधियाँ अचानक तेज हो गई। शुक्रवार देर रात से ही पुलिस ने पार्टी के कई प्रमुख पदाधिकारियों और नेताओं को उनके घरों पर रोकना शुरू कर दिया। आलापुर सुरक्षित विधानसभा क्षेत्र के इंदईपुर स्थित आवास पर पूर्व जिला प्रभारी रमेश कुमार यादव उर्फ पुजारी को भी देर रात लगभग 12:30 बजे से पुलिस निगरानी में घर से बाहर न निकलने की हिदायत दी गई।

बताया जाता है कि शनिवार को लखनऊ में प्रस्तावित धरना-प्रदर्शन में शामिल होने के लिए जनपद के विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों से कार्यकर्ताओं के जाने की तैयारी थी। इसी बीच पुलिस ने एहतियातन कई जिम्मेदार पदाधिकारियों को उनके आवासों पर ही रोक दिया। हालांकि, पार्टी से जुड़े अनेक कार्यकर्ता निजी बसों और अन्य साधनों से गोपनीय तरीके से लखनऊ के लिए रवाना हो गए। अंबेडकरनगर में आज़ाद समाज पार्टी और भीम आर्मी के संगठनात्मक विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले रमेश यादव पुजारी ने अपने आवास पर पुलिस की मौजूदगी के दौरान सरकार की कार्रवाई पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि यह घटनाक्रम इस बात का संकेत है कि अपनी बात रखने वालों की आवाज़ दबाने का प्रयास किया जा रहा है। रमेश यादव पुजारी ने कहा कि 'शुक्रवार की रात लगभग 12:30 बजे पुलिस मेरे घर पहुँची और मुझे घर से बाहर न निकलने की हिदायत दी गई। लोकतंत्र में अपनी बात शांतिपूर्ण तरीके से रखना प्रत्येक नागरिक का संवैधानिक अधिकार है। यदि लोगों को अपनी बात रखने से रोका जाएगा तो यह लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए चिंता का विषय है। 'उन्होंने अपने समर्थकों और कार्यकर्ताओं से अपील करते हुए कहा कि सभी लोग संविधान और लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए एकजुट रहें तथा शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीके से अपना समर्थन दर्ज कराएँ। उन्होंने 'जय भीम, जय संविधान' का उद्घोष करते हुए पार्टी

आधी रात से पुलिस का पहरा, पूर्व जिला प्रभारी रमेश यादव पुजारी को घर में रोका गया; लोकतांत्रिक अधिकारों के हनन का लगाया आरोप
'आवाज़ दबाने से आंदोलन नहीं रुकेंगे '- रमेश यादव पुजारी, कार्यकर्ताओं से संविधान की रक्षा के लिए एकजुट रहने की अपील

कार्यकर्ताओं का मनोबल बनाए रखने का भी आह्वान किया। इस पूरे घटनाक्रम के बाद आलापुर क्षेत्र में राजनीतिक चर्चाएँ तेज रहीं। एक ओर प्रमुख नेताओं के घरों पर पुलिस की तैनाती चर्चा का विषय बनी रही, वहीं दूसरी ओर कार्यकर्ताओं के गुपचुप तरीके से राजधानी रवाना होने की खबरों ने राजनीतिक हलकों में हलचल बढ़ा दी। अब सबकी निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि इस घटनाक्रम का स्थानीय राजनीति और संगठनात्मक गतिविधियों पर आगे क्या प्रभाव पड़ता है।

संचारी रोग नियंत्रण अभियान की समीक्षा, सभी विभागों को समन्वय से काम करने के निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अपर मुय सचिव ने सभी संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि संचारी रोग नियंत्रण अभियान को प्रभावी बनाने के लिए आपसी समन्वय के साथ कार्य करें। उन्होंने कहा कि जनपदों में स्वच्छता अभियान को गति देते हुए नालियों की नियमित सफाई, जलभराव की रोकथाम, स्वच्छ पेयजल की उपलधता तथा मच्छरजनित रोगों से बचाव के लिए प्रभावी उपाय सुनिश्चित किए जाएं। साथ ही अभियान के दौरान किए जा रहे कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग की जाए और किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाए। बैठक में स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचारी रोगों की रोकथाम के लिए किए जा रहे प्रयासों के साथ अन्य विभागों की जिमेदारियों की भी समीक्षा की गई। अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि नालियों की सफाई, झाड़ियों की कटाई, जलभराव का निस्तारण, फॉगिंग और एंटी लार्वा दवाओं का नियमित छिड़काव सुनिश्चित किया जाए।

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में संचारी रोगों की रोकथाम एवं नियंत्रण के लिए योगी सरकार द्वारा चलाए जा रहे संचारी रोग नियंत्रण अभियान की शनिवार को अपर मुख्य सचिव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग अमित कुमार घोष की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में अभियान की प्रगति, विभिन्न विभागों की गतिविधियों तथा जनपदों में संचारी रोगों की रोकथाम के लिए किए जा रहे कार्यों का विस्तृत आकलन किया गया। अपर मुख्य सचिव ने सभी संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि संचारी रोग नियंत्रण अभियान को प्रभावी बनाने के लिए आपसी समन्वय के साथ कार्य करें। उन्होंने कहा कि जनपदों में स्वच्छता अभियान को गति देते हुए नालियों की नियमित सफाई, जलभराव की रोकथाम, स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता तथा मच्छरजनित रोगों से बचाव के लिए प्रभावी उपाय सुनिश्चित किए जाएं। साथ ही अभियान के दौरान किए जा रहे कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग की जाए और किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाए। बैठक में स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचारी रोगों की रोकथाम के लिए किए जा रहे प्रयासों के साथ अन्य विभागों की जिम्मेदारियों की भी समीक्षा की गई। अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि नालियों की सफाई, झाड़ियों की कटाई, जलभराव का निस्तारण, फॉगिंग और एंटी लार्वा दवाओं का नियमित छिड़काव सुनिश्चित किया जाए। साथ ही जनजागरूकता कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से संचालित करने पर विशेष जोर दिया गया। अपर मुख्य सचिव ने कहा कि आशा, एएनएम, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और स्वास्थ्य विभाग की टीमों के माध्यम से लोगों को संचारी रोगों से बचाव के प्रति जागरूक किया जाए। उन्होंने स्वच्छता अपनाने, मच्छरों से बचाव के उपाय करने तथा रोग के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लेने के लिए लोगों को प्रेरित करने के निर्देश दिए। अमित कुमार घोष ने कहा कि प्रदेश सरकार का लक्ष्य संचारी रोगों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित कर नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना है। इसके लिए सभी विभागों को अपनी जिम्मेदारियों का गंभीरता से निर्वहन करना होगा। उन्होंने जिलों से प्राप्त प्रगति रिपोर्ट के आधार पर अभियान की नियमित समीक्षा और आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए। बैठक में विशेष सचिव रवि रंजन, धीरेन्द्र सचान, विभिन्न विभागों के प्रतिनिधि तथा अपर निदेशक भौतिक रूप से उपस्थित रहे, जबकि सभी जिलाधिकारी और मुख्य चिकित्साधिकारी वर्चुअल माध्यम से बैठक में शामिल हुए।

यूपी टी-20 मिनी ऑक्शन में खिलाड़ियों पर जमकर हुई धनवर्षा, कर्ण शर्मा बने सबसे महंगे खिलाड़ी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

आगरा। उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन (यूपीसीए) द्वारा आयोजित यूपी टी-20 लीग के चौथे सीजन की मिनी नीलामी में खिलाड़ियों पर जमकर धनवर्षा हुई। आगरा के ताज कन्वेंशन सेंटर में आयोजित नीलामी में 250 से अधिक खिलाड़ियों पर बोली लगी। अनुभवी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर और आईपीएल स्टार कर्ण शर्मा इस नीलामी के सबसे महंगे खिलाड़ी रहे। पांच लाख रुपये के बेस प्राइस वाले मेरठ के कर्ण शर्मा को कानपुर सुपरस्टार्स ने 23 लाख रुपये में अपनी टीम से जोड़ा। नीलामी में दूसरी सबसे बड़ी बोली बुलंदशहर के तेज गेंदबाज शुभम गौतम पर लगी। मात्र 2.50 लाख रुपये के बेस प्राइस वाले शुभम को नोएडा किंग्स ने 21.50 लाख रुपये में खरीदा। यूपीसीए के स्पीड हंट कार्यक्रम से पहचान बनाने वाले शुभम ने इस मिनी नीलामी में सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। वहीं मेरठ के बल्लेबाज शिवम चौधरी को गौर गोरखपुर लायंस ने 21 लाख रुपये में खरीदा। इसके अलावा मोहम्मद शारिम और शिवा सिंह पर भी फ्रेंचाइजी ने बड़ा दांव खेला। दोनों खिलाड़ियों को 17.50-17.50 लाख रुपये में खरीदा गया। मोहम्मद शारिम काशी रुद्रास जबकि शिवा सिंह नोएडा किंग्स का हिस्सा बने। बीसीसीआई उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला की गरिमामयी मौजूदगी में आयोजित इस मिनी नीलामी का संचालन सुप्रसिद्ध ऑक्शनर अंगद बेदी ने किया। बीसीसीआई उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने युवा खिलाड़ियों को अवसर प्रदान करने और उन्हें अगले स्तर तक पहुँचाने में मदद करने के लिए यूपी टी20 लीग की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह यूपी टी20 लीग का चौथा संस्करण है, और पिछले तीन सीजन में इसने जो प्रभाव छोड़ा है, वह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। यूपी टी-20 लीग की गवर्निंग काउंसिल के चेयरमैन डॉ. संजय कपूर ने कहा कि यूपी टी-20 लीग हमारे लिए कभी सिर्फ एक क्रिकेट टूर्नामेंट नहीं रही। शुरुआत से ही हमारा उद्देश्य उत्तर प्रदेश के प्रतिभाशाली क्रिकेटरों के लिए अवसर पैदा करना और उन्हें अपने सपनों को साकार करने का मंच देना रहा है। उन्होंने बताया कि नीलामी में लखनऊ फाल्कंस ने समीर चौधरी को 11.75 लाख रुपये में खरीदा, जबकि नोएडा किंग्स ने शोएब सिद्दीकी को 11.25 लाख रुपये में अपनी टीम का हिस्सा बनाया। कानपुर सुपरस्टार्स ने यशोवर्धन सिंह व प्रियांशु पाण्डेय को 6.60 लाख रुपये में खरीदा। वहीं काशी रुद्रास ने विजय यादव को 5.20 लाख रुपये में अपने साथ जोड़ा, जबकि नोएडा किंग्स ने अंचित यादव को उनके बेस प्राइस पांच लाख रुपये में खरीदा। मेरठ मावेरिक्स ने करण चौधरी और कुणाल यादव को पांच-पांच लाख रुपये में अनुबंधित किया।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इंडिया का 48वां स्थापना दिवस समारोह संपन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इंडिया का 48वां स्थापना दिवस शनिवार को लखनऊ के यूथ हॉस्टल क्लब में धूमधाम से मनाया गया। समारोह के दौरान एसोसिएशन के प्रदेश, मंडल एवं जिला स्तर के पदाधिकारियों का मनोनयन भी किया गया। एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने बताया कि संगठन की स्थापना 25 जुलाई 1978 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी शिक्षा, चिकित्सा, अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। तब से संगठन देशभर में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों और संस्थानों के हितों की रक्षा तथा उनके अधिकारों के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा 21 जून 2011 को जारी आदेश का भी उल्लेख किया गया। संगठन का दावा है कि वह समय-समय पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हित में आंदोलन और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करता रहा है तथा चिकित्सकों की समस्याओं के समाधान के लिए लगातार प्रयासरत है। एसोसिएशन के सचिव मिथिलेश कुमार मिश्रा ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों एवं शुभचिंतकों से अधिक से अधिक संख्या में संगठन की सदस्यता ग्रहण कर इसे मजबूत बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि संगठन भविष्य में भी चिकित्सकों के हितों की रक्षा और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए सक्रिय भूमिका निभाता रहेगा।

एल्पिस ग्लोबल स्कूल में छात्र नेतृत्व एवं प्रबंधन क्षमता विकास हेतु हाउस कैबिनेट का गठन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां। बिसवां नगर के प्रतिष्ठित एल्पिस ग्लोबल स्कूल में विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, टीम भावना एवं प्रबंधन कौशल विकसित करने के उद्देश्य से विभिन्न कक्षाओं से चयनित विद्यार्थियों के हाउस कैबिनेट का गठन किया गया। विद्यालय परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को जिम्मेदारी, निर्णय लेने की क्षमता तथा सामूहिक नेतृत्व का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना रहा।

कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 11 के छात्र राघव भल्ला को हेड बॉय तथा छात्रा रुश्दा फुरकान को हेड गर्ल नियुक्त किया गया। इनके साथ विभिन्न हाउसों के कैप्टन एवं अन्य पदाधिकारियों को भी जिम्मेदारियां सौंपी गईं। येलो हाउस (एंटरप्राइज) की कैप्टन हिबा अंसारी के साथ शौर्य वर्मा, अमृता वर्मा, प्रांजल शर्मा एवं वैवस्वत मिश्र को नियुक्त किया गया। ग्रीन हाउस (एवोल्यूशन) की कैप्टन समृद्धि वैश्य के साथ सत्यप्रकाश, गुरसिमरन कौर, स्वप्निल शर्मा, प्रिया भल्ला एवं शिवा शुक्ल को जिम्मेदारी दी गई। रेड हाउस (एंड्यूरेंस) की कैप्टन वैशाली जैन के साथ अभिनव पटेल, मांसी वर्मा, मो. उमैद, मान्या त्रिपाठी एवं शीर्ष त्रिपाठी को नियुक्त किया गया।

वहीं ब्लू हाउस (एंडेवर) की कैप्टन हर्षिता सिंह के साथ रामांश कुमार, शानू विश्वकर्मा, स्पर्श भदौरिया, अनुकृष्णा सिद्धार्थ शौर्य एवं दीप श्रीवास्तव को हाउस गतिविधियों की जिम्मेदारी सौंपी गई।इस अवसर पर विद्यालय डायरेक्टर उमंग राजवंशी तथा विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती दीपा चंद्रा उपस्थित रहीं। उन्होंने नव-नियुक्त छात्र पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विद्यालय में हाउस प्रणाली विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, सहयोग की भावना, जिम्मेदारी निभाने की क्षमता एवं प्रभावी प्रबंधन कौशल का विकास होता है। विद्यालय प्रबंधक श्री उमंग राजवंशी ने कहा कि छात्र पदाधिकारी विद्यालय की विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक, खेलकूद एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के सुचारू संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्हें अपने साथियों को प्रेरित करने, टीम के साथ कार्य करने तथा विद्यालय की गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने का अवसर मिलेगा। प्रधानाचार्या दीपा चंद्रा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि नेतृत्व केवल पद प्राप्त करने का नाम नहीं, बल्कि जिम्मेदारी निभाने, दूसरों का मार्गदर्शन करने और अपने कार्यों से उदाहरण प्रस्तुत करने का नाम है। उन्होंने सभी नव-नियुक्त पदाधिकारियों से ईमानदारी, अनुशासन एवं समर्पण के साथ अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने का आह्वान किया। इस अवसर पर विद्यालय के समस्त शिक्षकगण एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का वातावरण उत्साह, ऊर्जा एवं गौरव से परिपूर्ण रहा। नव-नियुक्त छात्र पदाधिकारियों ने विद्यालय की गरिमा एवं हाउस भावना को बनाए रखते हुए अपनी जिम्मेदारियों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने का संकल्प लिया।

संक्षिप्त खबरें

हर बच्चे तक न्याय पहुंचाना हमारी जिम्मेदारीः जिला विधिक सेवा प्राधिकरण

लखनऊ। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) द्वारा लागू 'चाइल्ड-फ्रेंडली लीगल सर्विसेज फॉर चिल्ड्रेन स्कीम-2024' के तहत बच्चों को निःशुल्क, सुरक्षित, सुलभ और बाल-अनुकूल विधिक सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए), लखनऊ ने कहा है कि प्रत्येक बच्चे को न्याय तक पहुंच सुनिश्चित करना समाज और व्यवस्था की साझा जिम्मेदारी है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के प्रभारी सचिव जीवक कुमार सिंह ने बताया कि यह योजना 18 वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों के लिए लागू है। इसके अंतर्गत विधि का उल्लंघन करने वाले बालक, देखरेख एवं संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चे, बाल श्रमिक, मानव तस्करी, दुर्व्यवहार, लैंगिक हिंसा, बाल विवाह, दिव्यांग, अनाथ, परित्यक्त, गुमशुदा तथा अन्य संवेदनशील परिस्थितियों में रह रहे बच्चों को निःशुल्क विधिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

मानसिक रोग एवं बौद्धिक अक्षमता से पीड़ितों को मिलेगी निःशुल्क विधिक सहायता

लखनऊ। मानसिक रोग एवं बौद्धिक अक्षमता से ग्रसित व्यक्तियों को न्याय तक सहज और प्रभावी पहुंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) ने 'लीगल सर्विसेज टू पर्सन्स विद मेंटल इलनेस एंड पर्सन्स विद इंटेलेक्चुअल डिसएबिलिटी स्कीम-2024' लागू की है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए), लखनऊ ने बताया कि इस योजना के तहत पात्र व्यक्तियों को पूरी तरह निःशुल्क विधिक सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के प्रभारी सचिव जीवक कुमार सिंह ने बताया कि योजना का मुख्य उद्देश्य मानसिक रोग अथवा बौद्धिक अक्षमता से पीड़ित व्यक्तियों को गरिमापूर्ण जीवन, समान अवसर तथा न्याय तक प्रभावी पहुंच सुनिश्चित करना है।

साहित्य सृजन संस्थान, बिसवां द्वारा जरूरतमंद, मेधावी बच्चों को पुनः निःशुल्क वितरित की गई पाठ्य पुस्तकें

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां सीतापुर। शैक्षिक, सामाजिक, साहित्यिक सरोकारों को समर्पित अ. भा. संस्था 'साहित्य सृजन संस्थान' द्वारा क्षेत्र बच्चों के शैक्षिक विकास के लिए बिसवां में निकट पशु चिकित्सालय, तहसील रोड पर स्थापित 'सृजन पुस्तकालय' में शहरी सराय स्थित मौलाना आजाद हायर सेकेंडरी स्कूल में कक्षा 9 के छात्र सुधीर कुमार, शिवानी, बृजेश कुमार को उनकी पाठ्यक्रम की पुस्तकें, स्टेशनरी और स्कूल बैग प्रदान किया गया। इसी क्रम में कुछ अन्य बच्चों को उनकी स्कूल किट उनके विद्यालय भेजी गई। सरस्वती विद्या मंदिर की एक छात्रा को भी स्कूल बैग और पाठ्यपुस्तक भेंट की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विकल्प जी (सह जिला प्रचारक, बिसवां) उपस्थित रहे। संस्थान द्वारा उन्हें और ओम जी को स्मृतिचिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विकल्प जी ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा सामाजिक विषमता को दूर कर समता और समरसता का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। सृजन पुस्तकालय का यह शैक्षिक प्रयास सराहनीय है। हमारी शुभकामनाएं और भरपूर सहयोग संस्थान को सदैव सुलभ रहेगा। संस्थान के संस्थापक/अध्यक्ष साहित्यकार संदीप मिश्र सरस ने बताया कि संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष क्षेत्र के मेधावी जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को निःशुल्क स्कूल बुक किट उपलब्ध कराई जाती है। ये बच्चे अपनी मेधा के बल पर सफलता अर्जित करके बिसवां का नाम पूरी दुनिया में जब रोशन करेंगे तो हमारे संस्थान का संकल्प सार्थक हो जाएगा। कार्यक्रम में समाजसेवी दीपक शुक्ल, रवि प्रकाश बंसल, वृंदारकनाथ मिश्र, गंगा स्वरूप मिश्र, रामचंद्र वर्मा, ओम जी, ऋतुराज सिंह, रामेंद्र वर्मा, एस जे डी इंटर कॉलेज के प्रवक्ता मकसूद अली, चंदन रस्तोगी, विवेक अवस्थी, मनोज गुप्ता एडवोकेट, मुकुंद पांडेय एवं बच्चों के अभिभावक उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि पुस्तकालय में विभिन्न भाषाओं की साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक पुस्तकों के साथ-साथ पर्याप्त कंपटीशन बुक्स की व्यवस्था है। प्रतिवर्ष विभिन्न महाविद्यालयों के अन्यान्य शोध छात्र छात्राएं पुस्तकालय द्वारा उपलब्ध पुस्तकों से अपने लघु शोध प्रबंध तैयार करते हैं।

मलिहाबाद : खड़ौहा में दीवार ढहने से 11 वर्षीय शिवा की दर्दनाक मौत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के रहीमाबाद थाना क्षेत्र के खड़ौहा गांव में शनिवार दोपहर हुई मूसलाधार बारिश एक परिवार के लिए जिंदगी भर का गहरा जख्म बन गई। लगातार हो रही बारिश के चलते एक पुराने कच्चे मकान की मिट्टी की दीवार अचानक भरभराकर गिर गई। हादसे के समय घर के बाहर गलीनुमा हिस्से में खेल रहे 11 वर्षीय शिवा दीवार के मलबे में दब गया। काफी प्रयासों के बाद जब ग्रामीणों ने उसे बाहर निकाला, तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। इस दर्दनाक घटना से पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई। वहीं शिवा के साथ खेल रहा उसका मामा का बेटा कृष्णा बाल-बाल बच गया। जानकारी के अनुसार, यह हादसा गांव निवासी सुनील के पुराने कच्चे मकान के पास हुआ, जो अंबेडकर पार्क के निकट स्थित है। शनिवार दोपहर बारिश के दौरान शिवा और उसका ममेरा भाई कृष्णा मकान के गलियारे में खेल रहे थे। तभी अचानक जर्जर और बारिश से कमजोर हो चुकी मिट्टी की दीवार भरभराकर दोनों बच्चों की ओर गिर गई। मलबा गिरते ही आसपास अफरा-तफरी मच गई। कृष्णा किसी तरह सुरक्षित निकल आया, लेकिन शिवा भारी मलबे के नीचे दब गया। घटना के समय पास में मौजूद एक अन्य बच्चे ने शोर मचाकर ग्रामीणों को हादसे की जानकारी दी। सूचना मिलते ही आसपास के लोग और परिजन मौके पर पहुंचे और बिना समय गंवाए राहत कार्य शुरू कर दिया। ग्रामीणों ने अपने स्तर पर करीब 20 मिनट तक लगातार मशक्कत कर मिट्टी और मलबा हटाया। काफी प्रयासों के बाद शिवा को बाहर निकाला गया, लेकिन तब तक उसकी सांसें थम चुकी थीं। मासूम की मौत की पुष्टि होते ही परिजनों में कोहराम मच गया और गांव का माहौल पूरी तरह गमगीन हो गया। बताया जा रहा है कि शिवा अपने परिवार का चहेता था। उसके परिवार में माता-पिता, दो भाई और एक बहन हैं। बेटे की असमय मौत से परिवार का रो-रोकर बुरा हाल है। मां का विलाप सुनकर मौके पर मौजूद लोगों की आंखें भी नम हो गईं। गांव के लोगों ने भी इस घटना को बेहद दुखद बताते हुए परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की। घटना की सूचना मिलते ही रहीमाबाद थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने आवश्यक कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच में माना जा रहा है कि लगातार बारिश के कारण कच्ची और जर्जर दीवार कमजोर हो गई थी, जिसके चलते यह हादसा हुआ। बरसात के मौसम में इस तरह की घटनाएं यह संकेत देती हैं कि पुराने और जर्जर कच्चे मकानों की समय रहते जांच और मरम्मत कितनी आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी कई परिवार ऐसे मकानों में रहने को मजबूर हैं, जो तेज बारिश के दौरान कभी भी हादसे का कारण बन सकते हैं। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि गांवों में जर्जर मकानों का सर्वे कराकर ऐसे भवनों को चिन्हित किया जाए, ताकि भविष्य में किसी और परिवार को इस तरह का दर्द न झेलना पड़े।

नीट परीक्षा में हुए पेपर लीक को लेकर जंतर मंतर में हो रहे प्रदर्शन के समर्थन में सौपा गया ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां सीतापुर। नीट परीक्षा में हुए पेपर लीक को लेकर जंतर मंतर मैं हो रहे प्रदर्शन के समर्थन में समाजवादी पार्टी के बिसवां विधानसभा क्षेत्र मे दिग्विजय सिंह देव और सेउता विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक महेंद्र सिंह झीन बाबू के नेतृत्व में अलग-अलग महामहिम राष्ट्रपति के नाम संबोधित ज्ञापन उपजिलाधिकारी राहुल सिंह को सौपा और केंद्र और अलग-अलग प्रदेश सरकार के विरुद्ध जमकर नारे बाजी की समाजवादी पार्टी के प्रवक्ता दिग्विजय सिंह देव के नेतृत्व में आयोजित प्रदर्शन कार्यक्रम गुलजार शाह प्रांगण से शुरू हुआ सैकड़ो की तादाद में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता धर्मेंद्र प्रधान इस्तीफा दो इस्तीफा दो जौहर विश्वविद्यालय नहीं गिरने देंगे अखिलेश यादव जिंदाबाद मोदी तेरी तानाशाही नहीं चलेगी नहीं चलेगी इत्यादि के नारे लगाते हुए बड़े चौराहे होते हुए तहसील पहुंचे और वहां जमकर नारेबाजी कर प्रदर्शन किया और राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन उप जिलाधिकारी को सौपा। ज्ञापन में मांग की गई कि डीजल पेट्रोल के दाम कम किये जाए स्मार्ट मीटरों को बिना उपभोक्ताओं की जानकारी के भार ना बढ़ाया जाए पेपर लीक की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाए निर्माण अधीन एवं जर्जर सड़कों को तत्काल दुरुस्त कराया जाए। तहसील क्षेत्र पंचायत और नगर पालिका विद्युत विभाग एवं अन्य सरकारी विभागों में पनप रहे भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया जाए जौहर विश्वविद्यालय के 38 भवन ध्वस्तीकरण का आदेश वापस लिया जाए। इस मौके पर विधानसभा क्षेत्र से पूर्व मंत्री कमलेश यादव, ब्लाक प्रमुख शांति यादव, समाजवादी पार्टी के नेता प्रमोद वर्मा, सपा नेता अफजाल कौसर, शब्बीर नेता, माज खान, छात्र नेता श्याम यादव, मुर्तिजा अली अंसारी, विधानसभा अध्यक्ष सुनील यादव, लव कुश राजवंशी, जगतपाल यादव, उदय भान, सीताराम यादव, प्रेम यादव, निर्मल यादव, नूर नेता, के अलावा सैकड़ो की तादाद में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

नकली दवाओं के सिंडिकेट पर बड़ा शिकंजा, लखनऊ में 15.5 लाख की दवाएं सीज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में नकली (काउंटरफीट) और संदिग्ध दवाओं के कारोबार पर शिकंजा कसते हुए खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग ने शनिवार को लखनऊ में व्यापक प्रवर्तन अभियान चलाया। मुख्यालय स्तर से गठित 18 औषधि निरीक्षकों की विशेष टीम ने अमीनाबाद सहित विभिन्न क्षेत्रों में 13 से अधिक दवा फर्मों पर एक साथ छापेमारी की। कार्रवाई के दौरान एक अवैध गोदाम से करीब 15.5 लाख रुपये मूल्य की दवाएं जब्त (सीज) की गई, कई फर्मों को सील किया गया और संबंधित कारोबारियों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराने के निर्देश दिए गए हैं। विभाग के अनुसार अभियान का उद्देश्य नकली और संदिग्ध दवाओं की सप्लाई चेन को पूरी तरह ध्वस्त करना तथा ऐसे संगठित गिरोहों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करना है, जो फर्जी दस्तावेजों और कागजी लेनदेन के माध्यम से बाजार में नकली दवाओं की आपूर्ति कर रहे हैं। जांच के दौरान अधिकारियों ने पाया कि कुछ थोक दवा फर्में और एजेंट बिना वास्तविक दवा आपूर्ति के आपस में क्रॉस-बिलिंग, फर्जी बिल तैयार करने और बिना बैंक ट्रांसफर के कागजी लेनदेन दिखाकर संगठित तरीके से कारोबार कर रहे थे। प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया कि इस नेटवर्क के जरिए नकली दवाओं को बाजार में खपाने का प्रयास किया जा रहा था। विभाग ने इस मामले में मेसर्स अशोक फार्मा, मिश्रा एसोसिएट्स, भारत फार्मा, शिव शक्ति फार्मा, विद्या फार्मा, आर.एन. फार्मा और मीत इंटरप्राइजेज से जुड़े संचालकों के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं में एफआईआर दर्ज कराने के निर्देश दिए हैं।

संपादकीय

पेपर लीक पर अब कड़ी सजा

देश में पिछले कुछ वर्षों के दौरान विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के पेपर लीक होने की घटनाओं ने लाखों युवाओं के भविष्य पर सवाल खड़े कर दिए हैं। देश में आज सबसे बड़ी खबर पेपर लीक मामले को लेकर ही चल रही है। जहां एक ओर जंतर-मंतर पर छात्र पिछले चार सप्ताह से धरने पर बैठे हैं तो विपक्षी भी अब इस मामले को लेकर सड़कों से लेकर संसद तक में हंगामा कर रहे हैं। वहीं सरकार भी एक के बाद एक मीटिंग कर रही है कि आखिर इस मुद्दे को कैसे समाप्त किया जा सके। छात्रों की ज़्यादातर मांगों से सरकार सहमत है सिर्फ शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे को छोड़कर जब कि छात्रों के संगठन सीजेपी ने स्पष्ट किया है कि धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे से कम कोई बात नहीं होगी। नीट भर्ती परीक्षाओं और अन्य सार्वजनिक परीक्षाओं में गड़बड़ियों के आरोपों के बाद छात्रों का आक्रोश लगातार बढ़ता गया। इसी पृष्ठभूमि में केंद्र सरकार ने पेपर लीक और परीक्षा में संगठित धांधली के खिलाफ कानून को और अधिक सख्त बनाने का फैसला किया है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने ऐसे विधेयक को मंजूरी दी है जिसमें दोषियों के लिए अधिकतम 10 वर्ष तक की जेल, ?10 करोड़ तक के जुर्माने और मामलों के शीघ्र निस्तारण के लिए फास्ट-ट्रैक अदालतों का प्रावधान किया गया है। यह विधेयक संसद में पेश किया जाना प्रस्तावित है। आखिर नया कानून क्यों जरूरी पड़ा? पेपर लीक केवल एक अपराध नहीं, बल्कि लाखों छात्रों की मेहनत, समय और विश्वास पर हमला है। एक परीक्षा के रद्द होने से अभ्यर्थियों को महीनों की तैयारी दोबारा करनी पड़ती है। कई उम्मीदवार उम्र सीमा के करीब पहुंच जाते हैं, आर्थिक बोझ बढ़ता है और मानसिक तनाव भी गहरा जाता है। इन्हीं कारणों से सरकार पर लगातार दबाव था कि केवल गिरफ्तारी से काम नहीं चलेगा, बल्कि ऐसा कठोर कानून बनाया जाए जो पेपर लीक के पूरे नेटवर्क को तोड़ सके। प्रस्तावित संशोधनों के अनुसार— पेपर लीक में दोषी पाए जाने पर अधिकतम 10 वर्ष तक की सजा। दोषियों पर ?10 करोड़ तक का जुर्माना लगाया जा सकेगा। न्यूनतम सजा बढ़ाने का भी प्रस्ताव है ताकि अपराधी आसानी से बच न सकें। पेपर लीक के मामलों की सुनवाई के लिए फास्ट-ट्रैक अदालतों की व्यवस्था होगी, जिससे मामलों का जल्द निपटारा हो सके। संगठित गिरोह, संस्थानों और ऐसे लोगों पर भी कार्रवाई होगी जो परीक्षा प्रणाली से छेड़छाड़ या धोखाधड़ी में शामिल पाए जाएंगे। क्या केवल कठोर सजा से समस्या खत्म होगी? कानून का सख्त होना आवश्यक है, लेकिन पर्याप्त नहीं। यदि परीक्षा कराने वाली संस्थाओं की सुरक्षा व्यवस्था कमजोर रहेगी तो केवल सजा का डर अपराधियों को पूरी तरह नहीं रोक पाएगा। आवश्यक है कि— प्रश्नपत्र तैयार करने से लेकर वितरण तक पूरी प्रक्रिया डिजिटल सुरक्षा के दायरे में हो। परीक्षा केंद्रों की निगरानी मजबूत की जाए। साइबर सुरक्षा को आधुनिक बनाया जाए। दोषी अधिकारियों और कर्मचारियों पर भी समान रूप से कार्रवाई हो। जांच समयबद्ध और निष्पक्ष हो। लगातार पेपर लीक की घटनाओं ने युवाओं का भरोसा कमजोर किया है। कई छात्र मानने लगे हैं कि मेहनत से अधिक महत्व भ्रष्ट नेटवर्क का हो गया है। ऐसे माहौल में केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि उसके प्रभावी क्रियान्वयन से ही विश्वास बहाल होगा। यदि हर मामले में त्वरित जांच, समय पर आरोप पत्र और शीघ्र सजा सुनिश्चित होती है, तो यह कानून वास्तव में निवारक साबित हो सकता है। सरकार के सामने अगली परीक्षा- सरकार ने कड़ा संदेश देने की कोशिश की है कि पेपर लीक अब सामान्य अपराध नहीं माना जाएगा। लेकिन इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि क्या जांच एजेंसियां बड़े गिरोहों तक पहुंच पाती हैं, क्या प्रभावशाली लोगों पर भी समान कार्रवाई होती है और क्या भविष्य में परीक्षाएं बिना विवाद के संपन्न हो पाती हैं। पेपर लीक के खिलाफ 10 वर्ष तक की सजा और भारी जुर्माने का प्रस्ताव निश्चित रूप से कठोर कदम है। इससे परीक्षा माफिया को स्पष्ट संदेश मिलता है कि सरकार अब इस अपराध को हल्के में नहीं लेगी। लेकिन कानून तभी प्रभावी होगा जब उसके साथ पारदर्शी परीक्षा व्यवस्था, आधुनिक तकनीकी सुरक्षा, जवाबदेही और त्वरित न्याय भी सुनिश्चित किया जाए। देश के करोड़ों युवाओं का भविष्य केवल कठोर कानून से नहीं, बल्कि उसके निष्पक्ष और प्रभावी क्रियान्वयन से सुरक्षित होगा।

राजीव शुक्ला -(संपादक)

अंतरराष्ट्रीय खेल सुविधाओं से लैस होकर बरेली का स्पोर्ट्स स्टेडियम बनेगा खेल क्रान्ति का नया केन्द्र

उत्तर प्रदेश में खेल संस्कृति को सुदृढ़ करने और प्रादेशिक खेल प्रतिभाओं को वैश्विक पटल पर स्थापित करने के ऐतिहासिक संकल्प के तहत जिला स्तर पर खेल अवसंरचनात्मक ढांचे का अभूतपूर्व विस्तार किया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की दूरदर्शी सोच और 'खेलेगा यूपी, बढ़ेगा यूपी' के मूल मंत्र को धरातल पर उतारते हुए बरेली के ऐतिहासिक स्पोर्ट्स स्टेडियम को सर्वसुविधायुक्त एवं अत्याधुनिक विश्वस्तरीय खेल परिसर के रूप में विकसित करने की दिशा में अत्यंत ठोस एवं प्रभावी कदम उठाए गए हैं। कभी संसाधनों की सीमितता और पुरानी सुविधाओं से जूझता यह पौराणिक स्टेडियम अब राज्य सरकार, जिला प्रशासन और खेल विभाग के समन्वित प्रयासों से आधुनिक खेल इंफ्रास्ट्रक्चर के बल पर नई ऊर्जा, नई उम्मीदों और नई दिशा का एक सशक्त केंद्र बनकर उभर रहा है। विकास की इस व्यापक योजना का मुख्य ध्येय केवल कंक्रीट के ढांचे खड़े करना नहीं, बल्कि एक ऐसा समग्र, सुदृढ़ और भविष्योन्मुखी खेल इकोसिस्टम तैयार करना है, जहां बरेली के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के होनहार युवाओं को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप वैज्ञानिक एवं पेशेवर प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जा सके। इस युगांतरकारी पहल से बरेली और संपूर्ण रुहेलखंड मंडल के प्रतिभावान एथलीटों को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर उत्तर प्रदेश का मान बढ़ाने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त होगा। बरेली का यह स्पोर्ट्स स्टेडियम दशकों से स्थानीय खिलाड़ियों की मुख्य प्रशिक्षण स्थली रहा है, जहां से निकले अनेक एथलीटों ने राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अद्भुत खेल क्षमता का लोहा मनवाया है। हालांकि, पूर्ववर्ती समय में आधुनिक सुविधाओं का यथेष्ट विस्तार न हो पाने के कारण यहां की अप्रतिम प्रतिभाओं को बेहतर कोचिंग, आधुनिक उपकरणों और सिंथेटिक कोर्ट्स की तलाश में अन्य बड़े महानगरों की ओर रुख करना पड़ता था। अब इस परिदृश्य को पूरी तरह बदलने और बरेली को एक प्रमुख स्पोर्ट्स हब के रूप में स्थापित करने के लिए व्यापक पुनर्विकास योजना पर तीव्र गति से कार्य जारी है। इस महापरिवर्तन की सबसे महत्वपूर्ण और दूरगामी कड़ी के रूप में हॉकी खेल का पुनरुद्धार शामिल है। एक समय था जब बरेली को हॉकी खिलाड़ियों की समृद्ध नर्सरी के रूप में जाना जाता था, परंतु आधुनिक सिंथेटिक एस्ट्रोटर्फ के अभाव में यह खेल धीरे-धीरे अपनी पारंपरिक चमक खोने लगा था और स्थानीय खिलाड़ियों को दैनिक अभ्यास के लिए अन्य जनपदों अथवा राज्यों पर निर्भर रहना पड़ता था। अब स्टेडियम में अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुकूल सिंथेटिक हॉकी टर्फ के निर्माण से इस समस्या का स्थायी समाधान किया जा रहा है। इस आधुनिक सिंथेटिक टर्फ के पूर्ण होने से बरेली के हॉकी खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप नियमित अभ्यास का सुअवसर प्राप्त होगा, जिससे न केवल उनकी तकनीकी दक्षता में अभूतपूर्व सुधार आएगा बल्कि भारतीय हॉकी टीम, विभिन्न राष्ट्रीय टीमों तथा प्रतिष्ठित पेशेवर लीगों में बरेली के खिलाड़ियों के चयन की संभावनाएं भी कई गुना बढ़ जाएंगी। हॉकी के साथ-साथ स्टेडियम परिसर में स्थित स्विमिंग पूल का भी व्यापक आधुनिकीकरण किया जा रहा है। वर्षों पुराने इस स्विमिंग पूल को अत्याधुनिक तकनीक, उन्नत जल शोधन प्रणाली और सुदृढ़ सुरक्षा मानकों से लैस किया जा रहा है। नया एवं अत्याधुनिक स्विमिंग पूल तैयार होने से तैराकों को उच्च स्तरीय वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्राप्त होगा, जिससे भविष्य में बरेली में प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर की तैराकी प्रतियोगिताओं के भव्य आयोजन का मार्ग भी पूरी तरह से प्रशस्त होगा। इसके साथ ही इनडोर खेलों को

विकास की इस व्यापक योजना का मुय ध्येय केवल कंक्रीट के ढांचे खड़े करना नहीं, बल्कि एक ऐसा समग्र, सुदृढ़ और भविष्योन्मुखी खेल इकोसिस्टम तैयार करना है, जहां बरेली के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के होनहार युवाओं को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप वैज्ञानिक एवं पेशेवर प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जा सके। इस युगांतरकारी पहल से बरेली और संपूर्ण रुहेलखंड मंडल के प्रतिभावान एथलीटों को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर उत्तर प्रदेश का मान बढ़ाने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त होगा। बरेली का यह स्पोर्ट्स स्टेडियम दशकों से स्थानीय खिलाड़ियों की मुय प्रशिक्षण स्थली रहा है, जहां से निकले अनेक एथलीटों ने राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अद्भुत खेल क्षमता का लोहा मनवाया है। हालांकि, पूर्ववर्ती समय में आधुनिक सुविधाओं का यथेष्ट विस्तार न हो पाने के कारण यहां की अप्रतिम प्रतिभाओं को बेहतर कोचिंग, आधुनिक उपकरणों और सिंथेटिक कोर्ट्स की तलाश में अन्य बड़े महानगरों की ओर रुख करना पड़ता था।

विशेष प्रोत्साहन देने के क्रम में स्टेडियम के बैडमिंटन हॉल को पूरी तरह से नया रूप प्रदान किया जा रहा है। इसमें अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुकूल सिंथेटिक कोर्ट्स, आधुनिक एवं उच्च गुणवत्ता वाली प्रकाश व्यवस्था, दर्शकों एवं खिलाड़ियों के लिए सर्वसुविधायुक्त सीटिंग अरेंजमेंट और उन्नत अभ्यास सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है, जिससे बैडमिंटन खिलाड़ियों को अपने ही जिले में उत्कृष्ट, अंतरराष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षण वातावरण उपलब्ध होगा। फुटबॉल प्रेमियों और खिलाड़ियों के लिए भी स्टेडियम के मैदान में व्यापक तकनीकी सुधार किए जा रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप मैदान को पूर्णत: समतल बनाने, उच्च गुणवत्ता वाली प्राकृतिक घास लगाने और कुशल जल निकासी प्रणाली विकसित करने पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है, ताकि मानसून के दौरान जलभराव न हो और खिलाड़ी वर्षभर निर्बाध रूप से अभ्यास कर सकें। इसके अतिरिक्त, एथलेटिक्स खिलाड़ियों के लिए एक अत्याधुनिक सिंथेटिक रनिंग ट्रैक के निर्माण की दूरदर्शी योजना बनाई गई है, जो धावकों को चोट-मुक्त अभ्यास वातावरण और पेशेवर ग्रिप प्रदान करेगी। स्टेडियम परिसर में ही अत्याधुनिक फिटनेस सेंटर, वैज्ञानिक जिम, आधुनिक ड्रेसिंग रूम, प्लेयर्स लाउंज, मेडिकल रूम, शुद्ध पेयजल, स्वच्छ शौचालय, फ्लड लाइट्स और दर्शक दीर्घा का व्यापक जीर्णोद्धार किया जा रहा है, ताकि एथलीटों को एक ही छत के नीचे समस्त आवश्यक विश्वस्तरीय सुविधाएं मिल सकें। खेल विशेषज्ञों का मानना है कि आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर किसी भी जिले की खेल प्रतिभाओं के विकास की सबसे मजबूत आधारशिला होती है। जब युवाओं को उनके अपने जनपद में ही अंतरराष्ट्रीय स्तर का इंफ्रास्ट्रक्चर, प्रशिक्षित कोच और उच्च स्तरीय उपकरण प्राप्त होते हैं, तो वे अपनी क्षमता का शत-प्रतिशत प्रदर्शन कर देश का नाम रोशन करते हैं। बरेली स्पोर्ट्स स्टेडियम का यह कायाकल्प केवल खेल जगत तक सीमित न रहकर जिले के सर्वांगीण सामाजिक और आर्थिक विकास को भी नई गति प्रदान करेगा। बड़े स्टेडियम के निर्माण से यहां राष्ट्रीय स्तर के खेल शिविर, खेल अकादमियां और भव्य खेल आयोजनों की संख्या बढ़ेगी, जिससे स्थानीय स्तर पर व्यापार, पर्यटन, आतिथ्य उद्योग, परिवहन और खानपान व्यवसाय को बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा और युवाओं के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के अनेक नए अवसर सृजित होंगे। स्थानीय खिलाड़ियों, खेल संघों और खेल प्रेमियों ने प्रदेश सरकार और जिला प्रशासन द्वारा संचालित इन विकास कार्यों का अत्यंत उत्साहपूर्वक स्वागत किया है। लंबे समय से महसूस की जा रही आधुनिक सुविधाओं की मांग पूरी होने से विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि से आने वाले प्रतिभाशाली युवाओं को अपनी प्रतिभा निखारने का समान अवसर मिलेगा और उन्हें प्रशिक्षण हेतु दूरदराज के क्षेत्रों में जाने के आर्थिक बोझ से मुक्ति मिलेगी। यह विकास कार्य प्रदेश सरकार की 'एक जिला-एक खेल' (ओडीओएस) योजना और 'मेजर ध्यानचंद खेल विश्वविद्यालय' जैसे युगांतरकारी कदमों की कड़ी में बरेली को खेल क्रांति के शीर्ष पर स्थापित करने का प्रयास है। साथ ही, राज्य सरकार द्वारा पदक विजेताओं को दी जा रही करोड़ों रुपये की नगद पुरस्कार राशि और 'कुशल खिलाड़ी योजना' के अंतर्गत सीधे सरकारी सेवाओं में राजपत्रित पदों पर नियुक्तियों की ऐतिहासिक नीति ने खिलाड़ियों का मनोबल अभूतपूर्व रूप से बढ़ाया है। बरेली स्पोर्ट्स स्टेडियम का यह भव्य पुनर्विकास उत्तर प्रदेश को देश की 'स्पोर्ट्स कैपिटल' के रूप में स्थापित करने के प्रदेश सरकार के व्यापक और दृढ संकल्प का एक सशक्त प्रतीक है, जो आने वाले वर्षों में बरेली से अनगिनत अंतरराष्ट्रीय चौंपियन तैयार कर विश्व पटल पर भारत के तिरंगे की शान बढ़ाएगा।

सूचनाधिकारी जनपद-बरेली/
डॉ0 सीमा गुप्ता (से0नि0 सहा0निदे0)

मेष- मेष राशि के जातकों के लिए आज का दिन अपेक्षा से अधिक परिश्रम कराने वाला रह सकता है। कार्यों को पूरा करने में मेहनत अधिक करनी पड़ेगी, जबकि परिणाम उम्मीद से कुछ कम मिल सकते हैं। सामाजिक और परोपकारी कार्यों में आपकी भागीदारी बढ़ सकती है, जिससे सम्मान भी मिलेगा।

वृषभ-वृषभ राशि के लोगों के लिए आज व्यापार और कार्यक्षेत्र में गतिविधियां तेज रहने की संभावना है। अनुभवी और प्रभावशाली लोगों के सहयोग से रुके हुए कार्य आगे बढ़ सकते हैं। प्रतिस्पर्धा वाले क्षेत्रों में मेहनत के बाद सफलता मिलने के योग हैं। आर्थिक पक्ष पहले की तुलना में बेहतर रहेगा।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों को आज कुछ ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है जिनकी पहले से कल्पना नहीं की गई थी। कार्यस्थल पर संयम और समझदारी से काम लेना लाभदायक रहेगा। नए लोगों पर तुरंत भरोसा करने से बचें और हर निर्णय सोच-समझकर लें।

कर्क-कर्क राशि के लिए आज का दिन अध्ययन और ज्ञान से जुड़े कार्यों में व्यावहारिक सोच अपनाने का संकेत दे रहा है। विद्यार्थियों को व्यवहारिक विषयों में बेहतर परिणाम मिल सकते हैं। व्यापार में साहसिक निर्णय लाभ पहुंचा सकते हैं। यदि यात्रा की योजना बना रहे हैं तो उसे कुछ समय के लिए टालना बेहतर रहेगा। परिवार के साथ समय बिताने से मानसिक शांति मिलेगी।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिए आज प्रभाव और प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत हैं। लंबे समय से अटके हुए कार्य पूरे होने से राहत मिलेगी और आर्थिक लाभ की संभावना भी बन सकती है। नए लोगों से परिचय भविष्य में लाभदायक साबित हो सकता है।

कन्या-कन्या राशि के लोगों का अधिकांश समय पारिवारिक और शुभ कार्यों में व्यतीत हो सकता है। सामाजिक और जनहित से जुड़े कार्यों में सक्रियता आपकी प्रतिष्ठा बढ़ा सकती है। आर्थिक मामलों में जोखिम लेने से बचना बेहतर रहेगा।

तुला-तुला राशि के जातकों के लिए आज वास्तविक परिस्थितियों पर ध्यान केंद्रित करना अधिक लाभदायक रहेगा। कल्पनाओं के बजाय व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाने से सफलता मिलने की संभावना बढ़ेगी। अपनी प्रतिभा और अनुभव का सही उपयोग करें। किसी भ्रम या असमंजस में निर्णय लेने से बचें।

वृश्चिक-वृश्चिक राशि के लोगों के लिए आज सरकारी कार्यों और व्यवसाय से जुड़े मामलों में सकारात्मक परिणाम मिलने के संकेत हैं। लंबे समय से रुके हुए कार्य भी उचित प्रयासों से आगे बढ़ सकते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार की संभावना है। प्रेम संबंधों में निकटता बढ़ेगी और आपसी विश्वास मजबूत होगा। कार्यक्षेत्र में आपकी रणनीति सफलता दिला सकती है।

धनु-धनु राशि के जातकों को आज नकारात्मक सोच रखने वाले लोगों से दूरी बनाए रखना उचित रहेगा। भावनात्मक संबंधों से सहयोग और मानसिक संबल मिलेगा। अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता होगी, अन्यथा बजट प्रभावित हो सकता है। कार्यक्षेत्र में धैर्य बनाए रखें। स्वास्थ्य सामान्य रह सकता है, लेकिन थकान महसूस होने की संभावना रहेगी।

मकर-मकर राशि के लोगों के लिए आज का दिन उद्योग और तकनीकी कार्यों से जुड़े क्षेत्रों में लाभ देने वाला हो सकता है। वरिष्ठों और अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिससे महत्वपूर्ण कार्य आसानी से पूरे होंगे।

कुंभ-कुंभ राशि के जातकों के लिए आज कार्यक्षमता बढ़ाने की आवश्यकता महसूस होगी। जिम्मेदारियां अधिक रहने से व्यस्तता बनी रहेगी। नई योजनाओं और नीतियों पर काम करने का अवसर मिल सकता है।

मीन-मीन राशि के लोगों के लिए आज का दिन भावनात्मक संतुष्टि देने वाला हो सकता है। पुराने प्रयासों का सकारात्मक परिणाम व्यवसाय और कार्यक्षेत्र में दिखाई देगा। आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर हो सकती है।

सड़क सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए परिवहन विभाग कुशल चालकों को ही देगा स्थायी ड्राइविंग लाइसेंस

भारत में सड़क दुर्घटनाएँ लंबे समय से एक गंभीर चुनौती बनी हुई हैं। प्रतिवर्ष लाखों लोग सड़क हादसों में घायल होते हैं और हजारों लोगों की मृत्यु हो जाती है। इन दुर्घटनाओं के प्रमुख कारणों में अपर्याप्त चालक प्रशिक्षण, यातायात नियमों की अनदेखी तथा अनुभवहीन चालकों द्वारा वाहन संचालन शामिल हैं। इन चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार (मोर्थ) ने सड़क सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने तथा चालक प्रशिक्षण व्यवस्था को वैज्ञानिक, पारदर्शी और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण पहल की है। इसी दिशा में केंद्रीय मोटरयान नियमावली, 1989 में संशोधन करते हुए प्रत्यायन (प्रमाणन) प्राप्त चालक प्रशिक्षण केन्द्र (Accredited Driver Training Centre - ADTC) की स्थापना एवं संचालन से संबंधित नए प्रावधान जोड़े गए हैं। इन प्रावधानों का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि केवल प्रशिक्षित, दक्ष एवं सक्षम चालक ही स्थायी ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करें। इससे न केवल सड़क दुर्घटनाओं में कमी आएगी, बल्कि देश में सुरक्षित और जिम्मेदार ड्राइविंग संस्कृति का भी विकास होगा। नई व्यवस्था के अंतर्गत चालक प्रशिक्षण केन्द्रों में आधुनिक तकनीक, मानकीकृत पाठ्यक्रम, प्रशिक्षित प्रशिक्षकों तथा निर्धारित मानकों के अनुरूप प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाएगी। प्रशिक्षण के दौरान अभ्यर्थियों को केवल वाहन चलाना ही नहीं सिखाया जाएगा, बल्कि सड़क सुरक्षा के नियम, यातायात संकेत, आपातकालीन परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता, वाहन रख-रखाव, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी तथा जिम्मेदार नागरिक के रूप में सुरक्षित वाहन संचालन का भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य केवल ड्राइविंग लाइसेंस जारी करना नहीं, बल्कि ऐसे जिम्मेदार चालकों का निर्माण करना है जो सड़क पर स्वयं के साथ-साथ अन्य लोगों की सुरक्षा का भी ध्यान रखें। प्रत्यायन चालक प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना एवं उनके रख-रखाव में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए परिवहन विभाग द्वारा एक नया ऑनलाइन पोर्टल विकसित किया जा रहा है। इस पोर्टल के माध्यम से प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने के इच्छुक संस्थानों के आवेदन केवल ऑनलाइन माध्यम से ही स्वीकार किए जाएंगे। अब तक इस प्रक्रिया के लिए विभाग में ऑफलाइन व्यवस्था लागू थी, जिसके कारण दस्तावेजों के सत्यापन, निगरानी एवं अनुमोदन में अधिक समय लगता था। नई ऑनलाइन प्रणाली लागू होने के बाद आवेदन, आवश्यक अभिलेखों का अपलोड, निरीक्षण, अनुमोदन तथा निगरानी की पूरी प्रक्रिया डिजिटल माध्यम से संचालित होगी। इससे कार्यों में पारदर्शिता बढ़ेगी, समय की बचत होगी तथा अनावश्यक मानवीय हस्तक्षेप भी कम होगा। परिवहन विभाग द्वारा पोर्टल को शीघ्र ही लाइव किए जाने की तैयारी अंतिम चरण में है तथा इस दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है। अब तक आईडीटीआर (इंस्टीट्यूट ऑफ ड्राइविंग एण्ड रिचर्स) तथा डीटीटीआई (ड्राइवर ट्रेनिंग एण्ड टेस्टिंग इंस्टीट्यूट) को छोड़कर प्रदेश के 58 जनपदों में प्रत्यायन चालक प्रशिक्षण केन्द्रों से संबंधित कार्यवाही ऑफलाइन माध्यम से की जा रही थी। नई व्यवस्था लागू होने के बाद इन सभी जनपदों में आवेदन केवल ऑनलाइन माध्यम से ही स्वीकार किए जाएंगे। इस डिजिटल प्रणाली से प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना, मान्यता, निरीक्षण तथा संचालन की निगरानी अधिक प्रभावी ढंग से की जा सकेगी। नई नीति के अनुसार प्रत्येक 10 लाख की जनसंख्या पर कम से कम एक प्रत्यायन चालक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए जाने का प्रावधान किया गया है। इसका उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों तक गुणवत्तापूर्ण चालक प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध कराना है, ताकि ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों के इच्छुक अभ्यर्थी आधुनिक प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें। वर्तमान में प्रदेश के लगभग 21 जनपदों में ऐसे प्रशिक्षण केन्द्रों का संचालन विभाग द्वारा किया जा रहा है। आगामी समय में निजी क्षेत्र की भागीदारी के माध्यम से भी इन केन्द्रों की संख्या में वृद्धि की जाएगी, जिससे प्रदेश के सभी जिलों में प्रशिक्षित चालक तैयार किए जा सकें। प्रदेश सरकार तथा भारत सरकार दोनों ही सड़क सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही हैं। सरकार की स्पष्ट मंशा है कि सड़क पर वही व्यक्ति वाहन चलाए जिसने निर्धारित मानकों के अनुरूप प्रशिक्षण प्राप्त किया हो। प्रशिक्षित चालक न केवल यातायात नियमों का बेहतर पालन करते हैं, बल्कि दुर्घटनाओं की संभावना भी काफी हद तक कम हो जाती है। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने भी सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए समय-समय पर संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश दिए हैं। उनका लक्ष्य सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों की संख्या में 50 प्रतिशत तक कमी लाना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए चालक प्रशिक्षण व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाया जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि सड़क दुर्घटनाओं का एक बड़ा कारण अपर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त चालक होते हैं। यदि चालक को वाहन संचालन की तकनीकी जानकारी, सड़क सुरक्षा नियमों का पर्याप्त ज्ञान तथा व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जाए, तो दुर्घटनाओं में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है। प्रत्यायन प्राप्त चालक प्रशिक्षण केन्द्रों में आधुनिक प्रशिक्षण प्रणाली, सिम्युलेटर, व्यवहारिक अभ्यास तथा नियमित मूल्यांकन के माध्यम से अभ्यर्थियों की दक्षता विकसित की जाएगी। इससे केवल लाइसेंसधारी चालक ही नहीं, बल्कि जिम्मेदार एवं सुरक्षित चालक तैयार होंगे।

-आशीष सिंह, अनुवादक

एआई के दौर में केबीसी का नया अंदाज

तीन जुलाई 2000 को स्टार प्लस टेलिविजन चैनल पर 'कौन बनेगा करोड़पति' कार्यक्रम का पहला एपीसोड प्रसारित हुआ था। तब से आजतक पिछले 17 सीजनों में इस कार्यक्रम के 1454 एपीसोड प्रसारित हो चुके हैं। किसी एक एपीसोड का आकर्षण उसके पहले वाले से कमतर नहीं रहा। करीब 26 सालों से जारी 'कौन बनेगा करोड़पति' भारतीय टेलिविजन इतिहास का सबसे विश्वसनीय और लोकप्रिय क्विज शो बना हुआ है। आगामी 9 अगस्त 2026 से इसका 18वां सीजन शुरु हो रहा है, जो अब तक के सीजनों से थोड़ा हटकर होगा। इस सीजन की थीम है- 'सोचना पड़ेगा'।दरअसल एआई के इस दौर में जब किसी भी सवाल का जवाब पलक झपकते मिल सकता हो, उस समय केबीसी को अपनी रणनीति में इस तरह का बदलाव लाना ही होगा कि किसी भी सवाल का जवाब पलक झपकते ही, किसी कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से न दिया जा सके। इसलिए शायद इस बार के सवाल तथ्यों की बजाय विषय के संबंध में गहरे अध्ययन और सोच से निकलेंगे। बहरहाल केबीसी का हर सीजन पिछले से किसी न किसी मामले में थोड़ा अलग होता रहा है। लेकिन चाहे थीम में बदलाव हुआ हो, चाहे प्रजेंटेशन का ढंग बदला हो, इस कार्यक्रम की लोकप्रियता पर असर नहीं हुआ। सवाल है आखिर केबीसी की इस लोकप्रियता की वजह क्या है? दरअसल, केबीसी हमारे ज्ञान और सपनों का संगम है। जहां बाकी टीवी कार्यक्रमों को लेकर दिल में यह भावना रहती है कि इन गढ़ी गयी कहानियों से हम अपना वक्त बर्बाद कर रहे हैं, वहीं केबीसी के बारे में दिमाग में आता है कि हम एक ऐसा कार्यक्रम देख रहे हैं, जो मनोरंजन करने के साथ ही हमारा ज्ञान भी बढ़ा रहा है। ज्ञान को लेकर समाज के अवचेतन में सम्मान की भावना है, इसलिए 'कौन बनेगा करोड़पति' पहली ही सीढ़ी में अपने दर्शकों का सम्मान अर्जित कर लेता है। क्योंकि हर कोई ज्ञान हासिल करना चाहता है। केबीसी की सफलता के पीछे यह नैतिक धारणा सबसे बड़ी चीज है।केबीसी के संबंध में दूसरी बात यह है कि इस कार्यक्रम का हमारी महत्वाकांक्षाओं के साथ मजबूत जुड़ाव है। छोटे शहरों व गांवों के आम लोगों तक को यह कार्यक्रम अपने साथ जोड़ता है। हर किसी में उम्मीद बनाये रखता है कि कोई भी अपनी मेहनत और ज्ञान के बूते करोड़पति बन सकता है। इसके अलावा इस कार्यक्रम के होस्ट अमिताभ बच्चन हैं, जिनकी 50 साल की फिल्मी प्रोफाइल विश्वसनीय है।

अकारण नहीं है कि अब तक के प्रसारित 17 सीजनों में सिर्फ एक सीजन (साल 2007) शाहरुख खान ने इस कार्यक्रम को होस्ट किया था बाकी सभी सीजनों के होस्ट अमिताभ बच्चन ही रहे हैं। ऐसे में केबीसी अमिताभ बच्चन के साथ जुड़ गया कार्यक्रम है। उनका इस कार्यक्रम को प्रस्तुत करने का जो आत्मीय ढंग है, वह सम्मानजनक और सहज हास्य लिए होता है, जो कि दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ता है। वहीं इस कार्यक्रम में अब तक लगभग हर वर्ग का हो चुका प्रतिनिधित्व भी है। किसान, शिक्षक, डॉक्टर, गृहिणि, छात्र, पुलिसकर्मी यानी समाज के हर वर्ग के लोग अब तक इस कार्यक्रम से जुड़े रहे हैं। केबीसी में हर बार इस तरह के बदलाव किये जाते हैं, जिससे पिछले सीजन के मुकाबले मौजूदा सीजन अलग, जरा बेहतर और आसान भी लगता है। केबीसी ने पिछले 17 सीजनों में कई तरह के नियम बदले हैं, कई तरह की सहूलियतें बढ़ायी हैं। लाइफलाइन, पुरस्कार राशि, खेल के नियम, सुपर सवाल जैसे बदलाव दर्शकों को आकर्षित करते रहे हैं। इस बार का बदलाव यानी 18वें सीजन में सवालों की प्रकृति को इस तरह का किया जाना कि एक झटके में और फिक्स जवाब न हों बल्कि जवाब सोचना पड़े, वह भी नये समय की चुनौतियों को देखते हुए काफी लोकप्रिय साबित हो सकता है। क्योंकि आज चैटजीपीटी, गूगल और एआई टूल्स की वजह से जानकारियां सैकेंडों में मिल रही हैं। तथ्य आधारित सवाल ज्यादा चुनौती नहीं पैदा करेंगे।

स्वामी-स्वतंत्र प्रभात मीडिया, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रीती शुक्ला द्वारा अनवर ऑफसेट एम- 58, 59 बेसमेंट विकासदीप बिल्डिंग स्टेशन रोड लखनऊ से मुदित ई-4 सेक्टर-एम/29 अपोजिट उस्मान एन्क्लेव, अलीगंज-लखनऊ 226024 से प्रकाशित, संपादक-राजीव कुमार शुक्ला , मो0-9511151254
Mail: news@swatantraprabhat.com, RNI No: UPHIN/2019/79073 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी आर वी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायीं। किसी भी कानूनी विवाद का निपटारा न्यायलय जनपद लखनऊ ही होगा।

संक्षिप्त खबरें

शिक्षा मंत्री के इस्तीफे पर सपा की प्रतिक्रिया, युवाओं के संघर्ष की जीत बताया

देवरिया। समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष व्यास यादव ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इसे युवाओं के संघर्ष और लोकतांत्रिक आवाज की जीत बताया। उन्होंने कहा कि यह घटनाक्रम शिक्षा व्यवस्था, परीक्षा प्रणाली और युवाओं के प्रति जवाबदेही से जुड़े गंभीर सवाल खड़े करता है। व्यास यादव ने बयान जारी कर कहा कि करोड़ों छात्रों, अभ्यर्थियों और विपक्ष ने शिक्षा व्यवस्था में कथित अनियमितताओं, अव्यवस्था और जवाबदेही के अभाव के मुद्दे लगातार उठाए। उनके अनुसार, केवल मंत्री का इस्तीफा पर्याप्त नहीं है, बल्कि पूरे प्रकरण की निष्पक्ष जांच कर जिम्मेदार अधिकारियों और संबंधित लोगों के विरुद्ध कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा एवं परीक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार की आवश्यकता है, ताकि भविष्य में छात्रों का हित सुरक्षित रह सके और परीक्षाओं की पारदर्शिता एवं विश्वसनीयता बनी रहे। सपा जिलाध्यक्ष ने कहा कि केंद्र सरकार को उन परिस्थितियों पर भी स्पष्ट जवाब देना चाहिए, जिनके कारण शिक्षा मंत्री को पद छोड़ना पड़ा। उन्होंने कहा कि देश का युवा जवाबदेही और पारदर्शिता चाहता है तथा केवल चेहरे बदलने से व्यवस्था में सुधार नहीं होगा। सरकार को युवाओं का विश्वास बहाल करने के लिए ठोस और समयबद्ध कदम उठाने चाहिए।

अजगैन आरओबी की सर्विस रोड का निर्माण शुरू, विधायक ने कार्य का लिया जायजा

उन्नाव। मोहान विधानसभा क्षेत्र के विधायक बृजेश कुमार रावत ने अजगैन स्थित निर्माणाधीन रेलवे ओवरब्रिज (आरओबी) की सर्विस रोड पर शुरू हुए निर्माण कार्य का निरीक्षण किया तथा कार्यदायी संस्था के अधिकारियों एवं ठेकेदारों से मुलाकात कर निर्माण कार्य को निर्धारित समय सीमा में तेजी से पूरा करने के निर्देश दिए। इस दौरान विधायक ने कहा कि अजगैन रेलवे ओवरब्रिज के निर्माण के चलते क्षेत्रवासियों को लंबे समय से आवागमन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। जनसमस्याओं को गंभीरता से लेते हुए सेतु निगम के अधिकारियों के साथ विस्तृत बैठक की गई, जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। बैठक के बाद कार्यदायी संस्था में आवश्यक बदलाव किए गए और सर्विस लेन के निर्माण कार्य की शुरुआत करा दी गई है। विधायक बृजेश रावत ने अधिकारियों से कहा कि निर्माण कार्य में गुणवत्ता बनाए रखते हुए इसे जल्द से जल्द पूरा किया जाए, ताकि क्षेत्र के लोगों को सुरक्षित, सुगम एवं निर्बाध आवागमन की सुविधा मिल सके। उन्होंने विश्वास जताया कि रेलवे ओवरब्रिज का निर्माण अब तेज गति से आगे बढ़ेगा और शीघ्र ही आमजन के लिए समर्पित किया जाएगा। निरीक्षण के दौरान नवाबगंज ब्लॉक प्रमुख एवं जनप्रतिनिधि रवि प्रताप सिंह, भाजपा के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता भी मौजूद रहे। विधायक ने क्षेत्रवासियों के सहयोग, धैर्य एवं विश्वास के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जनहित एवं विकास के कार्य निरंतर प्राथमिकता के आधार पर जारी रहेंगे।

थाना समाधान दिवस में आईं 15 शिकायतें, तीन का मौके पर निस्तारण

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली परिसर में शनिवार को थाना समाधान दिवस का आयोजन किया गया। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह की अध्यक्षता में फरियादियों की शिकायतें सुनी गई। कुल 15 शिकायतें दर्ज हुईं। इनमें से तीन का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया। शेष मामलों को समयबद्ध कार्रवाई के लिए संबंधित राजस्व कर्मियों और पुलिस अधिकारियों को सौंप दिया गया। जगतपुर रामगढ़ी गांव निवासी विजय यादव ने शिकायत की कि गांव के एक व्यक्ति ने चकरोड और नाली पर कब्जा कर उसे अपने खेत में मिला लिया है। इससे आवागमन बाधित हो गया है। उन्होंने पैमाइश कराकर चकरोड बहाल कराने की मांग की। बुजुर्ग शिक्षक कृष्ण कुमार ने अपने बड़े बेटे, बहू और नाती पर गाली-गलौज करने और जबरन पेंशन की मांग करने का आरोप लगाया। उन्होंने बताया कि करीब 20 वर्ष पहले वह अपनी पूरी संपत्ति का बराबर बंटवारा कर चुके हैं। वर्तमान में वह अपने दो छोटे बेटों के साथ रह रहे हैं। उत्तरा गौरी गांव की खुशी ने परिवार के कुछ लोगों पर उनकी भूमि पर अवैध कब्जा करने का आरोप लगाया। उन्होंने बताया कि आरोपी उन्हें अपनी जमीन पर निर्माण नहीं करने दे रहे हैं और विवादित भूमि पर जबरन कब्जा कर रहे हैं। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने संबंधित अधिकारियों को सभी लंबित शिकायतों का निष्पक्ष और समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

घर में घुसकर मारपीट और छेड़छाड़ का आरोप

दो पक्ष आमने-सामने; 13 लोगों के खिलाफ तहरीर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सहजनवा गोरखपुर जिले के गीडा थाना क्षेत्र के चिरैयाडाड गांव में शुक्रवार की शाम पुरानी रंजिश को लेकर दो पक्षों के बीच विवाद इतना बढ़ गया कि मारपीट और घर में घुसकर हमला करने का मामला सामने आया। एक पक्ष की महिला ने आरोप लगाया है कि दबंग घर में घुस आए, परिवार के लोगों के साथ मारपीट की और उसके साथ छेड़छाड़ भी की। घटना के बाद इलाके में कुछ देर के लिए तनाव का माहौल बन गया। पीड़िता ने 13 नामजद आरोपियों के खिलाफ गीडा थाने में तहरीर देकर कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

पीड़िता पवित्री पत्नी राम गोविंद के अनुसार शुक्रवार शाम करीब 5:30 बजे उनका बेटा घर के बाहर था। इसी दौरान कुछ लोग वहां पहुंचे और गाली-गलौज करते हुए उसके साथ मारपीट शुरू कर दी। शोर सुनकर छोटा बेटा अंश सिंह बीच-बचाव करने पहुंचा तो आरोप है कि हमलावरों ने उसके साथ भी मारपीट की। महिला का आरोप है कि इसके बाद सभी आरोपी जबरन उनके घर में घुस आए। घर के भीतर परिवार के सदस्यों के साथ मारपीट की गई और उसके साथ छेड़छाड़ की गई। विरोध करने पर आरोपियों ने उसके ससुर श्रीराम सिंह को भी बेरहमी से पीटकर घायल कर दिया। परिजनों का कहना है कि जान बचाने के लिए वे पड़ोसी के घर भागे, लेकिन आरोपियों ने वहां भी पहुंचकर मारपीट और तोड़फोड़ की। घटना से गांव में अफरा-तफरी मच गई। आसपास के लोगों के जुटने पर आरोपी मौके से फरार हो गए।

घटना के बाद पीड़ित परिवार गीडा थाने पहुंचा और 13 लोगों के खिलाफ तहरीर देकर मुकदमा दर्ज करने की मांग की। पुलिस ने तहरीर लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है।

वहीं दूसरे पक्ष की ओर से भी पुलिस को शिकायत दिए जाने की जानकारी सामने आई है। इस संबंध में गीडा थाना प्रभारी अश्वनी कुमार पांडेय ने बताया कि दोनों पक्षों की ओर से तहरीर प्राप्त हुई है। जांच के आधार पर दोनों पक्षों का मुकदमा दर्ज किया जाएगा। उन्होंने कहा कि महिला द्वारा लगाया गया छेड़छाड़ का आरोप प्रथम दृष्टया सही प्रतीत नहीं होता और जांच के दौरान इसकी भी निष्पक्ष पड़ताल की जाएगी। पुलिस का कहना है कि सभी तथ्यों और साक्ष्यों के आधार पर आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी।

सहजनवा पुलिस ने चोरी के मोबाइल के साथ शातिर चोर को दबोचा, कई मामलों का निकला आरोपी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सहजनवां। गोरखपुर जिले की सहजनवा पुलिस ने चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने की दिशा में बड़ी कार्रवाई करते हुए एक शातिर मोबाइल चोर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी का एक मोबाइल फोन बरामद किया है। गिरफ्तार आरोपी के खिलाफ पहले से भी मोबाइल चोरी और चोरी के सामान की खरीद-फरोख्त से जुड़े कई मुकदमे दर्ज हैं। पुलिस के अनुसार अपराधियों की धरपकड़ के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत पुलिस अधीक्षक उत्तरी के निर्देशन, क्षेत्राधिकारी गीडा के पर्यवेक्षण तथा थानाध्यक्ष सहजनवा के नेतृत्व में पुलिस टीम क्षेत्र में सघन चेकिंग अभियान चला रही थी। इसी दौरान पुलिस ने संदिग्ध गतिविधियों के आधार पर एक युवक को रोककर पूछताछ की। तलाशी लेने पर उसके पास से चोरी का एक मोबाइल फोन बरामद हुआ।

गिरफ्तार आरोपी की पहचान सूफियान अख्तर पुत्र इस्लामुल हक, निवासी दशहरीबाग, थाना गोरखनाथ, जनपद गोरखपुर के रूप में हुई। बरामदगी के आधार पर सहजनवा थाने में मु0अ0सं0 375/2026 के तहत धारा 317(2) भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर यह भी पता लगाने

में जुटी है कि बरामद मोबाइल किसका है और उसके द्वारा पूर्व में की गई अन्य चोरी की घटनाओं से उसका कोई संबंध है या नहीं। जांच के दौरान यह भी सामने आया कि आरोपी कोई नया अपराधी नहीं है। उसके खिलाफ जीआरपी गोरखपुर सहित विभिन्न थानों में मोबाइल चोरी, चोरी के माल की बरामदगी और संबंधित धाराओं में पहले से कई मुकदमे दर्ज हैं। वर्ष 2023, 2024 और 2025 में भी उसके विरुद्ध कई आपराधिक मामले पंजीकृत किए जा चुके हैं। पुलिस अब उसके आपराधिक नेटवर्क और अन्य संभावित साथियों की भी जानकारी जुटा रही है। इस कार्रवाई को सहजनवा पुलिस की महत्वपूर्ण सफलता माना जा रहा है। पुलिस का कहना है कि चोरी की घटनाओं पर प्रभावी नियंत्रण और अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा। गिरफ्तार आरोपी को आवश्यक विधिक कार्रवाई पूरी करने के बाद न्यायालय में पेश किया जाएगा।

भूत-प्रेत के चक्कर में एक सोखा की मौत -दूसरा सोखा फरार

रूद्रपुर, देवरिया। राम लक्षन चौकी क्षेत्र के ग्राम रानिहवा के चिरईगोड़ा टोला में अंधविश्वास और भूत प्रेत का एक अजीबोगरीब मामला देखने को मिला है। जिसमें गांव निवासी सोखा की मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार गांव के चिरईगोड़ा टोला में काफी दिनों से लोग भूत प्रेत के डर से परेशान थे। गांव के लोगों को आसुरी शक्तियों से बचाने के लिए लोगों ने चौकी क्षेत्र के पिपरहवा घाट स्थित एक बड़े सोखा को बुलाया। बड़े सोखा को बुलाने के लिए गांव निवासी जयराम की पत्नी चन्दा देवी ने गांव वालों से चन्दा भी वसूला था।बड़े सोखा ने अपनी तंत्र मंत्र के माध्यम से मेलान हांक दिया। उसने कुछ पोटलियां बांध कर रख दीं। गांव के सोखा मुरारी प्रसाद उम्र 60 वर्ष पुत्र रामदेव ने जैसे ही पोटली खोली गश खाकर गिर पड़ा। इस बीच पिपरहवा घाट का सोखा मौके से फरार हो गया। परिजन उन्हें लेकर अस्पताल पहुंचे। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी मिलते ही रामलक्षन पुलिस मौके पर पहुंच गई और मामले की छानबीन कर रही है।

थाना समाधान दिवस में आया राजस्व का एकमात्र मामला, मौके पर जांच के निर्देश

रतनपुर/महराजगंज। परसामलिक थाना परिसर में शनिवार को थानाध्यक्ष विवेक कुमार सिंह के नेतृत्व में थाना समाधान दिवस का आयोजन किया गया। शासन के निर्देशानुसार आयोजित इस दिवस का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र के फरियादियों की समस्याओं का स्थानीय स्तर पर ही निस्तारण करना है, ताकि उन्हें अपनी शिकायतों के लिए इधर-उधर न भटकना पड़े। समाधान दिवस के दौरान राजस्व विभाग से संबंधित केवल एक मामला सामने आया, जिसे गंभीरता से लेते हुए मौके पर ही जांच-पड़ताल और निस्तारण के लिए राजस्व निरीक्षक रामजीत प्रसाद को सौंप दिया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ उपनिरीक्षक महेंद्र बहादुर सिंह, सेवतरी चौकी प्रभारी पवन कुमार राय, घनश्याम सिंह यादव, रिजवान अहमद खान सहित राजस्व टीम से लेखपाल रत्नेश कुमार, सुनील वर्मा, अनिल कुमार, कृष्ण कुमार और नागेश्वर दीक्षित आदि मौजूद रहे।

डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी के नेतृत्व में संचारी रोग नियंत्रण अभियान तेज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीदत्तगंज (बलरामपुर)। बरसात के मौसम में संचारी रोगों की रोकथाम को लेकर स्वास्थ्य विभाग पूरी सक्रियता के साथ कार्य कर रहा है। इसी क्रम में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र श्रीदत्तगंज के अधीक्षक (एमओआईसी) डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी के नेतृत्व में ग्राम पश्चिमी सेमरा में आयोजित वीएचएसएनडी (VHSND) सत्र का निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण किया गया। साथ ही गांव में संचालित संचारी दस्तक अभियान की गतिविधियों का भी जायजा लिया गया। अभियान के दौरान स्वास्थ्य विभाग की टीम ने घर-घर पहुंचकर संचारी रोगों से बचाव संबंधी जागरूकता अभियान चलाया। ग्रामीणों को साफ-सफाई बनाए रखने, जलभराव से बचने, मच्छरों की रोकथाम के उपाय अपनाने, शुद्ध पेयजल का उपयोग करने तथा बुखार, डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया एवं अन्य संक्रामक रोगों के लक्षण दिखाई देने पर तत्काल स्वास्थ्य केंद्र पर संपर्क करने की सलाह दी गई।

निरीक्षण के दौरान एमओआईसी डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, एचईओ, बीसीपीएम

तथा एफएम ने वीएचएसएनडी सत्र की व्यवस्थाओं, टीकाकरण, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं तथा संचारी दस्तक अभियान की प्रगति का विस्तृत निरीक्षण किया। अधिकारियों ने स्वास्थ्य कर्मियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक पात्र परिवार तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाई जाएं और संचारी रोगों की रोकथाम के लिए जनजागरूकता अभियान को और प्रभावी बनाया जाए। डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि संचारी रोगों पर नियंत्रण के लिए विभाग पूरी गंभीरता से कार्य कर रहा है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी सलाह का पालन करें और किसी भी बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर बिना देर किए सरकारी स्वास्थ्य केंद्र पर जांच एवं उपचार कराएं। इससे संचारी रोगों के प्रसार पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकेगा।

डकैती और नकबजनी करने वाले गिरोह पर पुलिस का बड़ा प्रहार

गैंग लीडर समेत पांच पर गैंगस्टर एक्ट

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोरखपुर। जिले में संगठित अपराध पर शिकंजा कसते हुए खोराबार पुलिस ने डकैती के प्रयास और नकबजनी जैसी वारदातों में सक्रिय एक गिरोह के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। पुलिस ने गैंग लीडर अमन कुमार राव उर्फ मिंटू समेत पांच आरोपितों के विरुद्ध उत्तर प्रदेश गिरोहबंद एवं समाज विरोधी क्रियाकलाप निवारण अधिनियम (गैंगस्टर एक्ट) के तहत मुकदमा दर्ज किया है। यह कार्रवाई पुलिस अधीक्षक नगर के निर्देशन और क्षेत्राधिकारी कैंट के पर्यवेक्षण में की गई। पुलिस के अनुसार गैंग का सरगना अमन कुमार राव अपने साथियों के साथ मिलकर डकैती का प्रयास, नकबजनी और अन्य गंभीर आपराधिक घटनाओं को अंजाम देता था। गिरोह की गतिविधियों से आम लोगों में भय और दहशत का माहौल बना हुआ था। अपराधों पर प्रभावी अंकुश लगाने और गिरोह की गतिविधियों पर रोक लगाने के उद्देश्य से जिला मजिस्ट्रेट की स्वीकृति के बाद गैंग चार्ट तैयार किया गया।

गैंगस्टर एक्ट के तहत दर्ज मुकदमे में गैंग लीडर अमन कुमार राव के अलावा विजय पासवान, धीरज चौरसिया, रोहित पाल और आशीष उर्फ आदित्य शूटर को नामजद किया गया है। इनके विरुद्ध थाना खोराबार में मु0अ0सं0 337/2026 के तहत गैंगस्टर एक्ट की धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस रिकॉर्ड के मुताबिक गिरोह के सदस्यों पर पहले से ही डकैती, चोरी, नकबजनी, मारपीट, हत्या के प्रयास, धमकी, एससी-एसटी एक्ट तथा अन्य गंभीर धाराओं में कई मुकदमे दर्ज हैं। अकेले गैंग लीडर अमन कुमार राव के खिलाफ विभिन्न थानों में डेढ़ दर्जन से अधिक आपराधिक मामले दर्ज बताए गए हैं। वहीं अन्य चारों आरोपितों का भी लंबा आपराधिक इतिहास पुलिस रिकॉर्ड में दर्ज है। खोराबार पुलिस का कहना है कि गिरोह के सदस्य संगठित तरीके से

अपराध कर क्षेत्र में दहशत फैलाते थे। ऐसे अपराधियों के खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई जारी रहेगी और उनकी अवैध गतिविधियों पर लगातार नजर रखी जाएगी। पुलिस का मानना है कि गैंगस्टर एक्ट के तहत की गई इस कार्रवाई से जिले में सक्रिय संगठित अपराधियों पर प्रभावी अंकुश लगेगा तथा आम जनता में सुरक्षा की भावना और मजबूत होगी। पुलिस अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि अपराध और अपराधियों के खिलाफ चलाया जा रहा अभियान आगे भी पूरी सख्ती के साथ जारी रहेगा। जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने और संगठित अपराध का नेटवर्क ध्वस्त करने के लिए ऐसे तत्वों पर लगातार कार्रवाई की जाएगी।

खेल मैदान बना चारागाह, ग्रामीणों में रोष

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोला बाजार /गोरखपुर। कभी खिलाड़ियों की प्रतिभा को नई उड़ान देने वाला गोला ब्लॉक के ग्राम सभा बरईपुरा उर्फ पड़ौली का आदर्श क्रीड़ा स्थल आज बदहाली की मार झेल रहा है। वर्ष 2020 में मनरेगा और राज्य वित्त आयोग की लगभग 8.50 लाख रुपये की लागत से तैयार किया गया यह खेल मैदान अब अपनी पहचान खो चुका है। कभी फुटबॉल, क्रिकेट और विभिन्न स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं की गूंज से गुलजार रहने वाला मैदान आज गड्ढों, जलभराव, घास-फूस और कूड़े-करकट से पट गया है। हालात ऐसे हैं कि खिलाड़ी यहां अभ्यास करने से कतराने लगे हैं। करीब दो एकड़ क्षेत्र में फैला यह मैदान गोला ब्लॉक मुख्यालय और आनंद विद्यापीठ इंटर कॉलेज के निकट स्थित है। जून 2020 में इसके उद्घाटन के दौरान तत्कालीन दर्जा प्राप्त राज्य खेल मंत्री विभ्राट चन्द कौशिक ने इसे ग्रामीण खेल प्रतिभाओं के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया था। उन्होंने ग्राम प्रधानों से नवयुवक मंगल दल का गठन कर युवाओं को खेलों से जोड़ने का आह्वान भी किया था। तत्कालीन ग्राम प्रधान संपूर्णानंद पांडेय ने बताया कि वर्ष 2019-20 में राज्य वित्त एवं मनरेगा की धनराशि से मैदान का समतलीकरण कराया गया था। इसके साथ ही लोहे की ग्रिल, तारबाड़, प्रवेश द्वार और ओपन जिम जैसी सुविधाएं भी विकसित की गई थीं। लेकिन समय के साथ रखरखाव के अभाव में पूरा मैदान उजड़ता चला गया।

वर्तमान में मैदान की देखरेख ग्राम पंचायत प्रशासन के जिम्मे है, लेकिन लापरवाही के चलते स्थिति लगातार बिगड़ती गई। प्रतिदिन अभ्यास करने वाले राहुल, गोलू, आदर्श बाबा, नितेश, मल्लू, शुभम, आशुतोष राय, आशीष, हरिकेश और अंकित समेत पुलिस भर्ती की तैयारी कर रहे युवाओं ने बताया कि मैदान में जगह-जगह गड्ढे, जलभराव और झाड़ियां होने से दौड़ और अभ्यास करना जोखिम भरा हो गया है। कई बार खिलाड़ी चोटिल भी हो चुके हैं। मैदान परिसर में स्थित वंशक्ति माता मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं को भी आवागमन में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों और खेल प्रेमियों ने प्रशासन से मैदान का तत्काल सुंदरीकरण,

नियमित रखरखाव तथा इसे मिनी स्टेडियम के रूप में विकसित करने की मांग की है। उनका कहना है कि यदि समय रहते इस मैदान को नहीं संवारा गया तो सरकार की लाखों रुपये की लागत और ग्रामीण युवाओं के सपने दोनों मिट्टी में मिल जाएंगे। इस संबंध में खंड विकास अधिकारी (बीडीओ) गोला दिवाकर सिंह ने बताया कि खेल मैदान की स्थिति सुधारने के निर्देश दे दिए गए हैं। जल्द ही साफ-सफाई, समतलीकरण और आवश्यक मरम्मत कराकर खिलाड़ियों के लिए सुरक्षित एवं बेहतर खेल वातावरण उपलब्ध कराया जाएगा। अब ग्रामीणों की निगाहें प्रशासन के इन आश्वासनों के धरातल पर उतरने का इंतजार कर रही हैं।

गोरखपुर ख़जनी के खानीपुर अंडरपास पर बनेगी मजबूत सीसी सड़क, 3 अगस्त तक ट्रैफिक डायवर्ट

10 दिन चलेगा निर्माण कार्य, बारिश में जर्जर होने की समस्या से मिलेगी स्थायी राहत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ख़जनी/गोरखपुर। नौसढ़- खजनी-सिकरीगंज मार्ग पर गीडा थाना क्षेत्र के ग्राम खानीपुर स्थित अंडरपास के पुनर्निर्माण एवं सीसी रोड निर्माण कार्य के चलते 25 जुलाई से 3 अगस्त 2026 तक इस मार्ग पर यातायात डायवर्ट रहेगा। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने निर्माण कार्य को सुरक्षित एवं समयबद्ध ढंग से पूरा करने के लिए यह व्यवस्था लागू की है। पीडब्ल्यूडी के अनुसार, खानीपुर अंडरपास वर्षा ऋतु और भारी वाहनों के लगातार आवागमन के कारण अक्सर क्षतिग्रस्त हो जाता था। सड़क खराब होने से वाहन चालकों को आवागमन में दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। अब अंडरपास पर सीसी रोड का निर्माण कराया जा रहा है, जिससे यह मार्ग हर मौसम में सुरक्षित, मजबूत और सुगम बना रहेगा।

निर्माण कार्य अधिशासी अभियंता,

गोरखपुर वृत्त, लोक निर्माण विभाग के निर्देशन में कार्यकारी संस्था द्वारा कराया जा रहा है। इस दौरान जैतपुर से नौसढ़ के बीच वाहनों का आवागमन डायवर्ट रहेगा, ताकि निर्माण कार्य बिना किसी बाधा के पूरा किया जा सके। प्रशासन ने वाहन चालकों से निर्धारित डायवर्जन मार्ग का पालन करने, यातायात नियमों का अनुपालन करने तथा यात्रा से पहले वैकल्पिक मार्ग का चयन करने की अपील की है। अधिकारियों का कहना है कि निर्माण कार्य पूरा होने के बाद इस मार्ग पर जलभराव और सड़क क्षतिग्रस्त होने की समस्या काफी हद तक समाप्त हो जाएगी तथा क्षेत्र के लोगों को बेहतर और सुरक्षित आवागमन की सुविधा मिलेगी।

प्राचीन शिव मंदिर मार्ग पर जलजमाव से ग्रामीण परेशान, श्रावण से पहले मरम्मत की मांग

भदोही। अभोली ब्लॉक के मतेथू गांव में सरोज बस्ती के पास स्थित प्राचीन शिव मंदिर को जाने वाले मार्ग पर जलजमाव और कीचड़ से लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सड़क पर दलदल जैसी स्थिति बनने से पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। ग्रामीणों ने श्रावण मास शुरू होने से पहले सड़क की मरम्मत और जलनिकासी की व्यवस्था कराने की मांग की है। ग्रामीणों का कहना है कि जलनिकासी न होने से सड़क पर लंबे समय से पानी जमा है, जिससे पूरा रास्ता दलदल में तब्दील हो गया है। इसी मार्ग से स्कूली बच्चे, महिलाएं, बुजुर्ग और किसान रोजाना आवागमन करते हैं। साथ ही ब्राह्मण बस्ती, हरीपट्टी, कनकपुर और मेढ़ी सहित आसपास के गांवों के श्रद्धालु भी इसी रास्ते से करीब 500 मीटर दूर स्थित प्राचीन शिव मंदिर में जलाभिषेक और दर्शन-पूजन के लिए पहुंचते हैं। ग्रामीण निशांत पाठक, अभिषेक पांडेय, पंकज पांडेय, सर्वेश शुक्ला, वैभव पाठक और सचिन मिश्रा समेत अन्य लोगों ने जिलाधिकारी से श्रावण मास शुरू होने से पहले सड़क की मरम्मत कराने की मांग की है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो ग्रामीण आंदोलन करने को बाध्य होंगे।

बंदरों के आतंक से ग्रामीण परेशान, स्कूल जाने से डर रहे मासूम

फॉरेस्टर ने कहा कि विभाग स्थिति को लेकर गंभीर है और नई रणनीति के तहत जल्द ही इंतजाम के साथ बंदरों को पकड़कर घने जंगलों में छोड़ा जाएगा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

रतनपुर/महराजगंज। परसामलिक थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत सेखुआनी चौराहे पर इन दिनों उत्पाती बंदरों के तांडव से स्थानीय ग्रामीणों और व्यापारियों का जीना मुहाल हो गया है। ऐसे में बंदरों के कई आक्रामक झुंड सुबह से ही सेखुआनी चौराहे पर डेरा डाल ले रहे हैं और मौका पाते ही दुकानों व घरों के भीतर दाखिल होकर राशन तथा अन्य सामग्रियों को पूरी तरह से तहस-नहस कर नुकसान पहुंचा रहे हैं। जिसके कारण लोगों को दिन-भर लाठी-डंडे लेकर अपने घर और व्यापार की रखवाली करनी पड़ रही है। बंदरों के इस खौफ से ग्रामीण अपने घरों पर साग-सब्जी उगाना तक बंद कर दिए हैं, क्योंकि ये उत्पाती बंदर न सिर्फ फसलों को उजाड़ रहे हैं बल्कि घरों की दीवारों पर लगी बिजली की वायरिंग के तार और पेयजल आपूर्ति के लिए लगे प्लास्टिक के पाइपों को भी पूरी तरह तोड़कर बर्बाद कर दे रहे हैं, जिससे ग्रामीण इस झुलसती गर्मी और उमस के बीच रात के समय अपनी छतों पर सोने की हिम्मत तक नहीं जुटा पा रहे हैं। इसके अलावा चौराहे से सटे कंपोजिट विद्यालय में उत्पाती बंदरों ने स्कूल परिसर और कक्षाओं के भीतर घुसकर

मासूम बच्चों को धक्का मारकर भी चोटिल कर दिया है। बंदरों के खौफ के कारण मासूम बच्चे स्कूल जाने से कतरा रहे हैं। ग्रामीण संजय, राजन विश्वकर्मा, मनोज कुमार, हजरत, प्रेमचंद, राजेश, कन्हैया लाल और दिलीप समेत दर्जनों ग्रामीणों ने आक्रोश जताते हुए बताया कि उन्होंने इस समस्या से निजात पाने के लिए वन विभाग से कई बार बंदरों को पकड़वाने की गुहार लगाई, लेकिन विभाग लगातार मूकदर्शक बना रहा। वहीं इससे नाराज ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से चेतावनी भरे लहजे में मांग की है कि जल्द से जल्द विशेषज्ञ टीम बुलाकर इन बंदरों को पकड़वाकर घने जंगलों में छुड़वाया जाए, अन्यथा ग्रामीण आंदोलन के लिए बाध्य होंगे।

इस संबंध में उत्तरी चौक रेंज के घोड़हवा बीट के फॉरेस्टर जितेन्द्र कुमार गौड़ ने कहा कि वन विभाग बंदरों को पकड़ने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है, लेकिन अत्यधिक चालाकी के कारण उन्हें काबू करने में कठिनाई आ रही है। विभाग स्थिति को लेकर गंभीर है और नई रणनीति के तहत जल्द ही मुकम्मल इंतजाम के साथ बंदरों को पकड़कर घने जंगलों में छोड़ा जाएगा।

हाईवे किनारे खड़े 378 वाहनों पर कार्यवाही

कानपुर पुलिस उपायुक्त यातायात रवीन्द्र कुमार के निर्देशन में सड़क सुरक्षा एवं सुगम यातायात व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से कानपुर नगर के प्रमुख हाई-वे पर विशेषक्षअभियान चलाया गया। इस दौरान हाइवे के किनारे खड़े वाहनों पर कार्यवाही की गई। अभियान के दौरान संबंधित जोन के यातायात निरीक्षकों एवं सीसी टीम प्रभारियों द्वारा हाईवे के किनारे अनधिकृत रूप से खड़े वाहनों को हटवाया गया तथा वाहन चालकों को सड़क किनारे वाहन खड़ा न करने, निर्धारित पार्किंग स्थलों का ही उपयोग करने, वाहन खराबी की स्थिति में आवश्यक सुरक्षा संकेतक (रिफ्लेक्टर, ट्रायंगल, पार्किंग लाइट आदि) लगाने तथा यातायात नियमों का कड़ाई से पालन करने के संबंध में जागरूक एवं निर्देशित किया गया। इस दौरान यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले 378 वाहनों के विरुद्ध मोटर वाहन अधिनियम (MV Act) के अंतर्गत नियमानुसार चालान की कार्रवाई की गई । यातायात पुलिस कानपुर नगर के द्वारा आमजन व वाहन चालकों से अपील की है कि यातायात नियमों का पालन करें, हाईवे अथवा मुख्य मार्गों के किनारे अनावश्यक रूप से वाहन खड़ा न करें तथा सुगम, सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित यातायात व्यवस्था बनाए रखने में यातायात पुलिस का सहयोग करें।

19 जुलाई की घटना, 20 जुलाई की दुर्घटना की खबर और बाद में हत्या का मुकदमा- सच क्या है?

दो दावे, कई सवाल; पोस्टमार्टम रिपोर्ट और पुलिस जांच पर टिकी पूरे मामले की सच्चाई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोण्डा। खरगूपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत परसोरा महेशपुर में एक युवक की मौत को लेकर मामला अब चर्चा का विषय बना हुआ है। एक ओर 19 जुलाई 2026 को हुई घटना के बाद 20 जुलाई 2026 को दैनिक अमर उजाला में स्कूटी फिसलने से गंभीर रूप से घायल होने का समाचार प्रकाशित हुआ था, वहीं बाद में मृतक की पत्नी ने जमीनी विवाद को लेकर मारपीट कर हत्या किए जाने का आरोप लगाते हुए पुलिस में मुकदमा दर्ज कराया। दोनों पक्षों के अलग-अलग दावों के बीच पूरे मामले की सच्चाई अब पुलिस विवेचना और पोस्टमार्टम रिपोर्ट पर निर्भर है।

मीडिया में 20 जुलाई को प्रकाशित समाचार के अनुसार, माधव उर्फ मनोज 40 वर्ष निवासी परसोरा महेशपुर भवानीपुर उपाध्याय-महाराजगंज मार्ग पर मथेडीह गांव के पास स्कूटी फिसलने से गंभीर रूप से घायल हो गए थे। समाचार में यह भी उल्लेख था कि हेलमेट न पहनने के कारण उनके सिर में गंभीर चोट आई और उन्हें उपचार के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं, बाद में प्रकाशित घटनाक्रम और पुलिस में दर्ज कराए गए प्रकरण में मृतक मनोज शुक्ला की पत्नी सुमित्रा देवी ने आरोप लगाया कि रविवार को उनके पति माधव उर्फ मनोज शुक्ला भवानीपुर उपाध्याय जा रहे थे। आरोप है कि मथेडीह गांव के पास गांव के ही दिलीप तिवारी, राजेश तिवारी, संदीप तिवारी तथा तीन अज्ञात लोगों ने उनके पति पर हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया।परिजनों के अनुसार, पहले उन्हें बाबू ईश्वर शरण जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया, जहां से हालत गंभीर होने पर रेफर कर दिया गया। इसके बाद जिला मुख्यालय स्थित एक नर्सिंग होम और फिर लखनऊ के हिंद हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया, जहां

गुरुवार दोपहर इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

मृतक का शव गुरुवार रात लगभग 10 बजे गांव पहुंचा तो परिजनों ने हत्या का मुकदमा दर्ज करने की मांग को लेकर अंतिम संस्कार से इनकार कर दिया। करीब 16 घंटे तक शव घर के बाहर रखकर विरोध प्रदर्शन किया गया। शुक्रवार दोपहर लगभग 3 बजे तक विरोध जारी रहा। बाद में पुलिस द्वारा तीन नामजद और तीन अज्ञात आरोपियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किए जाने के बाद परिजनों ने अंतिम संस्कार किया।दूसरी ओर, विपक्षी पक्ष का कहना है कि लगभग 3 हफ्ता पहले दोनों पक्षों के बीच मामूली विवाद और मारपीट हुई थी, जिसकी सूचना थाने तक पहुंची थी। उनका आरोप है कि उसी पुराने विवाद के कारण अब उन्हें झूठा फंसाया जा रहा है।इस पूरे घटनाक्रम के बीच सबसे बड़ा सवाल यह उठ रहा है कि यदि 20 जुलाई को प्रकाशित समाचार में घटना को स्कूटी फिसलने से हुई दुर्घटना बताया गया था, तो बाद में हत्या का मुकदमा किन साक्ष्यों और परिस्थितियों के आधार पर दर्ज कराया गया? वहीं दूसरी ओर, मृतक के परिजनों द्वारा लगाए गए हत्या और मारपीट के आरोप भी गंभीर हैं, जिनकी निष्पक्ष जांच आवश्यक है।इस संबंध में थाना प्रभारी गोविंद कुमार ने बताया कि मामले की गंभीरता, परिजनों के आरोपों और अंतिम संस्कार रोककर किए गए विरोध को देखते हुए मुकदमा दर्ज किया गया है। उन्होंने कहा कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट, चिकित्सीय अभिलेख, प्रत्यक्षदर्शियों के बयान, इलेक्ट्रॉनिक एवं अन्य उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर निष्पक्ष विवेचना की जाएगी। बिना पर्याप्त साक्ष्य किसी निर्दोष के विरुद्ध कार्रवाई नहीं होगी और यदि आरोप सिद्ध होते हैं तो दोषियों के खिलाफ विधिक कार्रवाई की जाएगी।

जांच पूरी होने के बाद ही सामने आएगी सच्चाई

फिलहाल इस मामले में दो अलग-अलग दावे सामने हैं। एक पक्ष घटना को सड़क दुर्घटना बता रहा है, जबकि दूसरा पक्ष जमीनी विवाद में मारपीट के बाद हुई हत्या का आरोप लगा रहा है। ऐसे में किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट, चिकित्सीय साक्ष्य और पुलिस की निष्पक्ष विवेचना ही यह तय करेगी कि वास्तविकता क्या है।

संक्षिप्त खबरें

ट्रेन की चपेट में आई 15 वर्षीय लड़की की मौत

बरेली/ रामगंगा रेलवे पुल पर एक दर्दनाक हादसा हो गया। ट्रेन की चपेट में आने से 15 वर्षीय लड़की की मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार हादसा सुबह करीब 5:00 बजे हुआ। ट्रेन की टक्कर से लड़की की मौत के बाद जब दूसरी ट्रेन रामगंगा स्टेशन पर पहुंची तो लोको पायलट ने स्टेशन मास्टर को सूचना दी। इसके बाद रामगंगा स्टेशन ने पुलिस को जानकारी दी। सूचना मिलते ही जीआरपी पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने रेलवे ट्रैक से शव को हटवाया और पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए बरेली भेज दिया। जीआरपी ने बताया कि मृतका की उम्र करीब 15 साल है। हादसे के समय वह अकेली थी। अभी तक उसकी शिनाख्त नहीं हो सकी है। लड़की के पास से कोई पहचान पत्र या सामान भी बरामद नहीं हुआ है। पुलिस आसपास के थानों और गांवों में शव की शिनाख्त के लिए सूचना भेज रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों की पुष्टि हो सकेगी। लड़की की आधी बॉडी गंगा में गिर गई उसके चेहरे का कुछ पता चल पाता उसका आधा शव गंगा में गिर गया।

क्योलडिया थाने में 'थाना दिवस' रहा सूना, नहीं पहुंचा कोई फरियादी

बरेली/क्योलडिया। शासन के निर्देशानुसार शनिवार को क्योलडिया थाने में 'थाना दिवस' का आयोजन किया गया। इस दौरान जनता की समस्याओं को सुनने और उनके त्वरित निस्तारण के लिए पुलिस और राजस्व विभाग के अधिकारी मुस्तैद दिखे। मौके पर थाना प्रभारी वेद सिंह, उप निरीक्षक मुकेश कुमार, उप निरीक्षक राजेंद्र सिंह और राजस्व विभाग के लेखपाल सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।अधिकारियों की पूरी टीम समय पर उपस्थित रही, लेकिन इस बार थाना दिवस में एक भी फरियादी अपनी शिकायत लेकर नहीं पहुंचा। इसके चलते अधिकारियों को बिना किसी शिकायत के ही वापस लौटना पड़ा। थाना प्रभारी वेद सिंह ने बताया कि क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखने और जनसमस्याओं के निस्तारण के लिए पुलिस हमेशा तत्पर है।

चोर ले गए भैंस और बछड़ा, पुलिस से की शिकायत

कोंच(जालौन)- कोतवाली क्षेत्र के ग्राम लौना में चोर पशुबाड़े में धावा बोलकर भैंस और बछड़ा चोरी कर ले गए। पीड़ित व्यक्ति ने पुलिस को तहरीर देकर मुकदमा दर्ज कर चोरी गए पशुओं की बरामदगी की मांग की है। गांव निवासी राहुल पुत्र अमर सिंह ने पुलिस को दी अपनी तहरीर में बताया कि शुक्रवार की रात करीब 12 बजे अपने पशुबाड़े में भैंस और बछड़े को बांधकर वह घर आ गया था, शनिवार की रात 3 से 4 बजे के बीच अज्ञात चोर पशुबाड़े में से भैंस और बछड़ा चोरी कर ले गए। सुबह जानकारी होने पर उसने आसपास पशुओं की काफी तलाश की लेकिन पशुओं का कहीं कोई सुराग नहीं मिल सका। पीड़ित ने पुलिस से मुकदमा दर्ज कर चोरी गए पशुओं की बरामदगी की मांग की है। फिलहाल पुलिस घटना की जांच में जुटी है।

हाईवे किनारे ज्वेलर्स की दुकान पर धावा

लॉकर तोड़ 8 किलो चांदी, सोना और 98 हजार नकद ले उड़े चोर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

तिलहर, शाहजहांपुर। तिलहर में शुक्रवार रात चोरों ने पुलिस गश्त को चुनौती देते हुए हाईवे किनारे स्थित एक ज्वेलर्स की दुकान को निशाना बना डाला। बदमाश दुकान का शटर उचकाकर अंदर घुसे और लॉकर तोड़कर करीब आठ किलो चांदी, 20 ग्राम सोने के आभूषण तथा 98 हजार रुपये की नकदी समेटकर फरार हो गए। शनिवार सुबह वारदात की जानकारी मिलते ही इलाके में सनसनी फैल गई। पुलिस अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है। कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला मतानी चौक निवासी कृष्णा वर्मा ने बताया कि कपसेड़ा में स्टेट बैंक के सामने हाईवे किनारे उनकी सांवरिया सेठ ज्वेलर्स के नाम से दुकान है। शुक्रवार रात वह रोज की तरह दुकान बंद कर घर चले गए थे। शनिवार सुबह स्थानीय लोगों ने फोन कर दुकान में चोरी होने की सूचना दी। मौके पर पहुंचने पर शटर का ताला टूटा मिला और शटर ऊपर उठाकर अंदर प्रवेश किए जाने के निशान मिले। पीड़ित के मुताबिक चोर दुकान के अंदर रखा लॉकर भी तोड़ ले गए। उसमें रखी करीब आठ किलो चांदी, 20 ग्राम सोने के आभूषण और 98 हजार रुपये की नकदी गायब मिली। चोरी से व्यापारी को लाखों रुपये का नुकसान हुआ है। मुख्य हाईवे पर स्थित दुकान में हुई इस बड़ी वारदात के बाद व्यापारियों में रोष और दहशत दोनों हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि व्यस्त मार्ग पर स्थित प्रतिष्ठान भी सुरक्षित नहीं हैं, जिससे रात की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े हो रहे हैं। सूचना मिलते ही सीओ विदुष सक्सेना पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचीं। फील्ड यूनिट ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए, जबकि आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है। पुलिस ने सर्विलांस, एसओजी और फील्ड यूनिट की संयुक्त टीमों को सक्रिय कर आरोपितों की तलाश शुरू कर दी है। सीओ विदुष सक्सेना ने बताया कि घटना की गंभीरता से जांच की जा रही है। सीसीटीवी फुटेज और अन्य तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर बदमाशों की पहचान का प्रयास किया जा रहा है। जल्द ही घटना का खुलासा कर आरोपितों को गिरफ्तार किया जाएगा।

गैर कानूनी तरीके से कराया गया गर्भपात

उचौलिया खीरी- गर्भपात जैसी गैर कानूनी घटना को अंजाम दिए जाने का मामला डिप्टी सी एम के सामने पहुंचने के बाद विभागीय जिम्मेदारों की नींद उड़ती नजर आ रहीं हैं बताते चलें कि गर्भपात और चिकित्सा लापरवाही के मामले में एक महीने बाद भी 'संदीप के अस्पताल' पर कार्रवाई न होना बेहद गंभीर विषय है।

जनता में आक्रोश है और अधिकारियों की मिलीभगत की चर्चा आम है। त्वरित, पारदर्शी जांच और जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही तय करना प्रशासन के लिए बेहद जरूरी है। लखीमपुर खीरी और इसके आसपास के क्षेत्रों (जैसे मितौली, महेवागंज) में निजी अस्पतालों की लापरवाही के मामले पहले भी सामने आते रहे हैं? इससे पहले भी नवजात की मौत या इलाज में कोताही जैसे मामलों पर डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने सख्त संज्ञान लेते हुए अस्पतालों को सील करने जैसी बड़ी कार्रवाई की थी अस्पतालों में शासन की मंशा के विरुद्ध या अवैध रूप से गर्भपात जैसे संवेदनशील मामलों पर स्वास्थ्य विभाग, उत्तर प्रदेश को तुरंत संज्ञान लेना चाहिए, ताकि लोगों का प्रशासन पर भरोसा बना रहे।

बंथरा पुल पर जानलेवा टक्कर

इलाज के दौरान युवक ने तोड़ा दम, अज्ञात ट्रक चालक पर मुकदमा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

तिलहर, शाहजहांपुर। बंथरा पुल के पास सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल युवक की उपचार के दौरान मौत हो जाने के बाद पुलिस ने अज्ञात ट्रक चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस हादसे के जिम्मेदार वाहन और उसके चालक की तलाश में जुटी है। थाना सिंगोली क्षेत्र के गांव पैगापुर निवासी मिथलेश कुमारी ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उनका 22 वर्षीय पुत्र सत्यम शुक्ला शुक्रवार दोपहर रोहेलखंड मेडिकल कॉलेज से दवा लेकर बाइक से अपने घर लौट रहा था। बंथरा पुल के समीप पीछे से आए तेज रफ्तार ट्रक ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि सत्यम गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर पड़ा। राहगीरों की सूचना पर पहुंचे परिजन उसे तत्काल उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज ले गए, जहां डॉक्टरों के प्रयास के बावजूद उसकी जान नहीं बच सकी। युवक की मौत की खबर मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया और गांव में शोक की लहर दौड़ गई। मृतक की मां की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात ट्रक चालक के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। हादसे का खुलासा करने के लिए पुलिस घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है। साथ ही ट्रक की पहचान के लिए अन्य तकनीकी और भौतिक साक्ष्य भी जुटाए जा रहे हैं। सीओ विदुष सक्सेना ने बताया कि मृतक की मां की तहरीर के आधार पर अज्ञात ट्रक चालक के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। मामले की जांच की जा रही है। साक्ष्यों के आधार पर वाहन और चालक की पहचान कर आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी।

समस्त थानों को चलाया गया सघन चेकिंग अभियान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। 24/25 जुलाई की रात को पुलिस आयुक्त रघुबीर लाल के निर्देशन एवं अपर पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था) डॉ. विपिन ताडा के मार्गदर्शन में, कमिश्नरेट कानपुर नगर के सेंट्रल जोन के समस्त थानों में सघन वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान पुलिस उपायुक्त (सेंट्रल) अतुल कुमार श्रीवास्तव तथा अपर पुलिस उपायुक्त (सेंट्रल) डॉ. अर्चना सिंह ने स्वयं थाना नवाबगंज, कोहना, कर्नलगंज, अनवरगंज एवं बेकनगंज क्षेत्रों में उपस्थित रहकर चेकिंग अभियान की कमान संभाली। अभियान के द्वारा संदिग्ध व्यक्तियों एवं वाहनों की रोक-टोक कर गहन जांच की गई। दोपहिया एवं चारपहिया वाहनों के कागजात व आवश्यक अभिलेखों का सत्यापन किया गया। बिना हेलमेट, बिना सीट बेल्ट एवं संदिग्ध परिस्थितियों में चलाए जा रहे वाहनों की विशेष चेकिंग की गई। यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले चालकों को चेतावनी देते हुए नियमानुसार आवश्यक वैधानिक कार्यवाही की गई। वाहन चालकों को यातायात नियमों का पालन करने, सुरक्षित वाहन चलाने एवं कानून-व्यवस्था बनाए रखने हेतु जागरूक किया गया। इस विशेष अभियान का मुख्य उद्देश्य अपराधों की रोकथाम, असामाजिक एवं आपराधिक तत्वों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करना, यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना तथा आमजन में सुरक्षा एवं विश्वास की भावना को और अधिक मजबूत करना रहा।

सड़क जर्जर, पुलिया खस्ताहाल चार पहिया वाहनों की आवाजाही ठप

निघासन, लखीमपुर खीरी। पलिया-निघासन मार्ग पर स्थित राधा स्वामी सत्संग ब्यास दुबहा से होकर शिवलाल पुरवा जाने वाला मुख्य रास्ता बदहाल स्थिति में पहुंच गया है। इस मार्ग से रोजाना हजारों ग्रामीणों का आवागमन होता है, लेकिन पुलिया दोनों ओर से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुकी है। स्थानीय लोगों के अनुसार पुलिया की हालत इतनी खराब है कि अब चार पहिया वाहनों का निकलना पूरी तरह बंद हो गया है। मजबूरी में लोग जोखिम उठाकर दोपहिया और पैदल सफर करने को विवश हैं। बरसात के मौसम में स्थिति और गंभीर हो गई है, जिससे कभी भी बड़ा हादसा होने की आशंका बनी हुई है। यह मामला मजरा लुधौरी, निघासन तहसील का है, जहां ग्रामीणों ने कई बार संबंधित अधिकारियों को अवगत कराया, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। प्रशासन की अनदेखी से लोगों में भारी रोष व्याप्त है। ग्रामीणों ने जल्द से जल्द पुलिया की मरम्मत और सड़क सुधार की मांग करते हुए चेतावनी दी है कि अगर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो वे आंदोलन के लिए मजबूर होंगे।

अवैध तमंचे और कारतूस के साथ शातिर अपराधी गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बरेली/ क्योलडिया पुलिस ने गस्त के दौरान एक पकड़ा अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत क्योलड़िया थाना पुलिस को एक बड़ी सफलता हाथ लगी है। पुलिस टीम ने मुखबिर की सटीक सूचना पर घेराबंदी करके एक शातिर बदमाश को अवैध हथियार और कारतूस के साथ रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। पकड़ा गया आरोपी इलाके का हिस्ट्रीशीटर है और पूर्व में गोकशी, लूट व गैंगस्टर एक्ट के तहत जेल जा चुका है। मुखबिर की सूचना पर हुई कार्रवाईमिली जानकारी के अनुसार, उप-निरीक्षक (उ0नि0) सौरभ कुमार पुलिस टीम (कांस्टेबल सचिन और सुमित यादव) के साथ क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखने और संदिग्ध वाहनों व व्यक्तियों की चेकिंग के लिए गश्त पर थे। इसी दौरान पुलिस टीम जब प्रहलादपुर रोड पर पहुँची, तो एक मुखबिर ने खास सूचना दी कि एक संदिग्ध व्यक्ति अवैध हथियार के साथ वैवाही वाले मोड़ पर किसी वारदात को अंजाम देने या भागने की फिराक में खड़ा है।पेड़ की आड़ से भागने का प्रयास, घेराबंदी कर दबोचासूचना पर विश्वास करते हुए पुलिस टीम तुरंत मौके पर पहुँची। पुलिस को देखकर संदिग्ध व्यक्ति ने पेड़ की आड़ लेकर भागने का प्रयास किया, लेकिन मुस्तैद पुलिसकर्मियों ने रात के करीब 11:10 बजे घेराबंदी कर उसे मौके पर ही दबोच लिया।तलाशी में मिला अवैध तमंचा और कारतूसपकड़े गए व्यक्ति की पहचान कय्यूम उर्फ झब्बू (उम्र करीब 38 वर्ष), पुत्र अय्यूब, निवासी ग्राम प्रहलादपुर, थाना क्योलड़िया, जिला बरेली के रूप में हुई है। जब पुलिस ने उसकी जामा तलाशी ली, तो उसकी कमर से एक 12 बोर का चालू हालत का अवैध तमंचा बरामद हुआ। इसके साथ ही उसकी लोअर की दाहिनी जेब से 12 बोर के दो जिंदा कारतूस भी बरामद किए गए।पूछताछ में कबूला जुर्म, गिड़गिड़ाने लगा आरोपीपूछताछ के दौरान आरोपी कय्यूम ने पुलिस के सामने अपना जुर्म कबूल कर लिया।

उसने बताया कि उसने यह तमंचा और कारतूस किसी अनजान व्यक्ति से अपनी सुरक्षा के लिए खरीदे थे। पुलिस के सामने वह हाथ जोड़कर माफी मांगने लगा।थाने का हिस्ट्रीशीटर है आरोपी पुलिस रिकॉर्ड के मुताबिक, पकड़ा गया आरोपी कय्यूम उर्फ झब्बू थाना क्षेत्र का चिन्हित हिस्ट्रीशीटर है। वह पहले भी गोकशी, लूट और गैंगस्टर एक्ट जैसे गंभीर मामलों में पीलीभीत की कुण्डली और अन्य लुटेरों के गैंग के साथ जेल की हवा खा चुका है।

आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्जपुलिस ने बरामद तमंचे और कारतूस को सील कर अपने कब्जे में ले लिया है। आरोपी के खिलाफ थाना क्योलड़िया में धारा 3/25 आर्म्स एक्ट (Arms Act) के तहत मुकदमा दर्ज कर उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। पुलिस मामले की आगे की कानूनी कार्रवाई में जुटी है।

मुख्यमंत्री के आगमन से पूर्व एडीजी ने किया निरीक्षण

कानपुर। योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, के जनपद जालौन आगमन के दृष्टिगत अनुपम कुलश्रेष्ठ, अपर पुलिस महानिदेशक, कानपुर जोन, कानपुर द्वारा कार्यक्रम स्थल, हेलीपैड तथा अन्य संभावित स्थलों की सुरक्षा व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान ड्यूटी पर तैनात समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सुरक्षा व्यवस्था के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए तथा सुरक्षा संबंधी सभी व्यवस्थाओं को प्रभावी एवं सुव्यवस्थित ढंग से सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

कुंभी ब्लॉक के मुंडा खालसा में जलभराव और ध्वस्त रास्तों से ग्रामीण बेहाल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखीमपुर खीरी: सरकार भले ही ग्रामीण क्षेत्रों में विकास और स्वच्छता के बड़े-बड़े दावे कर रही हो, लेकिन जमीनी हकीकत इसके ठीक उलट है। जनपद के विकासखंड कुंभी के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत मुंडा खालसा (ग्राम मोहद्दीनपुर) में इन दिनों विकास कार्य पूरी तरह वेंटिलेटर पर नजर आ रहे हैं। यहाँ जल निकासी की समस्या इतनी विकराल हो चुकी है कि ग्रामीणों का जीना मुहाल हो गया है।

नाली और खड़ंजा पूरी तरह ध्वस्त

गाँव की मुख्य गलियों में जल निकासी के लिए बनी नालियां और खड़ंजा पूरी तरह से टूटकर ध्वस्त हो चुके हैं। नालियों का गंदा पानी रास्तों पर बह रहा है, जिससे पूरा मोहल्ला तालाब में तब्दील हो चुका है। गंदे पानी के ठहराव के कारण क्षेत्र में संक्रामक बीमारियों के फैलने का खतरा लगातार बढ़ रहा है। मच्छरों के प्रकोप और बदबू से स्थानीय निवासी बेहद परेशान हैं।

नौनिहालों का रास्ता बंद: प्राथमिक विद्यालय की राह हुई दुश्वार

सबसे बदतर स्थिति गाँव के प्राथमिक विद्यालय को जाने वाले रास्ते की है। स्कूल को जोड़ने वाला मुख्य मार्ग पूरी तरह से खस्ताहाल और कीचड़ से लथपथ हो चुका है। ऐसे में स्कूल जाने वाले छोटे-छोटे बच्चों और शिक्षकों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। कई बार बच्चे इस कीचड़ में फिसलकर चोटिल भी हो चुके हैं, लेकिन प्रशासन को शायद किसी बड़े हादसे का इंतजार है।

कुंभकर्णी नींद में सो रहे जिम्मेदार

स्थानीय ग्रामीणों का आरोप है कि इस गंभीर समस्या को लेकर कई बार ग्राम प्रधान से लेकर ब्लॉक के आला अधिकारियों तक गुहार लगाई जा चुकी है। लेकिन ग्रामीणों की सुध लेने वाला कोई नहीं है। आरोप है कि शिकायत के बावजूद जिम्मेदार अधिकारी और जनप्रतिनिधि कुंभकर्णी नींद सो रहे हैं और इस नरकीय स्थिति से आँखें मूंदे बैठे हैं।

ग्रामीणों ने दी आंदोलन की चेतावनी

ग्रामीणों ने तीखा आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि यदि जल्द ही नाली और खड़ंजे की मरम्मत कराकर जल निकासी की व्यवस्था दुरुस्त नहीं की गई, तो वे तहसील मुख्यालय पर प्रदर्शन करने को बाध्य होंगे। अब देखना यह है कि प्रशासन कब नींद से जागता है और मुंडा खालसा के ग्रामीणों को इस नरकीय जीवन से मुक्ति मिलती है।

सेल्समैन से हुई लूट के अभियुक्त गिरफ्तार

डबल पुलिया के पास हुई थी 17 हजार की लूट

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। थाना क्षेत्र रावतपुर में परसों रात्रि डबल पुलिया के पास एक व्यक्ति जो कि सेल्समैन का काम करते थे अमित मिश्रा के साथ लूट की घटना हुई थी। घटनाक्रम पर त्वरित कार्यवाही करते हुए पुलिस ने सीसीटीवी कैमरों की मदद लेते हुए तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया है जबकि एक अभियुक्त की तलाश जारी है। पुलिस उपायुक्त पश्चिम एस. एम. कासिम आबिदी ने बताया कि इस घटना का तत्काल संज्ञान लेते हुए थाना रावतपुर में अभियोग पंजीकृत किया गया था। अभियुक्तों की तलाश हेतु पुलिस द्वारा सीसीटीवी फुटेज एवं सर्विलांस की सहायता ली गई, जिसके आधार पर अभियुक्तों की पहचान की गई। इस मामले में तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया गया है, जबकि एक अन्य अभियुक्त की तलाश की जा रही है। उसकी भी शीघ्र गिरफ्तारी सुनिश्चित की जाएगी। पूछताछ के दौरान गिरफ्तार अभियुक्तों ने बताया कि वे नशे के आदी हैं तथा पैसों की आवश्यकता के चलते उन्होंने सेल्समैन के साथ इस घटना को अंजाम दिया। सेल्समैन के पास उस समय 17000 रुपए थे। इनके द्वारा पहले किसी अन्य जिलों में किसी घटना की जानकारी नहीं मिली है। पुलिस उपायुक्त पश्चिम ने बताया कि गिरफ्तार तीनों अभियुक्तों को माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत कर आवश्यक विधिक कार्रवाई की गई है। मामले में अग्रिम विधिक कार्रवाई प्रचलित है।

घाटमपुर में दो लोगों को सांप ने काटा, समय पर इलाज मिलने से बची जान

कानपुर ग्रामीण। घाटमपुर में सांप के काटने से दो लोगों की हालत गंभीर हो गई,, उन्हें तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र घाटमपुर लाया गया, जहां समय पर उपचार मिलने से उनकी जान बच गई,,,,पहली घटना सजेती थाना क्षेत्र के बरी महतैन, गांव में हुई, यहां 60 वर्षीय राजोले पुत्र कन्हई अपने खेत में काम कर रहे,,तभी उन्हें एक ज़हरीले सांप ने डस लिया,दूसरी घटना घाटमपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत बम्हौरा गांव में 14 वर्षीया किशोरी लली पुत्री रामनरेश भी खेत में काम करतें समय सांप के काटने का शिकार हो गई,, सांप के काटने के बाद दोनों की हालत बिगड़ने लगी,, परिजनों ने उन्हे आनन फानन में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र घाटमपुर पहुंचाया, सीएचसी के डाक्टरों ने बिना देरी किए दोनों का आपातकालीन उपचार शुरू किया,समय पर मिले सही उपचार के कारण दोनों की स्थिति में सुधार हुआ और बाद में उन्हें सुरक्षित घर भेज दिया गया,, डाक्टरों ने स्थानीय लोगों से अपील की कि बरसात के मौसम में काम करते समय विशेष सावधानी बरतनी की सलाह दी है।

आसुरी शक्तियों का नाश करने अवतरित होते हैं परमात्मा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कोंच(जालौन)- गुदरिया हनुमान मंदिर में चल रही श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ में शनिवार को परमात्मा के अवतारों की कथा सुनाते हुए कथा व्यास आचार्य पं. विष्णुकांत मिश्रा ने कहा, जब-जब पृथ्वी पर आसुरी शक्तियों का अत्याचार बढ़ता है तब-तब परमात्मा किसी न किसी रूप में अवतार धारण कर पृथ्वी का भार हरते हैं और धर्म की स्थापना करते हैं। महंत महेश दास महाराज के संयोजकत्व में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में शनिवार को शुकदेव परीक्षित संवाद को आगे बढ़ाते हुए कथा व्यास कहते हैं, भागीरथी गंगा में स्नान करने से शारीरिक मलीनता दूर होती है किंतु मानसिक मलीनता तो कृष्ण कथा ही दूर कर सकती है। कृष्ण कथा तो कहीं भी प्रकट हो सकती है लेकिन भागीरथी गंगा अन्य किसी स्थान पर प्रकट नहीं हो सकती। उन्होंने भगवान के मत्स्य अवतार, वाराह अवतार, कूर्मावतार, नरसिंह अवतार, वामन अवतार, कपिल अवतार आदि की सुंदर और रसमयी कथाएं सुनाकर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। उन्होंने कहा, पृथ्वी पर जब आसुरी शक्तियों का उपद्रव बढ़ गया और लोग दुखी हो गए तो पृथ्वी से यह सब सहा नहीं गया। उसने ब्रह्माजी की शरण ली, ब्रह्मादि देव भगवान नारायण के पास आए और पुरुष सूक्त से प्रार्थना करने लगे, नाथ अब तो कृपा कीजिए और अवतार लीजिए। भगवान ने ब्रहमाजी से कहा, वह वसुदेव और देवकी के यहां प्रकट होंगे और सेवा के लिए सब देव भी अवतार लेना। ब्रह्मा ने आकाशवाणी सुनी और सभी देवो को आश्वस्त किया। सभी देवता गोकुल में प्रकट हो गए तब भगवान ने माया का आश्रय लिया क्योंकि माया का आश्रय लिए बगैर भगवान अवतार नहीं ले सकते। योग माया ने देवकी के सातवें गर्भ को कर्षण द्वारा रोहिणी के उदर में स्थापित कर दिया और शेषावतार बलभद्र महाराज भाद्रपद शुक्ल षष्ठी के दिन प्रकट हुए। देवकी ने आठवां गर्भ धारण किया और भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी की मध्यरात्रि में कमल नयन चतुर्भुज नारायण भगवान बालक का रूप लेकर वसुदेव-देवकी के समक्ष प्रकट हो गए। जैसे ही कृष्ण प्राकट्य हुआ, गोले दागे गए और महिलाओं ने बधाइयां गाईं। कथा विश्राम पर परीक्षित ऊषा-राधेकृष्ण श्रीवास्तव ने भागवत जी की आरती उतारी और फिर प्रसाद वितरित किया गया।

जालौन को 1274 करोड़ की 374 विकास परियोजनाओं की सौगात

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

उरई (जालौन)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को स्पोर्ट्स स्टेडियम, उरई में आयोजित जनसभा में जनपद जालौन को 1,273.96 करोड़ रुपये की लागत वाली 374 विकास परियोजनाओं की सौगात दी। इनमें 216 परियोजनाओं का शिलान्यास तथा 158 परियोजनाओं का लोकार्पण शामिल है। उन्होंने कहा कि जालौन अब बीहड़ की नहीं, बल्कि विकास, विरासत और नए अवसरों की पहचान बन चुका है। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम से पहले विभिन्न विभागों द्वारा लगाई गई विकासपरक प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी), प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना, प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना, मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, आयुष्मान भारत योजना तथा कृषि एवं पशुपालन विभाग सहित विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र, आवास की चाबी, ऋण स्वीकृति पत्र, सोलर रूफटॉप स्वीकृति, कृषि यंत्र, आयुष्मान कार्ड और अन्य सहायता सामग्री वितरित की। साथ ही उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत स्वयं सहायता समूहों के खातों में 13.14 करोड़ रुपये की धनराशि हस्तांतरित की। जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने जालौन की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का उल्लेख करते हुए कहा कि यह भूमि वीरता, राष्ट्रभक्ति और स्वाभिमान की प्रतीक रही है। उन्होंने कहा कि कालपी के हस्तनिर्मित कागज को भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग मिलने के बाद उसकी पहचान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बनी है। उन्होंने कहा कि बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे, झांसी लिंक एक्सप्रेस-वे, ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर, औद्योगिक एवं लॉजिस्टिक कॉरिडोर और सौर ऊर्जा परियोजनाएं पूरे क्षेत्र के विकास को नई गति दे रही हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि जालौन में सड़क, पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा, सिंचाई, विद्युत, नगर विकास और पुलिस विभाग से जुड़ी अनेक परियोजनाएं तेजी से आगे बढ़ रही हैं। मेडिकल कॉलेज में 50 शैय्या क्रिटिकल केयर यूनिट, ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर, उरई-इटौरा मार्ग का चौड़ीकरण, कालपी पेयजल योजना, सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट और अन्य विकास कार्य जिले के बुनियादी ढांचे को मजबूत करेंगे। कानून-व्यवस्था पर बोलते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार माफिया, संगठित अपराध और नकल माफिया के खिलाफ सख्त कार्रवाई कर रही है। उन्होंने कहा कि नीट पेपर लीक मामले में दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई जारी है और किसी भी आरोपी को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार की प्राथमिकता पारदर्शी व्यवस्था, बेहतर कानून-व्यवस्था और युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराना है। मुख्यमंत्री ने विश्वास जताया कि विकास परियोजनाओं के पूरा होने से जालौन में निवेश, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं का विस्तार होगा तथा जनपद आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश और विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देगा। कार्यक्रम में प्रदेश सरकार के मंत्री, जनप्रतिनिधि तथा वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे।

इस्तीफ़ा नहीं, इंक़लाब है! - अमिताभ

सपा विधायक अमिताभ बाजपेई ने किया था सत्याग्रह

कानपुर। दिल्ली के जंतर-मंतर पर लगभग एक माह से चल रहे छात्रों के धरने के बीच शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे पर सपा विधायक अमिताभ बाजपेई ने खुशी जाहिर की है। अमिताभ बाजपेई ने कहा कि ये इस्तीफा नहीं इंकलाब है। शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे के बाद इंद्रदेव की बरसती कृपा के साथ, फूलबाग में गांधी जी की प्रतिमा पर सपा विधायक अमिताभ बाजपेई ने माल्यार्पण किया और मिठाई बाँटकर कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि तीन दिनों से पुलिस हमें यहाँ पहुँचने नहीं दे रही थी, लेकिन आज हमने पहुँचकर गांधी जी के दिखाए मार्ग पर युवाओं का खुलकर समर्थन किया। ज्ञातव्य है कि जंतर मंतर पर छात्रों के धरने समर्थन में सपा विधायक अमिताभ बाजपेई परसों फूलबाग स्थित गांधी प्रतिमा पर धरना देने के लिए घर से निकल ही रहे थे कि तभी कानपुर कमिश्नरेट पुलिस ने उन्हें हाऊस अरेस्ट कर लिया था। अमिताभ बाजपेई ने उसी समय भागने की कोशिश की लेकिन अंत में पुलिस ने उन्हें रोक लिया। सपा विधायक अमिताभ बाजपेई ने वहीं घर पर ही 24 घंटे का सत्याग्रह शुरू कर कल 24 घंटे बाद खत्म किया। इस दौरान बहुत से लोग उनके सत्याग्रह से जुड़े रहे। अमिताभ बाजपेई ने अपने इस प्रदर्शन में छात्र जीवन की झलक दिखाई जिसे कानपुर के लोगों द्वारा सराहा गया।

संक्षिप्त खबरें

दिल्ली में हुए लाठीचार्ज में शहीद हुए छात्रों को कांग्रेस ने दी श्रद्धांजलि

चुनार, मीरजापुर। दिल्ली में जंतर मंतर पर नीट परीक्षा लीक होने को लेकर शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर बर्बरता पुर्वक हुए लाठीचार्ज और प्रदर्शन के दौरान पुलिस की पिटाई से हुई छात्र छात्राओं की मौत से आहत कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जिलाध्यक्ष शिवकुमार सिंह के नेतृत्व मे शाम छह बजे नगर के सराय टेकौर मुहल्ला स्थित गांधी पार्क में गांधी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर शहीद हुए छात्र छात्राओं के प्रति कैंडल मार्च निकालकर उन्हें श्रध्दांजलि अर्पित किया। कैंडल लेकर पार्क से बाहर निकलते ही पुलिस ने उन्हें नगर भ्रमण करने से रोक दिया। कोतवाल विजय शंकर सिंह ने बताया कि मार्च निकालने के लिए तहसील प्रशासन से कोई अनुमति नही ली गई है। इस दौरान पालिकाध्यक्ष मसूर अहमद,पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष राकेश सोनकर,नगर अध्यक्ष आदित्य गुप्ता पदयात्री,गुलाबचंद पांडेय, नियाज अहमद, तुलसी गुप्ता, अमरनाथ साहनी, उत्कर्ष मिश्रा, धनुर्धारी यादव,अफसर अली, राजेश मिश्रा ज्योति, भानु यादव प्रतीक त्रिपाठी, अफसर अली ,डब्लू मिश्रा, अख्तर अली, सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पेपर लीक विरोध प्रदर्शन के दौरान भाजपा नेता पर हमला

गाड़ी में तोड़फोड़ कोतवाली पहुंचे भाजपाई

भदोही। ज्ञानपुर स्थित काशी नरेश विश्वविद्यालय के मुख्य गेट पर पेपर लीक मामले को लेकर चल रहे छात्र प्रदर्शन के दौरान भारतीय जनता युवा मोर्चा के पूर्व जिलाध्यक्ष विनय कुमार पांडेय 'गोरेलाल' पर हमले का मामला सामने आया है। घटना के बाद बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी और कार्यकर्ता उनके साथ ज्ञानपुर कोतवाली पहुंचे और तहरीर देकर आरोपितों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की मांग की। विनय कुमार पांडेय ने पुलिस को दी तहरीर में आरोप लगाया है कि प्रदर्शन के दौरान उनकी गाड़ी को रोककर कुछ लोगों ने घेर लिया वाहन को क्षतिग्रस्त कर दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि हमलावरों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ अभद्र टिप्पणियां और गालियां भी दीं। उनका कहना है कि वह किसी तरह वाहन से निकलकर अपनी जान बचाने में सफल रहे। घटना के बाद भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं में आक्रोश फैल गया। भारी संख्या में कोतवाली पहुंचे भाजपाईयों ने दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की मांग की। जिलाध्यक्ष दीपक मिश्रा ने कहा कि लोकतंत्र में सभी को शांतिपूर्ण ढंग से विरोध और प्रदर्शन करने का अधिकार है, लेकिन हिंसा, तोड़फोड़ और किसी व्यक्ति पर हमला किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं है।

शटरिंग प्लाई चोरी करने वाले गिरोह के तीन आरोपी गिरफ्तार

टाटा इंट्रा वाहन व चोरी का माल बरामद

भदोही। चौरी थाना पुलिस ने शटरिंग की प्लाई चोरी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश करते हुए तीन आरोपितों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके कब्जे से चोरी की गई 36 शटरिंग प्लाई, घटना में प्रयुक्त टाटा इंट्रा मैजिक वाहन तथा तीन मोबाइल फोन बरामद किए हैं। पुलिस के अनुसार 21/22 जुलाई की रात चौधुरीपुर गांव में विनोद गौतम की निर्माणाधीन साइट से 36 शटरिंग प्लाई चोरी कर ली गई थी। मामले में दर्ज मुकदमे की विवेचना के दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि चोरी का माल टाटा इंट्रा वाहन से वाराणसी बेचने ले जाया जा रहा है। सूचना पर चौरी पुलिस ने मझिलापुर पुल के पास घेराबंदी कर वाहन सहित तीनों आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपितों की पहचान संदीप सरोज (19) पुत्र बनारसीधर सरोज निवासी निदुरारायपुर, थाना चौरी, मोनू सरोज (20) पुत्र राजेश सरोज निवासी निदुरारायपुर, थाना चौरी तथा सुजीत सरोज (25) पुत्र सुरेश सरोज निवासी अनई, थाना बड़ागांव, जनपद वाराणसी के रूप में हुई है। पूछताछ में आरोपितों ने निर्माणाधीन मकान से शटरिंग प्लाई चोरी कर वाराणसी में बेचने की योजना स्वीकार की। पुलिस ने तीनों के विरुद्ध मुकदमे में संबंधित धाराओं की बढ़ोतरी कर आवश्यक विधिक कार्रवाई के बाद न्यायालय भेज दिया।

श्रावण मास की तैयारियों का जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने किया स्थलीय निरीक्षण

» रामसरोवर से कांवड़ मार्ग पर लगभग 5 किलोमीटर तक होगी लाइटिंग व्यवस्था, अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत को दिए निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सोनभद्र/ उत्तर प्रदेश- आगामी श्रावण मास एवं कांवड़ यात्रा को सकुशल, सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने के उद्देश्य से जिलाधिकारी चर्चित गौड़ एवं पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने आज ऐतिहासिक विजयगढ़ दुर्ग एवं रामसरोवर का स्थलीय निरीक्षण कर कांवड़िया श्रद्धालुओं के लिए की जा रही व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को विजयगढ़ दुर्ग तक जाने वाली सीढ़ियों के ऊपर स्थित प्रवेश द्वार की आवश्यक मरम्मत शीघ्र पूर्ण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने जिला पंचायत राज अधिकारी को विजयगढ़ दुर्ग की सीढ़ियों से रामसरोवर तक पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था एवं नियमित साफ-सफाई सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। साथ ही अपर मुख्य अधिकारी, जिला पंचायत को निर्देशित किया कि रामसरोवर से जल भरकर जिस लगभग 5 किलोमीटर लंबे मार्ग से कांवड़िया श्रद्धालु वापस अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान करेंगे, उस पूरे मार्ग पर समुचित लाइटिंग की व्यवस्था प्राथमिकता के आधार पर सुनिश्चित कराई जाए, ताकि रात्रिकाल में भी श्रद्धालुओं को सुरक्षित एवं सुगम आवागमन की सुविधा मिल सके।

जिलाधिकारी ने कहा कि रामसरोवर आने वाले कांवड़ियों एवं श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए। प्रमुख स्थलों एवं मार्गों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं, साफ-सफाई, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था एवं अन्य मूलभूत सुविधाएं समयबद्ध ढंग से उपलब्ध कराई जाएं। सभी विभाग आपसी समन्वय स्थापित करते हुए कार्य करें तथा किसी भी स्तर पर लापरवाही अथवा शिथिलता न बरती जाए। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार एवं यशस्वी मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप कांवड़ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को सुरक्षित, स्वच्छ एवं सुविधायुक्त वातावरण उपलब्ध कराना जिला प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने संबंधित पुलिस अधिकारियों को निर्देशित किया कि विजयगढ़ दुर्ग, रामसरोवर एवं संपूर्ण कांवड़ मार्ग पर सुरक्षा के व्यापक एवं पुख्ता इंतजाम सुनिश्चित किए जाएं। प्रमुख स्थलों पर पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती, सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से सतत निगरानी, संवेदनशील स्थानों पर विशेष चौकसी, रात्रिकालीन गश्त तथा प्रभावी यातायात प्रबंधन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि सुरक्षा व्यवस्था ऐसी हो कि प्रत्येक श्रद्धालु स्वयं को सुरक्षित महसूस करे तथा कांवड़ यात्रा पूरी तरह शांतिपूर्ण, व्यवस्थित एवं निर्बाध रूप से संपन्न हो। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) बगीश कुमार शुक्ल, जिला पंचायत राज अधिकारी नमित शरण, अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत, पुलिस विभाग के अधिकारीगण, संबंधित विभागों के अधिकारी तथा स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

राज्यपाल कविंदर गुप्ता ने आचार्य अगस्त्य द्विवेदी को किया सम्मानित, 'शक्तिमीमांसा' संगोष्ठी में मिला विशेष सम्मान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

जम्मू, कटरा। भारतीय शक्ति उपासना की समृद्ध परंपरा एवं 51 शक्तिपीठों की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक विरासत पर केंद्रित चार दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'शक्तिमीमांसा' का आयोजन 21 से 24 जुलाई 2026 तक केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के श्री महाराजा रणबीर सिंह परिसर, कोट-भलवाल (जम्मू) में किया गया। इस आयोजन का संयुक्त संचालन केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड, कटरा तथा श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय के सहयोग से हुआ। देश के विभिन्न राज्यों से आए शक्तिपीठों के अर्चकों, संस्कृत विद्वानों, शोधकर्ताओं, धर्माचार्यों एवं शिक्षाविदों ने संगोष्ठी में सहभागिता कर शक्ति परंपरा के संरक्षण, संवर्धन और उसके वैश्विक महत्व पर गंभीर विचार-विमर्श किया। संगोष्ठी के विभिन्न तकनीकी सत्रों में 51 शक्तिपीठों के ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक महत्व पर विस्तृत शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा को नई पीढ़ी तक प्रभावी ढंग से पहुंचाने और शक्ति साधना की परंपरा को सशक्त बनाने पर भी विशेष मंथन हुआ। समापन समारोह में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल कविंदर गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर उन्होंने विंध्याचल मीरजापुर के प्रख्यात विद्वान एवं धर्माचार्य आचार्य अगस्त्य कुमार द्विवेदी को भारतीय संस्कृति, शक्ति उपासना की परंपरा तथा सनातन ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए अंगवस्त्र एवं स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। यह सम्मान विंध्याचल एवं मीरजापुर के लिए गर्व का विषय माना जा रहा है। संगोष्ठी में उपस्थित विद्वानों ने कहा कि ऐसे राष्ट्रीय आयोजन भारतीय आध्यात्मिक विरासत के संरक्षण, शोध एवं प्रचार-प्रसार को नई दिशा प्रदान करते हैं तथा देश की सांस्कृतिक एकता और सनातन परंपरा को और अधिक सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शिक्षामित्रों ने मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन, पांच सूत्रीय मांगें उठाई

भदोही। उत्तर प्रदेश प्राथमिक शिक्षामित्र संघ के प्रांतीय आह्वान पर शनिवार को जिला मुख्यालय पर शिक्षामित्रों ने प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री के नाम संबोधित ज्ञापन अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) शुभांगी शुक्ला को सौंपा। ज्ञापन में शिक्षामित्रों की लंबित समस्याओं के शीघ्र समाधान की मांग की गई। ज्ञापन में 3 जनवरी 2025 के शासनादेश के अनुरूप मूल विद्यालय वापसी तथा महिला शिक्षामित्रों का पति के निवास स्थान के निकट स्थानांतरण सुनिश्चित करने की मांग की गई। साथ ही टीईटी उत्तीर्ण एवं एनसीटीई मानकों को पूरा करने वाले शिक्षामित्रों को सुपर टीईटी से छूट देकर शिक्षक पद पर समायोजन, विभागीय टीईटी परीक्षा में शामिल करने, सेवानिवृत्ति आयु 60 से बढ़ाकर 62 वर्ष करने, 12 माह का मानदेय देने तथा दिवंगत शिक्षामित्रों के आश्रितों को आर्थिक सहायता व रोजगार उपलब्ध कराने की मांग उठाई गई।

ज्ञापन देने वालों में जिलाध्यक्ष शाहनवाज खान, जिला महामंत्री संतराम प्रजापति, प्रमोद राय, हीरामणि, प्रेम शंकर, राज नारायण राव, राजकुमार, अनिल कुमार, विनोद यादव, मनोज कुमार सिंह, देवराज, सुशील कुमार, पुष्पा देवी सहित अन्य शिक्षामित्र शामिल रहे।

डाकघर की लापरवाही से उपभोक्ता परेशान

चुनार, मीरजापुर। तहसील डाकघर की लापरवाही से उपभोक्ता परेशान हैं। समयावधि पूरी होने के 9 महीने बाद भी किसान विकास पत्र और बचत पत्र का भुगतान नहीं हो रहा। आरोप है कि कंप्यूटर में रिकॉर्ड अपलोड न होने का बहाना बनाकर अधिकारी पल्ला झाड़ रहे हैं। पकरीकेपुरा घूमपुर मोहाना निवासी मिर्जा देवी ने बताया कि उन्होंने 61 हजार का किसान विकास पत्र लिया था।

समय पूरा होने के बाद भी पैसा न मिलने से वे बीमार पति का इलाज नहीं करा पाईं और अंततः पति की मौत हो गई। इसी तरह टेढ़ीनाम के असगर अली का 17 हजार का NSC, करनैलगंज की नूरजहां बेगम का 30 हजार का KVP और भरपुर के चंद्रमा प्रसाद का 5 हजार का NSC भी समय पूरा होने के बाद महीनों से लटका है। सबसे हैरानी की बात - एक ही दिन लिए गए साहब अली और नूरजहां बेगम के KVP में से एक का भुगतान प्रक्रिया में है और दूसरे का रिकॉर्ड ही अपलोड नहीं है। उपभोक्ताओं ने डीएम और डाक विभाग के उच्च अधिकारियों से तत्काल जांच कराने और भुगतान की मांग की है।

भाजपा जिला कार्यालय में पदाधिकारियों की बैठक, डिजिटल प्रशिक्षण अभियान पर बनी रणनीति

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मीरजापुर। भारतीय जनता पार्टी के जिला कार्यालय, पं. दीनदयाल उपाध्यायपुरम कॉलोनी, बरौंधा कचार में शनिवार को जिलाध्यक्ष लाल बहादुर सरोज की अध्यक्षता में जिला पदाधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में शीर्ष नेतृत्व के निर्देशानुसार संगठन की आगामी गतिविधियों, डिजिटल प्रशिक्षण अभियान (डीएलपी) तथा संत शिरोमणि संत रविदास जयंती समारोह की तैयारियों पर विस्तृत चर्चा की गई। जिलाध्यक्ष लाल बहादुर सरोज ने कहा कि भाजपा के प्राथमिक सदस्य से लेकर वरिष्ठ पदाधिकारियों तक सभी कार्यकर्ताओं को पार्टी की रीति-नीति एवं विचारधारा की समुचित जानकारी होना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से डिजिटल प्रशिक्षण अभियान (डीएलपी) के माध्यम से संगठन के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है। बैठक में अभियान की रूपरेखा तैयार करते हुए इसे प्रभावी ढंग से संचालित करने की रणनीति बनाई गई।

बैठक में पार्टी नेतृत्व के निर्णय के अनुसार संत शिरोमणि संत रविदास जी की 650वीं जयंती 29 जुलाई 2026 से 20 फरवरी 2027 तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मनाने की तैयारियों पर भी विचार-विमर्श हुआ। जिलाध्यक्ष ने आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए विभिन्न पदाधिकारियों को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपीं। बैठक का संचालन जिला महामंत्री रविशंकर पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष शरदेन्दुमणि त्रिपाठी, हेमन्त, रवीन्द्र नारायण सिंह, गौरव ऊमर, चिन्तामणि मौर्य, सुनीता शर्मा, उदयभान तिवारी, जिला महामंत्री डॉ. सी.एल. बिन्द, जिलामंत्री संध्या पटेल, आलोक सिंह, वीरेन्द्र प्रताप यादव, पूनम चौरसिया, जिला कोषाध्यक्ष चन्द्रांशु गोयल तथा जिला मीडिया प्रभारी पं. भावेश शर्मा सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। जिला मीडिया सह प्रभारी रतन कुमार सिंह ने बैठक की जानकारी दी।

पुलिस मुठभेड़ में दो अंतरजनपदीय शातिर चोर गिरफ्तार, हथियार, हेरोइन व चोरी की नकदी बरामद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भदोही। औराई थाना पुलिस व स्वाट टीम ने शनिवार तड़के पुलिस मुठभेड़ के दौरान मेरठ निवासी दो अंतरजनपदीय शातिर चोरों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार दोनों आरोपितों ने पुलिस टीम पर फायरिंग की, जिसके जवाब में आत्मरक्षार्थ की गई कार्रवाई में दोनों के पैर में गोली लगी। उन्हें उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र औराई भेजा गया, जहां उनकी हालत सामान्य बताई गई है। पुलिस के मुताबिक गिरफ्तार आरोपितों की पहचान इमरान पुत्र बाबू निवासी लिसाड़ीगेट, मेरठ तथा शाकिर उर्फ अंडा पुत्र यासीन निवासी इंचौली, मेरठ के रूप में हुई है। इनके कब्जे से दो तमंचे, चार कारतूस (दो खोखा व दो जिंदा), 4.84 ग्राम हेरोइन, तीन मोबाइल फोन तथा ग्राहक सेवा केंद्र से चोरी की गई रकम में से 3,600 रुपये बरामद किए गए।

एसपी अभिनव त्यागी के निर्देशन में चलाए जा रहे अभियान के तहत मुखबिर की सूचना पर माधोसिंह रेलवे स्टेशन के पास घेराबंदी की गई। पुलिस का दावा है कि आरोपितों ने भागने के दौरान फायरिंग की, जिसके बाद जवाबी कार्रवाई में दोनों घायल होकर पकड़े गए। पूछताछ में आरोपितों ने 11/12 जुलाई की रात औराई क्षेत्र के एक ग्राहक सेवा केंद्र से करीब 4.80 रुपये लाख की चोरी करना स्वीकार किया है। पुलिस के अनुसार चोरी की अधिकांश रकम आरोपितों ने नशे, होटल और अन्य खर्चों में उड़ा दी।

दोनों के विरुद्ध आर्म्स एक्ट, एनडीपीएस एक्ट तथा अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज कर आगे की विधिक कार्रवाई की जा रही है। पुलिस के अनुसार इमरान पर पांच तथा शाकिर उर्फ अंडा पर दस आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं।

फर्जी दस्तावेजों से जमानत कराने वाला कथित पेशेवर जमानतदार गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भदोही। ज्ञानपुर थाना पुलिस ने फर्जी एवं कूटरचित दस्तावेजों के आधार पर गंभीर मामलों के आरोपितों की जमानत कराने के आरोप में एक कथित पेशेवर जमानतदार को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार आरोपी एक ही संपत्ति को बार-बार जमानत के लिए प्रस्तुत कर फर्जी शपथ पत्र, खतौनी और अन्य दस्तावेजों के माध्यम से न्यायालय को गुमराह करता था। पुलिस के मुताबिक जमानत सत्यापन के दौरान जांच में लालजी पुत्र सरजू, निवासी केशवपुर सरपतहां, थाना ज्ञानपुर की भूमिका संदिग्ध मिली। जांच में आरोप है कि उसने जिला कारागार ज्ञानपुर में निरुद्ध मनोज कुमार उर्फ राहुल सैनी निवासी शामली के साथ मिलकर संगठित तरीके से गंभीर मामलों के अभियुक्तों की जमानत कराने के लिए फर्जी दस्तावेज तैयार किए।

शनिवार को थाना ज्ञानपुर पुलिस ने

आरटीओ कार्यालय के पास घेराबंदी कर लालजी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने दोनों आरोपितों के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस का दावा है कि लालजी पूर्व में भी गैंगस्टर एक्ट, पॉक्सो एक्ट, आर्म्स एक्ट, चोरी, लूट, हत्या के प्रयास, आबकारी अधिनियम तथा एससी/एसटी एक्ट जैसे गंभीर मामलों के आरोपितों की फर्जी दस्तावेजों के आधार पर जमानत करा चुका है। मामले की विस्तृत जांच जारी है।

सावन में होगा विशाल श्री शिवपुराण कथा एवं वैभव महालक्ष्मी महायज्ञ

उन्नाव। पवित्र सावन माह के शुभ अवसर पर श्री आदि गुरु वैदिक सेवा ट्रस्ट, उन्नाव एवं श्री गोकुल बाबा मंदिर समिति के संयुक्त तत्वावधान में विशाल श्री शिवपुराण कथा एवं श्री वैभव महालक्ष्मी महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। आयोजन को लेकर कथा अध्यक्ष संजय त्रिपाठी ने शुक्रवार को गदनखेड़ा स्थित होटल मस्कट इन में प्रेस वार्ता कर कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। प्रेस वार्ता में संजय त्रिपाठी ने बताया कि यह धार्मिक आयोजन श्री गोकुल बाबा मंदिर प्रांगण, मगरवारा (उन्नाव) में संपन्न होगा। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गोमाता के प्रति जनजागरण, राष्ट्र कल्याण एवं सनातन संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन का संदेश जन-जन तक पहुंचाना है। आयोजन में लोक विख्यात शैवाचार्य श्री प्रशांत प्रभु महाराज के पावन सानिध्य में श्रद्धालुओं को शिवपुराण कथा एवं श्री वैभव महालक्ष्मी महायज्ञ का लाभ प्राप्त होगा। उन्होंने बताया कि 2 अगस्त 2026 को शाम 4 बजे बड़े हनुमान मंदिर से गांधी नगर तिराहे तक भव्य कलश यात्रा निकाली जाएगी, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं एवं मातृशक्ति की सहभागिता रहेगी।

जनपद के समस्त थानों पर आयोजित हुआ थाना समाधान दिवस

फरियादियों की शिकायतों का किया गया गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सोनभद्र/उत्तर प्रदेश- शनिवार दिनांक 25.07.2026 को जनपद सोनभद्र के समस्त थानों पर थाना समाधान दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जनपद के समस्त क्षेत्राधिकारी एवं थाना प्रभारियों द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्रों में जनसुनवाई करते हुए फरियादियों की शिकायतें सुनी गई तथा संबंधित अधिकारियों को प्रत्येक प्रकरण का निष्पक्ष, गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

इसी क्रम में क्षेत्राधिकारी घोरावल राजेश कुमार राय द्वारा थाना घोरावल पर तथा क्षेत्राधिकारी ओबरा प्रभात राय* द्वारा थाना कोन पर थाना समाधान दिवस आयोजित कर जनसुनवाई की गई। प्राप्त शिकायतों को गंभीरता से सुनते हुए उनके गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

थाना समाधान दिवस के दौरान प्राप्त अनेक शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण किया गया, जबकि शेष प्रकरणों के त्वरित एवं प्रभावी समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए गए। विशेष रूप से भूमि संबंधी विवादों का निस्तारण पुलिस एवं राजस्व विभाग की संयुक्त टीमों द्वारा आपसी समन्वय स्थापित करते हुए किए जाने पर बल दिया गया, जिससे फरियादियों को अनावश्यक रूप से विभिन्न कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें तथा प्रत्येक प्रकरण का पारदर्शी, निष्पक्ष एवं

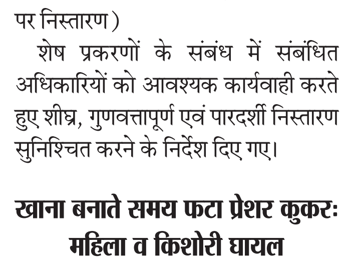

न्यायोचित निस्तारण सुनिश्चित किया जा सके। थाना समाधान दिवस का विवरण-पूर्व से लंबित प्रार्थना पत्र-पुलिस विभाग : 27, राजस्व विभाग : 383,

आज प्राप्त प्रार्थना पत्र- **पुलिस विभाग:** 12 (23 का मौके पर निस्तारण)

राजस्व विभाग: 210 (293 का मौके पर निस्तारण)

शेष प्रकरणों के संबंध में संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही करते हुए शीघ्र, गुणवत्तापूर्ण एवं पारदर्शी निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

कादीपुर बार एसोसिएशन चुनाव संपन्न

अशोक कुमार पांडे अध्यक्ष, विकास सिंह सचिव चुने गए

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुल्तानपुर /कादीपुर- तहसील बार एसोसिएशन के चुनाव शनिवार शाम संपन्न हो गए हैं। अशोक कुमार पांडे को अध्यक्ष और विकास कुमार सिंह को सचिव चुना गया है। मतदान प्रक्रिया सुबह 10 बजे शुरू होकर शाम 4 बजे तक चली। अध्यक्ष पद के लिए अजय कुमार वर्मा, अशोक कुमार पांडे और यमुना प्रसाद मिश्र ने दावेदारी पेश की थी। इसमें अशोक कुमार पांडे को सर्वाधिक 207 वोट मिले, जबकि अजय प्रकाश वर्मा को 142 और यमुना प्रसाद मिश्र को 14 वोट प्राप्त हुए। वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए मनोज राव और प्रकाश श्रीवास्तव के बीच मुकाबला था। प्रकाश श्रीवास्तव ने 201 वोट हासिल कर जीत दर्ज की, वहीं मनोज राव को 113 वोट मिले। सचिव पद के लिए विकास कुमार सिंह, अजय कुमार मिश्रा, रविंद्र कुमार प्रजापति और शैलेश कुमार सिंह मैदान में थे। विकास कुमार सिंह ने 186 वोट प्राप्त कर विजय हासिल की। अजय कुमार मिश्रा को 170, शैलेश कुमार सिंह को 54 और रविंद्र कुमार प्रजापति को 7 वोट मिले।

वरिष्ठ कार्यकारिणी के सभी सदस्य निर्विरोध निर्वाचित हुए। ऑडिटर पद पर गजेंद्र प्रसाद पाल और अतुल कुमार मिश्र भी निर्विरोध चुने गए। कनिष्ठ कार्यकारिणी के लिए तन्मय रवि, नेहा श्रीवास्तव, भूपेंद्र कुमार पाठक, प्रवेश कुमार, विजयराज गौतम, सुनील कुमार दुबे और सूर्य प्रकाश यादव ने दावेदारी की थी। इनमें तन्मय रवि को छोड़कर सभी प्रत्याशी विजेता घोषित हुए। तन्मय रवि को 206 वोट, नेहा श्रीवास्तव को 242 वोट, भूपेंद्र कुमार पाठक को 270 वोट, प्रवेश कुमार को 211 वोट, विजयराज गौतम को 216 वोट, सुनील कुमार दुबे को 273 वोट और सूर्य प्रकाश यादव को 208 वोट मिले।

खाना बनाते समय फटा प्रेशर कुकर: महिला व किशोरी घायल

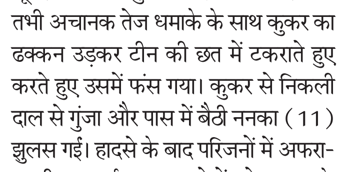

बिस्कोहर (सिद्धार्थनगर)। नगर पंचायत बिस्कोहर के वार्ड संख्या 13 पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर के उत्तर यादव डीह मोहल्ले में शनिवार सुबह करीब आठ बजे प्रेशर कुकर फटने से एक महिला और एक किशोरी झुलस कर घायल हो गई। सालिक राम यादव की बहू गुंजा (23) लकड़ी के चूल्हे पर प्रेशर कुकर में दाल पका रही थीं। तभी अचानक तेज धमाके के साथ कुकर का ढक्कन उड़कर टीन की छत में टकराते हुए करते हुए उसमें फंस गया। कुकर से निकली दाल से गुंजा और पास में बैठी ननका (11) झुलस गई। हादसे के बाद परिजनों में अफरा-तफरी मच गई। स्वजन दोनों को इलाज के लिए किसी प्राइवेट हॉस्पिटल में ले गए जहां घायलों की हालत सामान्य बताई जा रही है।

वनवासी समुदाय के कल्याण के लिए सहकारी समितियो से जुड़ें- नागेंद्र राम

वनवासी सेवाश्रम गोविंदपुर म्योरपुर मे स्टेकहोल्डर्स की बैठक संपन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सोनभद्र/ उत्तर प्रदेश- अपर जिला सहकारी अधिकारी दुद्धी अजय कुमार द्वारा शनिवार को म्योरपुर के गोविंदपुर मे वनवासी सेवाश्रम का भ्रमण किया गया।उनके साथ एडीओ म्योरपुर मनोज कुमार भी रहे। पूर्वनिर्धारित कार्यक्रमानुसार बनवासी सेवाश्रम, गोविंदपुर,म्योरपुर, सोनभद्र में केंद्रीय रेशम बोर्ड(सेंट्रल सिल्क बोर्ड) के तत्वावधान में राज्य रेशम विभाग(स्टेट सेरीकल्चर डिपार्टमेंट) के सहयोग से स्टेकहोल्डर्स सदस्यों की सहायक निदेशक नागेंद्र राम की उपस्थिति में परामर्श बैठक की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था प्रमुख सुश्री शुभा बहन के द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त रेशम से जुड़े कृषक सदस्यों एवं समितियों को लाभप्रद बनाये जाने हेतु सहकारिता विभाग के एडीसीओ अजय कुमार,एडीओ मनोज व सचिव क्रय-विक्रय सहकारी समिति दुद्धी दशरथ कुमार जायसवाल द्वारा विस्तृत जानकारी दी गयी।एडीसीओ अजय कुमार ने कहा कि वनवासी समुदाय को दीर्घकालिक कल्याण के लिये सहकारी समितियो से जुड़ना श्रेयस्कर है।रेशम उत्पादन के संबंध में तकनीकी जानकारी डॉ.हरेंद्र कुमार यादव द्वारा दी गयी और उपस्थित प्रगतिशील कृषकों, जैसे-रामानंद, मोहन यादव, चंद्रदेव, विजय कुमार, नंदलाल, वीरशाह आदि से गुणवत्तापूर्ण रेशम उत्पादन एवं आय अर्जित करने हेतु सुझाव आमंत्रित किए गए।

कार्यक्रम के अंत में बनवासी संस्था की अध्यक्षा द्वारा वैज्ञानिकों की फसल की अवधि में उपस्थिति, तकनीकि सावधानियां,कीटनाशक उपचार एवं अन्य

गंभीर पहलुओं पर महत्वपूर्ण सुझाव दिया गया। कार्यक्रम में उपस्थित आशुतोष कुमार(सहायक निदेशक, रेशम निदेशालय-लखनऊ) व डॉ. देवाशीष चट्टोपाध्याय(वैज्ञानिक केंद्रीय रेशम विभाग), सूबेदार(एसडीओ,रेशम विभाग) ने भी कृषको को सम्बोधित किया और बहुमूल्य सुझाव दिये। कार्यक्रम के अंत में सहायक रेशम विकास अधिकारी पंकज कुमार द्वारा सभी उपस्थित कृषक बंधुओं,अतिथियों को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

सुलतानपुर में 104 किलो अवैध गांजे के साथ एक गिरफ्तार

आयसर डीसीएम वाहन से तस्करी करते हुए शातिर अभियुक्त पकड़ा गया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुलतानपुर- पुलिस ने 25 जुलाई को बन्धुआकला थाना क्षेत्र में 104 किलोग्राम अवैध गांजे के साथ एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। यह गिरफ्तारी लखनऊ-सुलतानपुर हाईवे पर डेरा बसी ढाबा के सामने की गई। गिरफ्तार अभियुक्त की पहचान विजय पाल (37 वर्ष) पुत्र रामकिसन के रूप में हुई है, जो अयोध्या के हैदरगंज थाना क्षेत्र के नियाजपुर भदार गांव का निवासी है। पुलिस ने उसके कब्जे से 104 किलोग्राम अवैध गांजा बरामद किया, जिसे तीन बोरियों में 52 पैकेट में टेप करके रखा गया था। गांजे की तस्करी में इस्तेमाल किया जा रहा एक आयसर डीसीएम वाहन (UP42CT7793) भी जब्त किया गया। इस मामले में अभियुक्त के खिलाफ थाना बन्धुआकला में अभियोग पंजीकृत किया गया है। गिरफ्तार अभियुक्त को माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। बरामदगी में अवैध गांजे और डीसीएम वाहन के अतिरिक्त एक आधार कार्ड, एक पैन कार्ड, एक ड्राइविंग लाइसेंस और एक विवो मोबाइल फोन भी शामिल हैं। अभियुक्त विजय पाल का आपराधिक इतिहास भी है। उसके खिलाफ सुलतानपुर के बन्धुआकला थाने में वर्तमान एनडीपीएस एक्ट के मामले के अलावा, रायबरेली के डलमऊ थाने में गैंगेस्टर एक्ट और एनडीपीएस एक्ट के तहत मामले दर्ज हैं। मैनपुरी के कोतवाली थाने में भी उसके खिलाफ

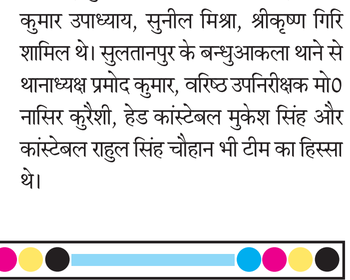

धोखाधड़ी का मामला दर्ज है। इस गिरफ्तारी को अंजाम देने वाली पुलिस टीम में एसटीएफ मुख्यालय लखनऊ से उपनिरीक्षक फैजुद्दीन सिद्दीकी, मुख्य आरक्षी रमाशंकर चौधरी, शैलेन्द्र कुमार उपाध्याय, सुनील मिश्रा, श्रीकृष्ण गिरि शामिल थे। सुलतानपुर के बन्धुआकला थाने से थानाध्यक्ष प्रमोद कुमार, वरिष्ठ उपनिरीक्षक मो0 नासिर कुरैशी, हेड कांस्टेबल मुकेश सिंह और कांस्टेबल राहुल सिंह चौहान भी टीम का हिस्सा थे।

संक्षिप्त खबरें

किसान अनुदान पर कृषि यन्त्र प्राप्त करने हेतु 10 अगस्त तक कराये बुकिंग

प्रतापगढ़। उप कृषि निदेशक अश्विनी कुमार सिंह ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2026-27 में कृषि विभाग द्वारा संचालित समस्त योजनाओ के अन्तर्गत समस्त कृषि यन्त्र/कृषि रक्षा उपकरण, किसान ड्रोन, फसल अवशेष प्रबन्धन के कृषि यन्त्र, एंव कस्टम हायरिंग सेन्टर, फार्म मशीनरी बैंक इत्यादि के आवेदन हेतु बुकिंग प्रारम्भ हो गयी है और दिनांक 10 अगस्त रात्रि 12 बजे तक किसान गण बुकिंग कर सकते हैं। बुकिंग हेतु कृषि विभाग के पोर्टल agriculture.up.gov.in पर किसान कार्नर के अन्तर्गत 'यंत्र बुकिंग प्रारम्भ' लिंक पर क्लिक कर ऑनलाइन आवेदन किया जाना है।

डीएम एवं एसपी ने थाना जेठवारा में सुनीं जनसामस्यायें, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के दिये निर्देश

प्रतापगढ़। थाना जेठवारा में आयोजित थाना समाधान दिवस में जिलाधिकारी अभिषेक पाण्डेय एवं पुलिस अधीक्षक दीपक भूकर ने जनसमस्याएं सुनीं।थाना परिसर में आयोजित समाधान दिवस में शिकायकर्ता पहुंचे और भूमि विवाद, अवैध कब्जा सहित विभिन्न स्थानीय समस्याओं से संबंधित प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किए। थाना समाधान दिवस में राजस्व विभाग की 05 व पुलिस विभाग की 02 शिकायतें प्राप्त हुई। जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने प्रत्येक शिकायत को ध्यानपूर्वक सुना और संबंधित अधिकारियों को शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। जिलाधिकारी ने स्पष्ट निर्देश दिए कि प्राप्त सभी शिकायतों को गंभीरता से लिया जाए और उनके निस्तारण में किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए। उन्होंने कहा कि राजस्व-पुलिस विभाग की संयुक्त टीम मौके पर जाकर स्थलीय निरीक्षण करे और समय-सीमा और गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करे। उन्होंने अधिकारियों को यह भी निर्देशित किया कि शिकायतकर्ता-विपक्षी पक्ष दोनों को बुलाकर पारदर्शी तरीके से प्रकरण का समाधान कराया जाए, जिससे भविष्य में विवाद की पुनरावृत्ति न हो। डीएम ने कहा कि शासन की प्राथमिकता है कि आमजन को न्याय पाने के लिए अनावश्यक रूप से कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें। इस अवसर पर सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

वृक्षारोपण स्वच्छ हवा और स्वस्थ्य जीवन का आधार है- अखिलेश अवस्थी

बिस्कोहर (सिद्धार्थनगर)। नगर पंचायत बिस्कोहर के अध्यक्ष प्रतिनिधि अखिलेश अवस्थी ने शनिवार को हरि शंकरी वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारंभ किया। वार्ड नंबर 11 भगत सिंह नगर स्थित अंत्येष्टि स्थल पर उन्होंने अपने साथियों के साथ पहुंचकर पीपल, बरगद और पाकड़ के पौधे रोपित किए। अध्यक्ष प्रतिनिधि अखिलेश अवस्थी ने इस मौके पर कहा कि वृक्षारोपण केवल पर्यावरण को हरा-भरा बनाने का कार्य नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ हवा और स्वस्थ जीवन का आधार भी है। अंत्येष्टि स्थल जैसे सार्वजनिक स्थानों पर छायादार एवं पवित्र पेड़ों का रोपण क्षेत्रवासियों के लिए सुविधाजनक एवं स्वच्छ वातावरण का निर्माण करेगा। उन्होंने सभी नागरिकों से अपील की कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में अधिक से अधिक पौधे लगाएं तथा उनकी देखभाल भी सुनिश्चित करें। इस अवसर पर सभासद प्रतिनिधि लाल जयसवाल, शिवपति उपाध्याय, विनोद पाठक, दद्दन यादव, गौकर्ण पाठक, विमल सिंह, अनूप पाण्डेय, मोनू गुप्ता, पिंकू मोदनवाल, विनोद पासवान, अजय प्रजापति सहित अन्य लोग उपस्थित रहें।

महिला को साइबर फ्रॉड से सम्बंधित धनराशि वापस मिला

लोटन(सिद्धार्थनगर)। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देश में साइबर अपराध एवं साइबर क्राइम रिकवरी/लीन हेतु चलाये जा रहे अभियान के अन्तर्गत प्रशान्त कुमार प्रसाद अपर पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में व विश्वजीत सौरयान क्षेत्राधिकारी सदर के कुशल पर्यवेक्षण में एवं थानाध्यक्ष हरिओम कुशवाहा के नेतृत्व में दिनांक-21.07.2026 को आवेदिका सुधा शर्मा पुत्री अर्जुन शर्मा साकिन नेतवर थाना लोटन जनपद सिद्धार्थनगर के द्वारा एनसीआपी पोर्टल के माध्यम से शिकायत वित्तीय फ्राड होनें का किया गया था । जिस पर थाना लोटन साइबर सेल टीम द्वारा आवेदिका सुधा शर्मा उपरोक्त के फ्राड धनराशि 4999/- रुपये को पीड़िता के खाता में वापस कराया गया।

डीएम-एसपी की मौजूदगी में थाना दिवस

» फरियादियों की समस्या का समाधान प्राथमिकता के आधार पर समय से करें

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लोटन(सिद्धार्थनगर)। कोतवाली लोटन परिसर में शनिवार को जिलाधिकारी की अध्यक्षता में सम्पूर्ण थाना समाधान दिवस आयोजित किया गया। जिसमें क्षेत्र के तमाम पीड़ितों ने अपनी समस्या के समाधान के लिए पहुंचकर न्याय की गुहार लगाई। जिलाधिकारी ने सभी सम्बंधित जनों को मौके पर जाकर समस्या समाधान कराने का निर्देश दिया। उल्लेखनीय है कि शासन के मंशानुरूप प्रत्येक माह के द्वितीय एवं चतुर्थ शनिवार को सम्पूर्ण थाना समाधान दिवस का आयोजन किया जाता है।उसी कड़ी में शनिवार को कोतवाली लोटन परिसर में भी थाना समाधान दिवस आयोजित था।जिस अवसर पर जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन की अध्यक्षता एवं पुलिस अधीक्षक डॉ0 अभिषेक महाजन की उपस्थिति में थाना लोटन में थाना समाधान दिवस का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।सम्पूर्ण थाना समाधान दिवस के अवसर पर आने वाले शिकायतकर्ताओं की समस्याओं को जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन एवं पुलिस अधीक्षक डॉ0 अभिषेक महाजन द्वारा सुना गया। जिलाधिकारी ने समस्त राजस्व निरीक्षकों को निर्देश दिया कि भूमि विवाद, वरासत, बंटवारा आदि के जो प्रकरण हैं। उनका मौके पर जाकर सही ढंग से निस्तारण करायें। किसी को अनावश्यक रूप से परेशान न किया जाये। इसके साथ ही जिलाधिकारी ने राजस्व निरीक्षक एवं लेखपाल को निर्देश दिया कि मौके पर जाकर नाली का विवाद, चकमार्ग का विवाद व जमीन बटवारा व अवैध कब्जा,पट्टा प्रकरणो को शिकायतकर्ता की उपस्थिति में निस्तारण की कार्यवाही सुनिश्चित कराये।आवश्यकता पड़ने पर पुलिस बल के साथ मौके पर जाये। अधिकतम प्रकरणो का निस्तारण करायें।

प्रकरण लम्बित कदापि न रखा जाये। जिलाधिकारी ने थाना समाधान दिवस में आये सभी शिकायतकर्ताओं से अपील करते हुए कहा कि आपस में मिलकर रहे। किसी प्रकार का लड़ाई-झगड़ा न करें। जो भी प्रकरण आये है उसका निस्तारण मौके पर जाकर राजस्व के अधिकारी/कर्मचारी करायेंग इस दौरान उपजिलाधिकारी नौगढ़ रेणु मिश्रा, थानाध्यक्ष हरिओम कुशवाहा,राजस्व निरीक्षक, हल्का लेखपाल आदि उपस्थित रहें।

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री के पद से धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा मोदी सरकार के अहंकार की पराजय- प्रमोद तिवारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज, प्रतापगढ़। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफा देने को लोकतंत्र की जीत करार दिया है। उन्होने कहा कि केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के द्वारा दिया गया इस्तीफा यह साबित कर गया है कि सत्ता के अहंकार में डूबी हुई मोदी सरकार झुक भी सकती है। सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा कि शिक्षा मंत्री पद से धर्मेन्द्र प्रधान के त्याग पत्र देने से देश के युवाओं की जीत हुई है। उन्होने कहा कि मंत्री का इस्तीफा देना अहंकार की पराजय है। उन्होने कहा कि पेपरलीक को लेकर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष ने लम्बे समय से आंदोलनरत छात्रों की नैतिक मांगों को लेकर आवाज बुलन्द की। उन्होने कहा कि मोदी सरकार को झुकाने के लिए राहुल गांधी जैसा संघर्षशील व्यक्तित्व होना चाहिए।

सांसद प्रमोद तिवारी ने धर्मेन्द्र प्रधान की घेराबंदी करते हुए कहा कि उनके कार्यकाल में एक सौ बावन बार विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में पेपरलीक हुए। उन्होने कहा कि पूरे देश का युवा वर्ग यही चाहता था कि पर्चे

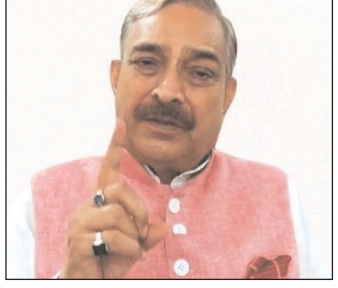

लीक होने को लेकर शिक्षा मंत्री के रूप में धर्मेन्द्र प्रधान का फौरन इस्तीफा होना चाहिए। उन्होने कहा कि देश भर के युवाओं की भावनाओ के विपरीत शिक्षा मंत्री के पद से त्याग पत्र देने में धर्मेन्द्र प्रधान द्वारा की गयी देरी निंदनीय है ।उन्होने कहा कि सच्चाई तो यह है कि धर्मेन्द्र प्रधान अपनी नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए अन्त तक इस्तीफा देने से बचने में लगे रहे। सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा कि केन्द्रीय शिक्षा मंत्री का त्याग पत्र देना मोदी सरकार की तानाशाही के खिलाफ लोकतांत्रिक संघर्ष की एक बड़ी जीत है। कांग्रेस सांसद प्रमोद तिवारी का बयान शनिवार को मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल के हवाले से निर्गत हुआ है।

मारपीट की घटना में घायल महिला की वाहन की टक्कर से मौत, कोहराम

लालगंज, प्रतापगढ़। मारपीट की घटना में चुटहिल पीड़िता के थाने में शिकायत दर्ज कराने के बाद घर लौटते समय दुर्घटना में मौत को लेकर परिजनों मे कोहराम मच गया। नाली विवाद को लेकर हुई मारपीट में चोट लगने के बाद उसी दिन रात में दुर्घटना को लेकर महिला की मौत पुलिसिया जांच की फांस भी बनी देखी जा रही है। लीलापुर कोतवाली के गहिरी गांव में शुक्रवार की शाम स्व0 विनोद वर्मा की पत्नी कमला देवी 48 का नाली के विवाद को लेकर पड़ोसी ओमप्रकाश से विवाद हो गया था। कहासुनी मारपीट मे बदल गयी और कमला देवी को चोटें आ गयी। इलाज कराने के बाद वह रात करीब दस बजे लीलापुर थाने घटना को लेकर शिकायत दर्ज कराने पहुंची। शिकायत दर्ज कराने के बाद वह वापस गांव लौट रही थी तभी लीलापुर टंकी के समीप अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दिया। गंभीर रूप से चुटहिल कमला देवी को एम्बुलेंस द्वारा अस्पताल पहुंचवाया गया। वहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मौत की सूचना घर पहुंची तब परिजन बिलख पड़े। वहीं पुलिस ने शव को कब्जे मे लेकर शनिवार को दोपहर बाद पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया। कमला के पति विनोद का कुछ वर्षो पहले निधन हो चुका है।

डा. संदीप मौर्य को मिला महा एक्युपंचर रत्न अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार -2026

प्रतापगढ़। आयुष इंटरनेशनल मेडिकल एसोसिएशन औरंगाबाद महाराष्ट्र द्वारा अक्युपंक्चर चिकित्सा क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय कार्य व उपचार करने हेतु उड़ैयाडीह पट्टी प्रतापगढ़ के होनहार युवा डा. संदीप मौर्य को यशवंत राव चव्हाण नाट्य गृह औरंगाबाद महाराष्ट्र में 'महा अक्युपंक्चर रत्न अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार -2026' से एसोसिएशन के चेयरमैन डॉ. सतीश कराले, वाइस चेयरमैन नितिन राजे पाटिल राजे व अन्य अंतरराष्ट्रीय स्तर के अधिकारियों ने नवाजा। गौरतलब है कि डा. संदीप मौर्य एमएससी इन फिजिक्स के साथ संबंधित क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त हैं और विशेषज्ञता हासिल है। अक्युपंक्चर चिकित्सा में उनकी ख्याति को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें यह प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया गया है। उन्होंने निश्चित ही प्रतापगढ़ और उत्तर प्रदेश का नाम पूरे देश में रोशन किया है। इस बड़ी उपलब्धि पर लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. दयाराम मौर्य 'रत्न', समाजसेवी रोशनलाल ऊमरवैश्य, अम्मा साहेब ट्रस्ट के ट्रस्टी आनन्द मोहन ओझा, विकास अधिकारी राजीव कुमार आर्य, समाजसेवी पंकज मौर्य तथा उड़ैयाडीह पट्टी के क्षेत्रवासियों ने उन्हें बधाई और शुभकामनाएं दी हैं।

मिनी नंदिनी कृषक समृद्धि योजना में 10 उन्नत नस्ल की गायों पर मिलेगा 11.80 लाख रुपये तक का अनुदान

» पशुपालक एवं दुग्ध उत्पादक मिनी नंदिनी कृषक समृद्धि योजना हेतु 31 जुलाई तक करें आवेदन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रतापगढ़। मुख्य पशु चिकित्साधिकारी राम शब्द ने बताया है कि नंद बाबा दुग्ध मिशन के अंतर्गत संचालित मिनी नंदिनी कृषक समृद्धि योजना के तहत 10 स्वदेशी उन्नत नस्ल की गायों की डेयरी इकाई स्थापित करने पर अधिकतम 11.80 लाख रुपये का अनुदान प्रदान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि योजना के तहत सहीवाल, गिर एवं थारपारकर प्रजाति की 10 गायों की परियोजना की कुल अनुमानित लागत 23.60 लाख रुपये निर्धारित की गई है। इस पर सरकार द्वारा 50 प्रतिशत तक अनुदान उपलब्ध कराया जाएगा। योजना के अनुसार लाभार्थी को परियोजना लागत का 15 प्रतिशत अंशदान स्वयं वहन करना होगा, जबकि 35 प्रतिशत धनराशि बैंक ऋण के माध्यम से प्राप्त की जा सकेगी। यदि कोई लाभार्थी बैंक ऋण नहीं लेना चाहता और स्वयं के संसाधनों से इकाई स्थापित करना चाहता है, तो उसके बैंक खाते में आवश्यक धनराशि उपलब्ध होना अनिवार्य होगा। इसके लिए छः माह का सत्यापित बैंक स्टेटमेंट प्रस्तुत करना होगा।

मुख्य पशु चिकित्साधिकारी ने बताया कि योजना के अंतर्गत 50 प्रतिशत लाभ महिला पशुपालकों एवं दुग्ध उत्पादकों को दिया जाएगा। गायों की खरीद यथासंभव प्रदेश के बाहर स्थित ब्रिडिंग ट्रैक्ट से की जाएगी। खरीदी जाने वाली गायें प्रथम अथवा द्वितीय ब्यांत की होनी चाहिए तथा डेढ़ माह के भीतर ब्याने वाली नहीं होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि डेयरी इकाई की स्थापना के लिए लगभग 0.20 एकड़ (8712 वर्ग फुट) भूमि आवश्यक होगी। साथ ही लाभार्थी को वर्ष भर हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय चारा उत्पादकों अथवा आपूर्तिकर्ताओं से अनुबंध अथवा शपथपत्र प्रस्तुत करना होगा। उन्होने बताया है कि पूर्व में कामधेनु, मिनी कामधेनु, माइक्रो कामधेनु, नंदिनी कृषक समृद्धि योजना अथवा मुख्यमंत्री गौ-संवर्धन योजना का लाभ प्राप्त कर चुके व्यक्ति इस योजना के लिए पात्र नहीं होंगे। योजना के लिए ऑनलाइन आवेदन 31 जुलाई तक आवेदन किए जा सकेंगे। इच्छुक पशुपालक नंद बाबा दुग्ध मिशन के पोर्टल https://nandbabadugdhmission.up.gov.in पर आवेदन कर सकते हैं। योजना संबंधी विस्तृत जानकारी मुख्य पशु चिकित्साधिकारी, उप दुग्धशाला विकास अधिकारी तथा मुख्य विकास अधिकारी कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

डीएम एवं एसपी ने बाबा भयहरणनाथ धाम का निरीक्षण किया

» श्रावण माह एवं कांवड़ यात्रा की सुरक्षा एवं व्यवस्थाओं की समीक्षा की

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रतापगढ़। आगामी पवित्र श्रावण माह एवं कांवड़ यात्रा के दृष्टिगत श्रद्धालुओं एवं कांवड़ियों की सुरक्षा, सुगम आवागमन तथा सुदृढ़ कानून एवं शांति व्यवस्था सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिलाधिकारी अभिषेक पाण्डेय एवं पुलिस अधीक्षक दीपक भूकर द्वारा बाबा भयहरणनाथ धाम का स्थलीय निरीक्षण कर सुरक्षा एवं अन्य व्यवस्थाओं की विस्तृत समीक्षा की गई। निरीक्षण के दौरान मंदिर परिसर, प्रवेश एवं निकास मार्ग, बैरिकेडिंग, पार्किंग व्यवस्था, यातायात प्रबंधन, सीसीटीवी निगरानी, प्रकाश व्यवस्था, साफ-सफाई, पेयजल, चिकित्सा सुविधा तथा श्रद्धालुओं की सुविधा से संबंधित व्यवस्थाओं का गहन निरीक्षण किया गया। संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि सभी आवश्यक व्यवस्थाएं समयबद्ध रूप से पूर्ण कर ली जाएं तथा श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न होने पाए।

जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक द्वारा मंदिर परिसर में उपस्थित सभ्रांत नागरिकों, मंदिर प्रबंधन समिति के पदाधिकारियों एवं संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक कर आगामी श्रावण माह एवं कांवड़ यात्रा की तैयारियों, सुरक्षा व्यवस्था, यातायात प्रबंधन, भीड़ नियंत्रण एवं श्रद्धालुओं की सुविधाओं के संबंध में विस्तृत समीक्षा की गई।पुलिस अधीक्षक दीपक भूकर ने पुलिस अधिकारियों को निर्देशित किया कि श्रावण माह एवं कांवड़ यात्रा के दौरान पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती, सतत गश्त, प्रभावी यातायात प्रबंधन तथा संवेदनशील स्थलों पर विशेष निगरानी सुनिश्चित की जाए। असामाजिक एवं अराजक तत्वों पर कड़ी नजर रखते हुए श्रद्धालुओं की सुरक्षा एवं सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। जिलाधिकारी अभिषेक पाण्डेय ने संबंधित विभागों को आपसी समन्वय स्थापित करते हुए सभी व्यवस्थाओं को समय से पूर्ण करने तथा प्रत्येक व्यवस्था का नियमित अनुश्रवण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए, जिससे श्रावण माह एवं कांवड़ यात्रा शांतिपूर्ण, सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित वातावरण में संपन्न हो सके। इस अवसर पर डीएम एवं एसपी द्वारा बाबा भयहरणनाथ धाम में पूजा-अर्चना भी की गई। इस दौरान पुलिस एवं प्रशासन के संबंधित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

सावन मेले की तैयारियों पर डीएम-एसपी की पैनी नजर बाल्हेश्वर धाम में व्यवस्थाओं का लिया जायजा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। आगामी सावन मेले को लेकर जिला प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। शनिवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका और पुलिस अधीक्षक रवि कुमार ने बाल्हेश्वर धाम मंदिर का औचक निरीक्षण किया। दोनों अधिकारियों ने मेले की तैयारियों का बारीकी से जायजा लिया। उन्होंने सुरक्षा व्यवस्था, भीड़ नियंत्रण, पार्किंग, साफ सफाई, पेयजल और अन्य आवश्यक सुविधाओं का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने संबंधित विभागों के जिम्मेदार अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। कहा कि सावन मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए। सुरक्षा व्यवस्था मजबूत रखी जाए। भीड़ प्रबंधन के लिए पर्याप्त पुलिस बल तैनात किया जाए। पार्किंग स्थल व्यवस्थित हों। मंदिर परिसर और आसपास नियमित साफ सफाई कराई जाए। पेयजल और अन्य मूलभूत सुविधाएं भी सुचारु रूप से उपलब्ध रहें। जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक ने कहा कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने सभी विभागों को

आपसी समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिए। प्रशासन ने श्रद्धालुओं से भी अपील की कि वे व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करें और प्रशासन द्वारा जारी निर्देशों का पालन करें, ताकि सावन मेला शांतिपूर्ण और सुरक्षित वातावरण में संपन्न हो सके।

दस्तावेजों से संपत्ति हड़पने का आरोप, पीड़िता ने दी अनशन की चेतावनी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज (रायबरेली)। नगर पंचायत महराजगंज के वार्ड संख्या 6, आजाद नगर निवासी ज्ञानवती, पत्नी स्वर्गीय हनुमान प्रसाद गुप्ता ने अपने ही परिवार के सदस्य पर कथित रूप से फर्जी दस्तावेज तैयार कर उनकी संपत्ति पर अवैध कब्जा करने का आरोप लगाया है। इस संबंध में उन्होंने उपजिलाधिकारी महराजगंज को प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई। प्रार्थना पत्र के अनुसार, स्वर्गीय हनुमान प्रसाद गुप्ता के नाम दर्ज दुकान और मकान उनके निधन के बाद विधिक प्रक्रिया के तहत पत्नी ज्ञानवती और पुत्र अनिल कुमार के नाम दर्ज होने चाहिए थे। आरोप है कि अनिल कुमार ने कथित रूप से फर्जी दस्तावेज तैयार कर शासन-प्रशासन को गुमराह करते हुए पूरी संपत्ति अपने नाम दर्ज करा ली। साथ ही परिवार रजिस्टर से भी उनका नाम कटवा दिया और संपत्ति पर कब्जा कर लिया।

पीड़िता का आरोप है कि उनके घरेलू सामान पर भी कब्जा कर लिया गया है। उनका कहना है कि वह इस मामले में उपजिलाधिकारी, तहसीलदार, कोतवाली, तहसील दिवस और थाना दिवस सहित विभिन्न अधिकारियों से कई बार शिकायत कर चुकी हैं, लेकिन अब तक कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने यह भी आरोप

लगाया कि उन्हें लगातार जान से मारने की धमकियां दी जा रही हैं, जिससे वह भय के माहौल में जीवन व्यतीत करने को विवश हैं। ज्ञानवती ने प्रशासन को चेतावनी दी कि यदि उनकी शिकायत का शीघ्र समाधान नहीं किया गया तो वह उपजिलाधिकारी कार्यालय के समक्ष आमरण अनशन करने के लिए बाध्य होंगी। उन्होंने अपने दिवंगत पति की संपत्ति में अपना वैधानिक नाम दर्ज कराने, संपत्ति पर कब्जा दिलाने तथा जान-माल की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की है। इस संबंध में प्रार्थना पत्र की प्रतिलिपि जिलाधिकारी रायबरेली, पुलिस अधीक्षक, प्रभारी निरीक्षक कोतवाली महराजगंज तथा अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत महराजगंज को भी प्रेषित की गई है। वहीं, देर शाम नायब तहसीलदार उमेश चंद्र त्रिपाठी तहसील परिसर पहुंचे और महिला से वार्ता कर उनका अनशन समाप्त कराया। उन्होंने आश्वासन दिया कि दोनों पक्षों को बुलाकर मामले की निष्पक्ष सुनवाई की जाएगी तथा नियमानुसार उसका निस्तारण कराया जाएगा।

समाधान दिवस में सात मामले आए, दो निस्तारित

बिस्कोहर (सिद्धार्थनगर)। थाना तिलोकपुर के परिसर में शनिवार को समाधान दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रभारी निरीक्षक हरेकृष्ण उपाध्याय की अगुवाई में समाधान दिवस देखा गया। सात मामले आए जिसमें पांच मामले राजस्व विभाग के दो मामले पुलिस विभाग के थे ।दो राजस्व विभाग के मामलों के लिए एक टीम गठित करके भेज दी गई है।और पुलिस विभाग के मामले को मौके पर निस्तारण कर दिया गया। उच्चाधिकारियों के निर्देशन में किया गया कि पुरानी मामलों को जल्द से जल्द निपटने का कार्य किया जाए।इस मौके पर चौकी बिस्कोहर अमित कुमार शाही, चौकी बिजोरा चंद्र प्रताप सिंह,उप निरीक्षक शिव नारायण सिंह,गणेश कुमार, कृष्ण कुमार कुमार पांडे, तालीमुंदीन खान, विजय प्रसाद, विशेश्वर प्रसाद, हेड कांस्टेबल जुनेद अहमद, सोनू शर्मा,महिला कांस्टेबल कुंजन सिंह राजस्व निरीक्षक नरेन्द्र देव हल्का लेखपाल राम कुमार तिवारी आदि मौजूद रहें।

युवती महिला मित्र संग शादी की जिद पर अड़ी

● इंस्ट्राग्राम पर हुई दोस्ती परिजनों के पहल पर घर जाने को हुई राजी समलैंगिकता का मामला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बांसी (सिद्धार्थनगर)। पथरा थाना क्षेत्र के एक गांव से जुड़ा एक अनोखा मामला सामने आया है। इंस्टाग्राम पर हुई दोस्ती के बाद एक युवती अपनी महिला मित्र के पास पहुंच गई और उसी महिला मित्र के साथ विवाह करने की जिद पर अड़ गई। पुलिस द्वारा बरामद किए जाने के बाद भी वह महिला मित्र के साथ रहने की बात कहती रही। हालांकि परिजनों के काफी समझाने-बुझाने के बाद वह उनके साथ घर जाने को राजी हो गई।

जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के एक गांव की 20 वर्षीय युवती 23 जुलाई को बिना बताए घर से चली गई थी। काफी तलाश के बाद भी उसका पता नहीं चलने पर परिजनों ने उसी दिन पथरा थाने में गुमशुदगी

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक www.swatantraprabhat.com
स्वतंत्र प्रभात
जो लिखेगा, वही टिकेगा
ब्रेकिंग न्यूज़

दर्ज कराई। शिकायत मिलते ही पुलिस ने युवती के मोबाइल की लोकेशन के आधार पर तलाश शुरू की और उसे जनपद मऊ स्थित उसकी इंस्टाग्राम महिला मित्र रुबी के घर से बरामद कर शुक्रवार देर रात पथरा थाने ले आई। इसके बाद पुलिस ने परिजनों को सूचना देकर थाने बुलाया।

शनिवार सुबह जब परिजन थाने पहुंचे और युवती से घर चलने को कहे तो वह अपनी महिला मित्र के साथ विवाह करने की जिद पर अड़ गई। काफी देर तक परिजनों और पुलिस द्वारा समझाने के बाद वह घर जाने के लिए तैयार हो गई। उक्त बावत थानाध्यक्ष ओमप्रकाश मिश्र ने कहा कि लोकेशन के आधार पर युवती को बरामद कर उसकी मर्जी के आधार पर परिजनों के सिपुर्द किया गया है।

सिद्धार्थनगर के युवक को पुणे में सिर पर हथौड़े से वार: युवक गंभीर, इलाज जारी

बांसी (सिद्धार्थनगर)। बांसी कोतवाली क्षेत्र के फुलवापुर गांव निवासी एक युवक महाराष्ट्र के पुणे में संदिग्ध परिस्थितियों में सिर पर हथौड़े और नोकीले चीज़ से सर में वार कर गंभीर रूप से घायल कर दिया गया था जिसे प्राथमिक उपचार के बाद पुना से एम्बुलेंस से लाकर लखनऊ के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसका इलाज चल रहा है। घटना की सूचना मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया, जबकि गांव में तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। जानकारी के अनुसार, फुलवापुर निवासी बंटीलाल (40) पुत्र अदरफी पूना में भंगार का कार्य करते थे परिजनों के मुताबिक वह बृहस्पतिवार को संदिग्ध परिस्थितियों में गंभीर रूप से घायल हो गए, उनकी हालत चिंताजनक बनी हुई है और लखनऊ के निजी अस्पताल में उनका उपचार चल रहा है,घटना को लेकर परिजनों ने गांव के ही एक व्यक्ति पर संदेह जताया है, जो पुणे में उनके साथ रहता था। हालांकि, इस मामले में अभी तक पुलिस या किसी सक्षम अधिकारी की ओर से किसी की संलिप्तता की आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

दानेश्वर शिव मंदिर का होगा सौंदर्यीकरण

● नगर पंचायत महराजगंज में बने सुप्रसिद्ध प्राचीन दानेश्वर शिव मंदिर के लिए एक करोड़ 95 लाख का बजट आवंटित

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली। कस्बे के प्रसिद्ध प्राचीन दानेश्वर शिव मंदिर के सौंदर्यीकरण और जीर्णोद्धार का मार्ग प्रशस्त हो गया है। नगर विकास मंत्रालय द्वारा इस कार्य के लिए नगर पंचायत को एक करोड़ 95 लाख का बजट आवंटित किया गया है। शनिवार को नगर पंचायत अध्यक्ष सरला साहू एवं चेयरमैन प्रतिनिधि प्रभात साहू ने नगर पंचायत के सभासदों तथा भाजपा पदाधिकारियों के साथ मंदिर में विधिवत पूजा-अर्चना कर सौंदर्यीकरण कार्य की आधारशिला रखी।

श्रद्धालुओं के मंदिर तक सुगम आवागमन के लिए मार्ग, मंदिर के बगल में स्थित सगरा के घाट का पुनरुद्धार, परिक्रमा मार्ग व रंग-रोगन आदि के कार्यो से मंदिर परिसर संवारा जाएगा। चेयरमैन प्रतिनिधि प्रभात साहू ने बताया कि वर्षो पुराने दानेश्वर शिव मंदिर से स्थानीय निवासियों की गहरी आस्था जुड़ी हुई है। यहाँ प्रतिदिन सुबह-शाम श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। इसके साथ ही, स्थानीय लोग सुबह के समय मंदिर परिसर में योगाभ्यास भी करते हैं। इस प्राचीन धरोहर के सौंदर्यीकरण और जीर्णोद्धार होने से कस्बे के लोगों को बेहतर सुविधा मिलेगी जिससे कस्बा वासियों में हर्ष का माहौल है।

गंगा एक्सप्रेसवे पर कुत्ते को बचाने में पलटी कार, मासूम समेत पांच घायल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। गंगा एक्सप्रेसवे पर शनिवार को एक बड़ा सड़क हादसा हो गया। रौसी गांव के पास तेज रफ्तार एसयूवी अचानक सामने आए कुत्ते को बचाने के प्रयास में अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में दो साल की मासूम बच्ची समेत पांच लोग घायल हो गए। एक युवती की हालत गंभीर होने पर उसे जिला अस्पताल रेफर किया गया। महाराष्ट्र के कोल्हापुर स्थित कुमारगंज न्यू नेहरू नगर निवासी शार्दुल (27) मथुरा की एक निजी यूनिवर्सिटी में कार्यरत हैं। वह परिवार के साथ मथुरा-वृंदावन से काशी विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी के दर्शन के लिए जा रहे थे।

कार में शार्दुल (27), काजल (22), भार्गवी (26), दो वर्षीय बच्ची और कमल (28) सवार थे। रौसी गांव के पास अचानक एक कुत्ता कार के सामने आ गया। उसे बचाने के प्रयास में चालक वाहन से नियंत्रण खो बैठा। इससे एसयूवी सड़क पर पलट गई।

हादसे की सूचना मिलते ही पीआरवी और एंबुलेंस मौके पर पहुंची। सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद काजल की गंभीर हालत देखते हुए डॉक्टरों ने उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया। अन्य घायलों को मामूली चोटें आई हैं। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि हादसे में घायल सभी लोगों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया। गंभीर घायल महिला को जिला अस्पताल रेफर किया गया है।

थाना समाधान दिवस में पहुंचीं 10 शिकायतें अधिकांश मामले राजस्व से जुड़े

महराजगंज/रायबरेली। शासन की मंशा के अनुरूप प्रत्येक माह आयोजित होने वाले थाना समाधान दिवस के क्रम में शनिवार को कोतवाली महराजगंज परिसर में समाधान दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता नायब तहसीलदार वंदना वर्मा ने की। समाधान दिवस के दौरान फरियादियों की समस्याओं को गंभीरता से सुना गया तथा संबंधित अधिकारियों को शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण के निर्देश दिए गए। इस अवसर पर कुल 10 शिकायती पत्र प्राप्त हुए, जिनमें 09 मामले राजस्व विभाग तथा 01 मामला पुलिस विभाग से संबंधित था। अध्यक्षता कर रहीं नायब तहसीलदार वंदना वर्मा ने कहा कि शासन की प्राथमिकता है कि आमजन की शिकायतों का निष्पक्ष, पारदर्शी एवं शीघ्र निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। इसके लिए राजस्व एवं पुलिस विभाग की संयुक्त टीम को समन्वय बनाकर कार्य करने के निर्देश दिए गए। इस मौके पर कोतवाली प्रभारी जगदीश यादव, राजस्व निरीक्षक मोहम्मद अहमद, राजस्व निरीक्षक राकेश कुमार, लेखपाल अमित शुक्ला, संतोष यादव, संदीप यादव, पीयूष शुक्ला राजेश कुशवाहा नीतू सिंह, सहित थाना समाधान दिवस में राजस्व एवं पुलिस विभाग के अधिकारी तथा कर्मचारी मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

फूलन देवी की पुण्यतिथि पर परिवर्तन का संदेश

कानपुर। समाजवादी पार्टी की नेत्री तथा पीडीए की पूर्व सांसद फूलन देवी की पच्चीसवीं पुण्यतिथी पर बौद्धिक सेमिनार सपा हाल में सपा अध्यक्ष हाजी फ़ज़ल महमूद की अध्यक्षता मे आरंभ हुआ। जिसका संचालन महानगर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष शैलेंद्र यादव मिन्टू ने किया। सर्वप्रथम अध्यक्ष हाजी फ़ज़ल महमूद ने वीरांगना फूलन देवी निषाद पूर्व सांसद के चित्र पर माल्यार्पण कर भावभीनी श्रदासुमन अर्पित करते हुए सम्बोधन मे कहा कि वीरांगना फूलन देवी जी अन्याय के विरुद्ध संघर्षरत रही उन्होने गरीबों,पिछड़ो , दलितों पर ज्यादती के विरुद्ध संघर्ष अग्रणी महिलाओं के सम्मान की रक्षा करते हुए मिर्जापुर मे आदिवासियो के सम्मान को सुरक्षित रखते हुए अग्रणी भूमिका निभाई। अध्यक्ष हाजी फजल महमूद ने सम्बोधन मे कहा कि फूलन देवी की नीतियों को अन्याय के विरुद्ध जनसंदेश देकर 2027 मे परिवर्तन का सन्देश देकर अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनायेंगे। सपा अध्यक्ष हाजी फ़ज़ल महमूद ने सम्बोधन मे कहा कि सपा के द्वारा आयोजित सद्बुद्धि महायज्ञ से भाजपा सरकार की बुध्दि खुली और धर्मेन्द्र प्रधान को इस्तीफा देना पड़ा।

घाटमपुर में साइबर अपराध के खिलाफ एसीपी सख्त

कानपुर ग्रामीण। घाटमपुर में साइबर अपराध के खिलाफ शिकंजा कसने के लिए पुलिस ने अपना अभियान तेज कर दिया है। थाना रेउना क्षेत्र में संचालित कथित, किसी जामताड़ा नेटवर्क का खुलासा करने के बाद अब पुलिस की नजर घाटमपुर क्षेत्र 34 संदिग्ध म्यूल खातों पर है। इन खातों के माध्यम से संदिग्ध धनराशि के लेन देन की शिकायतें सामने आने के बाद, पुलिस ने विस्तृत जांच शुरू कर दी है, जांच की पूरी प्रक्रिया एसीपी घाटमपुर कृष्ण कांत यादव की निगरानी में कराई जा रही है। एसीपी कृष्ण कांत यादव ने बताया कि पुलिस को प्रतिबिंब पोर्टल के माध्यम से घाटमपुर क्षेत्र के 34 संदिग्ध म्यूल खातों की जानकारी प्राप्त हुई है। इन खातों में साइबर ठगी से जुड़े संदिग्ध लेन देन की शिकायतें दर्ज हैं। पुलिस ने संबंधित बैंकों से खातों के स्टेट मेन्ट, केवाईसी विवरण,और ट्रांजेक्शन रिकार्ड तलब किए गए हैं, जांच के दौरान यह देखा जा रहा है, कि खातों में कितनी धनराशि जमा हुई हैं,कितनी बार कितनी बार ट्रांजेक्शन हुएं,और रकम किन खातों में भेजी गई।

बिहार बंद के बाद बड़ा एक्शनः 423 छात्र हिरासत में, सिवान में 24 घंटे के लिए इंटरनेट बंद

पटना। नीट पेपर लीक के विरोध में शनिवार को छात्र संगठनों के बिहार बंद के दौरान राज्यभर से 423 छात्रों को पुलिस ने हिरासत में लिया। प्रदर्शन के दौरान हुई गतिविधियों की पुलिस मुख्यालय स्तर से लगातार निगरानी की जाती रही। देर शाम तक सभी जिलों से बंद और प्रदर्शन से संबंधित रिपोर्ट भी तलब की गई। सिवान में हुए उपद्रव के बाद गृह विभाग ने जिले में 24 घंटे के लिए इंटरनेट सेवा बाधित करने का निर्णय लिया। आपत्तिजनक पोस्ट और अफवाहों के प्रसार को रोकने के उद्देश्य से 25 जुलाई की शाम साढ़े पांच बजे से 26 जुलाई की शाम साढ़े पांच बजे तक इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म पर रोक लगाई गई है। इस अवधि में फेसबुक, वाट्सएप, एक्स, इंस्टाग्राम और यूट्यूब समेत सभी तरह के इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म पर रोक रहेगी। इसके अलावा बैंकिंग, रेलवे और सरकारी इंटरनेट सेवाओं को छोड़कर सभी तरह की ब्राडबैंड कम्युनिकेशन सर्विस भी बाधित रहेगी। यह निर्णय सिवान के डीएम और एसपी की रिपोर्ट के आधार पर लिया गया है। इसके पूर्व गृह विभाग ने मुजफ्फरपुर और औरंगाबाद के कुछ क्षेत्रों में भी इंटरनेट सेवा बाधित की थी। हालांकि वहां स्थिति सामान्य होने के बाद शुक्रवार की देर रात इंटरनेट सेवा पर लगी रोक वापस ले ली गई। बिहार बंद के दौरान पुलिस मुख्यालय की ओर से सभी जिलों की स्थिति पर नजर रखी गई और अधिकारियों से लगातार जानकारी ली जाती रही।

लातेहार में 878 मतदाताओं पर लटक गई वोटर लिस्ट से बाहर होने की तलवार

BLO को नहीं दिए हस्ताक्षर, प्रशासन की आखिरी चेतावनी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लातेहार, झारखंडः- लातेहार जिले में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR-2026) के दौरान बड़ा मामला सामने आया है। जिले के 878 मतदाताओं ने गणना प्रपत्र (Enumeration Form) लेने के बावजूद उस पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया है। अब जिला प्रशासन ने साफ चेतावनी दी है कि यदि हस्ताक्षरित प्रपत्र जल्द जमा नहीं किए गए तो संबंधित मतदाताओं के नाम के सामने 'Refuse to Sign' दर्ज किया जाएगा और उनका नाम प्रारूप मतदाता सूची में शामिल नहीं हो सकेगा।

मुख्य बातें

878 मतदाताओं ने गणना प्रपत्र पर हस्ताक्षर नहीं किए।

बीएलओ ऐप पर डिजिटाइजेशन की प्रक्रिया हस्ताक्षर के बिना पूरी नहीं होगी।

नाम के सामने 'Refuse to Sign' दर्ज किया जाएगा।

प्रारूप मतदाता सूची से नाम छूटने का खतरा।

जिला प्रशासन ने तुरंत हस्ताक्षर कर प्रपत्र जमा करने की अपील की।

क्या है पूरा मामला?

भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली के निर्देशानुसार जिले में विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR-2026) के तहत मतदाताओं के गणना प्रपत्रों का डिजिटाइजेशन किया जा रहा है। बीएलओ घर-घर जाकर मतदाताओं से गणना प्रपत्र प्राप्त कर BLO App के माध्यम से उनका डिजिटाइजेशन कर रहे हैं। जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त ने बताया कि अधिकांश मतदाताओं ने प्रक्रिया पूरी कर दी है, लेकिन कुछ मतदान केंद्रों पर बड़ी संख्या में मतदाताओं ने हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया।

किन मतदान केंद्रों पर सबसे ज्यादा मामले?

मतदान केंद्र संख्या 43 (उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय, बिरबीर - गांव रोन्हे): 112 मतदाता

मतदान केंद्र संख्या 175 (उत्क्रमित मध्य विद्यालय, कैमा): 568 मतदाता

मतदान केंद्र संख्या 266 (उत्क्रमित मध्य विद्यालय, डडैया - साहू टोला, पहाड़ टोला): 198 मतदाता

प्रशासन की सख्त चेतावनी

जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने स्पष्ट किया है कि हस्ताक्षरित गणना प्रपत्र मिलने के बाद ही BLO App पर मतदाता का विवरण दर्ज कर डिजिटाइजेशन पूरा किया जा सकता है। यदि कोई मतदाता हस्ताक्षरित प्रपत्र जमा नहीं करता है तो आयोग के निर्देशानुसार उसके नाम के सामने 'Refuse to Sign' अंकित किया जाएगा। इसके परिणामस्वरूप उसका नाम प्रारूप मतदाता सूची में शामिल नहीं हो पाएगा और आगे की कार्रवाई निर्वाचन आयोग के नियमों के अनुसार होगी। जिला प्रशासन ने सभी संबंधित मतदाताओं से आग्रह किया है कि वे बिना देरी किए अपने गणना प्रपत्र पर हस्ताक्षर कर संबंधित बीएलओ को सौंप दें, ताकि उनका नाम मतदाता सूची में सुरक्षित रहे और वे अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें। मतदाता सूची में नाम दर्ज होना लोकतंत्र की पहली शर्त है। यदि किसी कारणवश हस्ताक्षरित गणना प्रपत्र जमा नहीं होता है, तो भविष्य में मतदान का अधिकार प्रभावित हो सकता है। ऐसे में संबंधित मतदाताओं को अफवाहों से बचते हुए समय रहते प्रक्रिया पूरी कर लेनी चाहिए।

सड़क दुर्घटना में दो घायल, एक रेफर

नारायणपुर, जामताड़ा, झारखंडः- गोविंदपुर साहिबगंज हाईवे पर नारायणपुर के दलदला के पास सड़क दुर्घटना में नारायणपुर मंडल अध्यक्ष बलदेव हांसदा और शिवचरण हांसदा घायल हो गए हैं। घटना शनिवार दोपहर बाद तीन बजे की है। जानकारी के अनुसार दोनों बाइक से अपने घर से नारायणपुर आ रहे थे दलदला मोड़ के समीप एक चार चक्का वाहन ने बाइक सवार को अपनी चपेट में ले लिया जिससे दोनों गिरकर घायल हो गए। दोनों को तत्काल उपचार के लिए का प्राथमिक उपचार नारायणपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। यहां प्राथमिक उपचार के बाद शिवचरण हांसदा को बेहतर इलाज के लिए धनबाद रेफर किया गया है। बलदेव हांसदा की पीठ में और शिवचरण हांसदा के कंधे में चोट आई है। मौके पर भाजपा नेता तरुण कुमार गुप्ता व अन्य पहुंचे तथा घायलों का हालचाल जाना। ईश्वर से शीघ्र स्वस्थ होने की कामना भी की है।

बिजली ट्रांसफार्मर चोरी होने से महीनों से बाधित है बिजली आपूर्ति

बिजली के बिना अंधेरे में टोलेवासियों की बढ़ी मुश्किलें

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पाकुड़िया, पाकुड़, झारखण्डः- प्रखण्ड मुख्यालय पाकुड़िया से 12 किलोमीटर दूर महुलपहाड़ी पंचायत के ग्राम बालीडीह के जेटके टोला में बिजली ट्रांसफार्मर चोरी होने से टोले में महीनों से बिजली आपूर्ति बाधित है। वर्षा भरी रातों में अंधेरा पसरा रहने से लोगों, विशेषकर छात्र-छात्राओं की मुश्किलें बढ़ गई हैं। इससे टोलेवासियों की चिंता भी बढ़ती दिख रही है। बीते शनिवार को टोले के लोगों ने बताया कि इस टोले का बिजली ट्रांसफार्मर लगभग छह माह पहले चोरी हो गया था। इसके बाद भी अब तक नया ट्रांसफार्मर नहीं लगाया गया है, जिससे लोगों की परेशानी लगातार बढ़ रही है। टोले के लोगों ने एक स्वर में कहा कि खेती का समय है और वर्षा के मौसम में अंधेरा रहने से सांप-बिच्छुओं का डर बना रहता है। वहीं बिजली नहीं रहने से विद्यार्थियों की पढ़ाई भी प्रभावित हो रही है। ग्रामीणों ने बताया कि बालीडीह गांव में दो ट्रांसफार्मर लगे हैं, लेकिन जेटके टोला में लगा 10 केवी का ट्रांसफार्मर चोरी हो गया है, जिससे उनकी परेशानी बढ़ गई है। टोले के लोगों ने बताया कि उन्होंने विधायक प्रोफेसर स्टेफन मरांडी को इसकी सूचना दी है, परंतु अब तक नया ट्रांसफार्मर नहीं लगाया गया है। इससे सभी ग्रामीण चिंतित हैं। समाजशास्त्रियों का मानना है कि बिजली सामाजिक प्रगति का एक प्रमुख आधार है और वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक समय में इसकी आवश्यकता कई गुना बढ़ गई है। झारखण्ड राज्य के गठन के बाद प्रखण्ड के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर सड़कों का निर्माण होने से आवागमन की सुविधा बढ़ी है।

इसके साथ ही व्यापारिक गतिविधियों में भी वृद्धि हुई है, जिससे बिजली की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। बहरहाल, महीनों से ट्रांसफार्मर के अभाव में टोले की बिजली आपूर्ति बाधित रहने से लोगों की मुश्किलें लगातार बढ़ रही हैं। टोलेवासियों ने विधायक प्रोफेसर स्टेफन मरांडी से शीघ्र नया ट्रांसफार्मर लगवाकर समस्या का समाधान कराने की मांग की है।

धार्मिक गांव में श्रद्धा और उल्लास के साथ संपन्न हुई माता शीतला देवी की वार्षिक पूजा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

करौं, देवघर, झारखंडः- शनिवार को अनुमंडल के करों प्रखंड के धार्मिक गांव स्थित स्थानीय बाबा धर्मराज परिसर में माता शीतला देवी की वार्षिक पूजा श्रद्धा, भक्ति और पूर्ण विश्वास के साथ संपन्न हुई। पूजा का आयोजन पंडित कालीचरण दास आचार्य के नेतृत्व में किया गया। इस दौरान पुजारी श्यामापद बनर्जी, हारू शर्मा, आलोक आचार्य, पीके आचार्य एवं प्रभात आचार्य ने पूजा-अर्चना में सहयोग किया। पूजा के अवसर पर शीतला देवी पाठ, हवन एवं महायज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें विधि-विधान और वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पाँच हजार बेलपत्र अर्पित किए गए। पूरे क्षेत्र में 'जय माता शीतला' के जयघोष से वातावरण भक्तिमय हो उठा। पंडित कालीचरण दास आचार्य ने अपने प्रवचन में माता शीतला की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि श्रद्धा एवं विश्वास के साथ माता की पूजा करने से महामारी, चेचक सहित विभिन्न रोगों और संकटों से रक्षा होती है तथा जीवन में सुख-समृद्धि का वास होता है। इससे पूर्व गाजे-बाजे और संकीर्तन के साथ भक्तगण आचार्य टोला स्थित नारायण ठाकुर के घर से माता शीतला की प्रतिमा को शोभायात्रा के रूप में लाकर बाबा धर्मराज मंदिर परिसर में स्थापित किया। पूजा के उपरांत श्रद्धालुओं के बीच खीर प्रसाद का वितरण किया गया। प्रसाद ग्रहण करने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। इस अवसर पर शीतला पूजा समिति के पदाधिकारी, सदस्य एवं दर्जनों स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

परियोजना बालिका उच्च विद्यालय में छात्राओं को कानून और सुरक्षा के प्रति किया गया जागरूक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बरही, हजारीबाग, झारखंडः- परियोजना बालिका उच्च विद्यालय, बरही में बरही अनुमंडल पुलिस आपके द्वार कार्यक्रम के तहत छात्राओं के बीच जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को उनकी सुरक्षा, कानूनी अधिकारों तथा आपातकालीन परिस्थितियों में पुलिस सहायता प्राप्त करने के तरीकों की जानकारी देना था।कार्यक्रम में बरही एसडीपीओ राधा प्रेम किशोर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ पुनि सह थाना प्रभारी बिनोद कुमार, महिला थाना प्रभारी कुमारी राधा रागिनी, स्थानीय मुखिया यास्मीन तब्बसुम, महिला थाना से ब्यूटी कुमारी, विद्यालय प्रबंधन समिति के उपाध्यक्ष भारत निषाद सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता व धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय के प्रधानाध्यापक रविकांत ओम ने किया, जबकि मंच संचालन पूर्व विद्यालय प्रबंधन समिति अध्यक्ष प्रमोद विश्वकर्मा ने किया।जागरूकता कार्यक्रम के दौरान छात्राओं को डायल-112 आपातकालीन सेवा, पॉक्सो एक्ट, साइबर सुरक्षा, महिला सुरक्षा, तथा गुड टच और बैड टच के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही उन्हें ऑनलाइन ठगी, सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग और किसी भी प्रकार की परेशानी होने पर तत्काल पुलिस से संपर्क करने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर एसडीपीओ राधा प्रेम किशोर ने कहा कि छात्राओं को अपने अधिकारों और कानून की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की छेड़छाड़, उत्पीड़न या अपराध की स्थिति में डरने के बजाय तुरंत पुलिस को सूचना दें। पुलिस हर परिस्थिति में उनकी सुरक्षा और सहायता के लिए तत्पर है। एसडीपीओ ने कहा कि आज के दौर में मोबाइल फोन शिक्षा, संचार और जानकारी का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यदि इसका सही तरीके से उपयोग किया जाए तो यह विद्यार्थियों के ज्ञान और व्यक्तित्व विकास में काफी सहायक साबित हो सकता है। छात्र-छात्राओं को मोबाइल का उपयोग पढ़ाई, ऑनलाइन शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मोबाइल का दुरुपयोग कई गंभीर समस्याओं को जन्म देता है। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग, फर्जी लिंक पर क्लिक करना, अजनबियों से बातचीत करना, निजी फोटो या जानकारी साझा करना तथा ऑनलाइन गेम और अनावश्यक इंटरनेट उपयोग से साइबर अपराध का खतरा बढ़ जाता है। इससे मानसिक तनाव, समय की बर्बादी और पढ़ाई पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।एसडीपीओ ने छात्राओं से अपील की कि वे मोबाइल का उपयोग जिम्मेदारी और सावधानी के साथ करें। किसी भी संदिग्ध कॉल, मैसेज, लिंक या साइबर ठगी का शिकार होने पर तुरंत पुलिस या साइबर हेल्पलाइन पर सूचना दें। उन्होंने कहा कि डिजिटल युग में जागरूकता और सतर्कता ही सबसे बड़ी सुरक्षा है। पुनि सह थाना प्रभारी बिनोद कुमार ने कहा कि आपातकालीन स्थिति में डायल-112 सबसे तेज और प्रभावी पुलिस सहायता सेवा है। उन्होंने छात्राओं से अपील की कि किसी भी घटना को छिपाने के बजाय तुरंत इसकी सूचना पुलिस को दें, ताकि समय रहते कार्रवाई की जा सके। महिला थाना प्रभारी कुमारी राधा रागिनी ने छात्राओं को पॉक्सो एक्ट, गुड टच और बैड टच के बारे में सरल भाषा में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति अनुचित व्यवहार करता है तो छात्राएं बिना डरे अपने अभिभावकों, शिक्षकों या पुलिस को इसकी जानकारी दें। उन्होंने आत्मविश्वास के साथ अपनी सुरक्षा के प्रति सजग रहने का संदेश दिया। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक सहजाद अहमद, संजय पासवान, नीलम कुमारी, एसडीपीओ कार्यालय रीडर दिनेश कुमार सहित अन्य शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के अंत में छात्राओं ने सुरक्षा संबंधी विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछे, जिनका पुलिस अधिकारियों ने विस्तार से उत्तर देकर उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया।

पद्मश्री महावीर नायक ने उत्कृष्ट प्रस्तुति हेतु तरंग ग्रुप के कलाकारों को किया सम्मानित

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हजारीबाग, झारखंडः- कला, संस्कृति और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय सांस्कृतिक संस्था तरंग ग्रुप हजारीबाग के कलाकारों को झारखंड के प्रसिद्ध नागपुरी लोकगायक एवं पद्मश्री सम्मान से अलंकृत महावीर नायक के द्वारा सम्मानित किया गया। कलाकारों को यह सम्मान कल रांची में कला संस्कृति विभाग,झारखंड सरकार द्वारा आयोजित जगन्नाथ महोत्सव 2026 में उनकी प्रभावशाली सांस्कृतिक प्रस्तुति और सामाजिक सरोकारों से जुड़े संदेश को मंच के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया। इस अवसर पर तरंग ग्रुप द्वारा पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए एक विशेष नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसे धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती तथा राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने के गौरवपूर्ण अवसर को समर्पित किया गया। नृत्य-नाटिका के माध्यम से कलाकारों ने झारखंड की धरती, जंगल और प्रकृति के संरक्षण के साथ-साथ देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम का संदेश भी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। प्रस्तुति में भगवान बिरसा मुंडा के संघर्ष, प्रकृति और जल-जंगल-जमीन के प्रति उनके समर्पण को केंद्र में रखते हुए वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को दर्शाया गया। कलाकारों ने नृत्य, अभिनय और संगीत के सुंदर समन्वय के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया कि जंगल और प्रकृति केवल हमारे जीवन का आधार ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और आने वाली पीढ़ियों की धरोहर भी हैं। नृत्य-नाटिका के माध्यम से 'वंदे मातरम्' की भावना को भी पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्रप्रेम से जोड़ा गया।कलाकारों की प्रस्तुति में मातृभूमि के प्रति प्रेम, प्रकृति के प्रति सम्मान और देश की एकता का भाव देखने को मिला। मंच पर प्रस्तुत गीत, नृत्य और अभिनय ने दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया और पूरी प्रस्तुति के दौरान कलाकारों ने अपनी शानदार प्रतिभा से दर्शकों की खूब तालियां बटोरीं। कार्यक्रम के दौरान पद्मश्री महावीर नायक ने तरंग ग्रुप के कलाकारों की प्रस्तुति की सराहना करते हुए कहा कि कला केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में जागरूकता और सकारात्मक बदलाव लाने का सशक्त माध्यम भी है। उन्होंने कहा कि युवा कलाकारों को अपनी कला के माध्यम से समाज और झारखंड की समृद्ध संस्कृति को आगे बढ़ाने का निरंतर प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कलाकारों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि झारखंड की लोकभाषा, लोकगीत, लोकनृत्य और परंपराएं हमारी पहचान हैं। नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ने और सामाजिक विषयों के प्रति जागरूक करने में कलाकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने तरंग ग्रुप के कलाकारों को भविष्य के लिए शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर तरंग ग्रुप के निदेशक अमित कुमार गुप्ता ने पद्मश्री महावीर नायक के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके हाथों सम्मान प्राप्त करना संस्था और कलाकारों के लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि तरंग ग्रुप हमेशा से कला और संस्कृति के संरक्षण के साथ-साथ सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में कार्य करता रहा है। उन्होंने कहा कि बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती और वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने के ऐतिहासिक अवसर को पर्यावरण संरक्षण के संदेश से जोड़कर नृत्य-नाटिका प्रस्तुत करने का उद्देश्य नई पीढ़ी को अपने इतिहास, संस्कृति, देश और प्रकृति के प्रति जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि धरती आबा बिरसा मुंडा का जीवन हमें प्रकृति और अपनी धरती की रक्षा करने की प्रेरणा देता है और यही संदेश आज के समय में भी उतना ही प्रासंगिक है। इस विशेष प्रस्तुति में कलाकारों ने बिरसा मुंडा के संघर्ष, वंदे मातरम् की राष्ट्रभक्ति और पर्यावरण संरक्षण को एक सूत्र में पिरोते हुए दर्शकों के सामने एक भावपूर्ण एवं संदेशपरक नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की। प्रस्तुति ने न केवल झारखंड की गौरवशाली विरासत को मंच पर जीवंत किया, बल्कि समाज को 'पेड़ बचाओ, प्रकृति बचाओ और देश बचाओ' का महत्वपूर्ण संदेश भी दिया। तरंग ग्रुप की ओर से कहा गया कि संस्था आने वाले समय में भी कला, संस्कृति, पर्यावरण संरक्षण, नशामुक्ति, महिला सशक्तिकरण और युवा प्रतिभाओं के विकास जैसे विषयों को लेकर लगातार कार्यक्रम आयोजित करती रहेगी और कला के माध्यम से समाज में सकारात्मक संदेश पहुंचाने का प्रयास जारी रखेगी। शामिल कलाकारों में मुख्य रूप से अमित कुशवाहा, पूजा कृति, वर्षा कुमारी, लक्ष्मी यादव, राखी कुमारी, मेघा राज, चांदनी कुमारी, संजना कुमारी, दीप ज्योति, सुप्रिया के साथ अन्य सदस्य शामिल थे।

प्रखंड स्तरीय मेगा सशक्तिकरण शिविर आज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नारायणपुर, जामताड़ा, झारखंडः- प्रखंड परिसर में आयोजित होने वाले प्रखंड स्तरीय मेगा सशक्तिकरण शिविर की तैयारियों को लेकर शनिवार को प्रखंड विकास कार्यालय में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी (बीडीओ) कमलेश कुमार दास ने की। इस दौरान अंचलाधिकारी (सीओ) देवराज गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के पदाधिकारी एवं कर्मी उपस्थित रहे। बैठक में शिविर के सफल आयोजन एवं व्यापक जनसहभागिता सुनिश्चित करने पर विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही विभिन्न विभागों को उनकी जिम्मेदारियां सौंपते हुए अधिक से अधिक ग्रामीणों तक सरकारी योजनाओं का लाभ एवं आवश्यक जानकारियां पहुंचाने का निर्णय लिया गया। शिविर में निशुल्क सेवाओं के प्रभावी संचालन पर भी विशेष जोर दिया गया। बैठक में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डालसा) के अधिकार मित्रों ने भी भाग लिया तथा कार्यक्रम को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग का आश्वासन दिया। जानकारी दी गई कि शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में जामताड़ा न्यायालय के एसीजेएम मोहम्मद नईम अंसारी उपस्थित रहेंगे। वे अपने संबोधन में आम लोगों को सरल एवं सुलभ न्याय व्यवस्था, निःशुल्क कानूनी सहायता तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी देंगे, ताकि जरूरतमंद लोग मुफ्त कानूनी सहायता का लाभ उठा सकें। शिविर के दौरान केंद्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी भी दी जाएगी तथा पात्र लाभुकों को योजनाओं से जोड़ने की पहल की जाएगी। बैठक में जेएसएलपीएस के बीपीएम सूर्यदेव कुमार, स्वास्थ्य विभाग के बीपीएम अखिलेश कुमार, महिला पर्यवेक्षक नियुति दास, पीएलवी प्रदीप रजक, विजय कुमार मंडल, शहादत अली, प्रधान वैद्यनाथ हांसदा, एई कुमार अनुराग, प्रशांत दुबे, विक्की पांडेय, लाल मोहम्मद सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।

हजारीबाग पुलिस ने 139 गुम मोबाइल बरामद कर असली मालिकों को लौटाए

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हजारीबाग, झारखंडः- झारखंड पुलिस मुख्यालय के निर्देश पर हजारीबाग पुलिस ने सीईआईआर पोर्टल के माध्यम से गुम हुए मोबाइल फोन की बरामदगी अभियान में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। पुलिस अधीक्षक अमन कुमार के निर्देशन में पिछले दो माह के दौरान जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों से कुल 139 गुम मोबाइल फोन बरामद कर उनके वास्तविक मालिकों को वापस सौंप दिए गए। महानिदेशक एवं पुलिस महानिरीक्षक, झारखंड, रांची के निर्देशानुसार शनिवार को पुलिस कार्यालय, हजारीबाग में एक विशेष शिविर का आयोजन किया गया, जहां बरामद मोबाइल फोन उनके वास्तविक धारकों को विधिवत सौंपे गए। अपना खोया हुआ मोबाइल वापस पाकर लोगों के चेहरे खुशी से खिल उठे और उन्होंने हजारीबाग पुलिस के प्रयासों की सराहना की। मोबाइल बरामदगी अभियान में साइबर थाना और तकनीकी शाखा की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पुलिस ने सीईआईआर पोर्टल और तकनीकी संसाधनों की मदद से विभिन्न स्थानों से मोबाइल फोन का पता लगाकर उन्हें बरामद किया। इसके बाद दस्तावेजों के सत्यापन के उपरांत मोबाइल उनके वास्तविक मालिकों को सौंपे गए। पुलिस अधीक्षक अमन कुमार ने कहा कि गुम हुए मोबाइल फोन केवल एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण नहीं होते, बल्कि उनमें लोगों की महत्वपूर्ण व्यक्तिगत और व्यावसायिक जानकारियां भी सुरक्षित रहती हैं। ऐसे में मोबाइल की बरामदगी लोगों को राहत पहुंचाने का कार्य करती है। उन्होंने कहा कि हजारीबाग पुलिस तकनीक का बेहतर उपयोग कर आम नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए लगातार प्रयासरत है। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि यदि किसी का मोबाइल फोन गुम हो जाए या चोरी हो जाए, तो इसकी सूचना तुरंत संबंधित थाना या सीईआईआर पोर्टल पर दर्ज कराएं। समय पर सूचना मिलने से मोबाइल बरामद होने की संभावना काफी बढ़ जाती है। मोबाइल वितरण कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक अमन कुमार, अमित कुमार (अपर पुलिस अधीक्षक अभियान), पुलिस अवर निरीक्षक दीपक कुमार (साइबर थाना), पुलिस अवर निरीक्षक बिंदेश्वरी महतो (मुफस्सिल थाना) सहित तकनीकी शाखा के पुलिस पदाधिकारी एवं कर्मी उपस्थित रहे।

भदानी नगर पुलिस ने ब्राउन शुगर बेचने वाले तीन तस्कर को किया गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भुरकुंडा, झारखंडः- पतरातू अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी राघवेंद्र शर्मा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर जानकारी देते हुए बताया कि रामगढ़ पुलिस अधीक्षक को 24 जुलाई को एक गुप्त सूचना मिली की तीन व्यक्ति एक बिना नंबर के काले रंग के बजाज मोटरसाइकिल से रामगढ़ की ओर जा रहे हैं द्य उनके पास ब्राउन शुगर होने की संभावना हैद्य अप सूचना के आलोक में रामगढ़ पुलिस अधीक्षक ने पतरातू के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के नेतृत्व में एक विशेष छापामारी दल का गठन कियाद्य पुलिस अधीक्षक द्वारा गठित की गई दल अंचलाधिकारी पतरातु की उपस्थिति में सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु भदानी नगर ओ पी गेट के सामने मुख्य मार्ग पर सघन जांच एवं एंटी क्राइम चेकिंग आरंभ कर दिया द्य इस दौरान उधर से गुजरने वाली सभी दो पहिया वाहनों की जांच आरंभ हो गईद्य इसी क्रम में मतकमा चौक की तरफ से आ रही एक बजाज मोटरसाइकिल को रुकने का इशारा किया गयाद्य पुलिस को देखकर बाइक सवार मोटरसाइकिल को घूमा कर भगाने का प्रयास किया द्य जिन्हें खदेड़ कर पुलिस बल ने पकड़ लिया द्य एनडीपीएस एक्ट के प्रावधानों के तहत अंचलाधिकारी पतरातु की उपस्थिति में विधिवत तलाशी ली गईद्य जांच में 40 पुड़िया जिसका कुल वजन 13.65 ग्राम ब्राउन शुगर बरामद किया गया द्य इसके बाद पकड़े गए व्यक्ति को विधिवत रूप से गिरफ्तार किया गया द्य इस संबंध में पतरातू थाना के भदानी नगर ओ पी में प्राथमिक की दर्ज की गई हैद्य जिन्हें बाद में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है द्य प्रेस कॉन्फ्रेंस में पतरातू के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी ने बताया कि गिरफ्तार किए गए लोगों के पास से ब्राउन शुगर 40 पुड़िया, इलेक्ट्रॉनिक तराजू मशीन,क्रीम रंग का टेप एक बंडल, बिना नंबर का बजाज मोटरसाइकिल और चार मोबाइल फोन जप्त किया गया है द्य उन्होंने बताया कि एजाज अंसारी उर्फ विक्की, अजमत अंसारी और राहुल कुमार बेदिया को गिरफ्तार किया गया हैद्य सभी पतरातू थाना क्षेत्र के रहने वाले बताए गए हैं।

संक्षिप्त खबरें

जगराओं अर्बन एस्टेट की सुविधाएं होंगी बेहतर

लुधियाना। आवास एवं शहरी विकास विभाग की ओर से आम लोगों को बेहतर आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मुख्य प्रशासक, ग्लाडा ने पुडा योजना के तहत जगराओं स्थित शुगर मिल परिसर में 94.72 एकड़ में विकसित अर्बन एस्टेट के विकास कार्यों की समीक्षा की। समीक्षा के दौरान बताया गया कि अर्बन एस्टेट में चारदीवारी नहीं होने के कारण आवंटियों की लंबे समय से सुरक्षा संबंधी मांग लंबित थी। इसे गंभीरता से लेते हुए मुख्य प्रशासक ने चारदीवारी का निर्माण शीघ्र पूरा कराने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि ग्लाडा राष्ट्रीय राजमार्ग तक संपर्क मार्ग की स्वीकृति पहले ही प्राप्त कर चुका है, जबकि वन विभाग से अनापत्ति प्रमाणपत्र (एनओसी) लेने की प्रक्रिया जारी है। इसके अलावा कॉलोनी की मूलभूत सुविधाओं को और बेहतर बनाने के भी निर्देश दिए गए। मुख्य प्रशासक ने संबंधित अधिकारियों को आगामी नीलामी के माध्यम से इस अर्बन एस्टेट के भूखंडों की बिक्री की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि चारदीवारी बनने से मौजूदा आवंटियों की सुरक्षा सुनिश्चित होगी और आम लोगों को भी बेहतर आवासीय भूखंड प्राप्त करने का अवसर मिलेगा।

बिना मान्यता के संचालित हो रहा ग्रीन वैली पब्लिक स्कूल? निर्माणाधीन भवन में चल रहीं कक्षाएं

उचौलिया (खीरी)। थाना क्षेत्र के हरखापुर गांव स्थित ग्रीन वैली पब्लिक स्कूल को लेकर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। स्थानीय लोगों का आरोप है कि विद्यालय बिना मान्यता के संचालित किया जा रहा है। साथ ही निर्माणाधीन भवन में बच्चों की कक्षाएं संचालित की जा रही हैं, जिससे उनकी सुरक्षा को लेकर भी चिंताएं बढ़ गई हैं। ग्रामीणों का कहना है कि विद्यालय भवन का निर्माण कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है, इसके बावजूद वहां नियमित रूप से बच्चों को पढ़ाया जा रहा है। निर्माणाधीन भवन में कक्षाएं संचालित होने से किसी भी अप्रिय घटना की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। यदि विद्यालय वास्तव में बिना मान्यता के संचालित हो रहा है, तो यह शिक्षा विभाग के नियमों के उल्लंघन का मामला हो सकता है। मान्यता प्राप्त करने के लिए विद्यालय को भवन, सुरक्षा, आधारभूत सुविधाओं एवं अन्य निर्धारित मानकों का पालन करना आवश्यक होता है। स्थानीय लोगों ने शिक्षा विभाग से विद्यालय की मान्यता, भवन की सुरक्षा तथा नियमों के अनुपालन की जांच कर आवश्यक कार्रवाई किए जाने की मांग की है।

सावन में श्रद्धालुओं की सुविधा को लेकर प्रशासन सख्त

नीमगांव खीरी। सावन माह में कांवड़ यात्रियों एवं श्रद्धालुओं की सुविधा तथा सुगम आवागमन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मितौली कस्बे में शनिवार को प्रशासन द्वारा अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया। उपजिलाधिकारी संत दास पवार के निर्देश पर नायब तहसीलदार शशांक मिश्रा के नेतृत्व में थाना प्रभारी महेश पाठक, पुलिस बल, राजस्व विभाग एवं लोक निर्माण विभाग की संयुक्त टीम ने सड़क किनारे किए गए अतिक्रमण को हटवाया। अभियान के दौरान सड़क और सार्वजनिक मार्गों को अवरोधमुक्त कराने की कार्रवाई की गई, जिससे सावन माह में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। प्रशासन ने व्यापारियों एवं आम नागरिकों से अपील की कि वे सार्वजनिक मार्गों पर अतिक्रमण न करें और यातायात व्यवस्था बनाए रखने में प्रशासन का सहयोग करें।

गोला मंडी में फिर सजा अवैध कटरवा बाजार

लखीमपुर खीरी। गोला गोकर्णनाथ की सब्जी मंडी में वन विभाग की लगातार कार्रवाई के बावजूद अवैध कटरवा की बिक्री रुकने का नाम नहीं ले रही है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि सुबह से लेकर शाम तक मंडी में खुलेआम कटरवा की खरीद-फरोख्त की जा रही है, जिससे वन विभाग की कार्रवाई की प्रभावशीलता पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। सूत्रों के अनुसार, सुबह के समय बड़ी मात्रा में कटरवा मंडी में पहुंचता है, जबकि शाम करीब 6 बजे टमाटर विक्रेता मोहित राईन द्वारा भी भारी मात्रा में कटरवा बेचे जाने का आरोप लगाया जा रहा है। इसके अलावा मुन्ना, इकबाल, राहत, मुस्तकीम, पप्पू, मंजूर, रिंकू और एक सभासद समेत कई लोगों के नाम भी स्थानीय स्तर पर चर्चा में हैं। इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो सकी है। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब वन विभाग लगातार छापेमारी और कार्रवाई का दावा कर रहा है, तो आखिर इतना अवैध कटरवा मंडी तक पहुंच कैसे रहा है? क्या इस पूरे खेल को किसी का संरक्षण प्राप्त है, या फिर कार्रवाई केवल कागज़ों तक सीमित है?

प्रधान के इस्तीफे का वांगचुक ने स्वागत

सोनम वांगचुक ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे को 'लोकतंत्र की जीत' बताया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने शनिवार को केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे का स्वागत किया और इसे 'लोकतंत्र की जीत' बताया। यह कदम नीट-यूजी 2026 पेपर लीक सहित प्रतियोगी परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं के खिलाफ छात्रों के लंबे आंदोलन के बाद उठाया गया है।

सबका धन्यवाद दिया

गुरुग्राम से मीडिया से बातचीत करते हुए वांगचुक ने सरकार और धर्मेंद्र प्रधान को धन्यवाद दिया तथा देशवासियों, छात्रों और कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) टीम को शांतिपूर्ण आंदोलन के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा, 'मैं सरकार और धर्मेंद्र प्रधान द्वारा उठाए गए कदमों का स्वागत और सम्मान करता हूं, तथा सभी देशवासियों को बधाई देता हूं। यह लोकतंत्र की जीत है जो हमने आज देखी।' वांगचुक ने सीजेपी टीम का विशेष रूप से आभार व्यक्त किया, जिन्होंने इस मुद्दे को सबसे पहले उठाया। साथ ही उन्होंने स्वयंसेवकों, छात्रों, युवाओं और पूरे देश के बुजुर्गों को धन्यवाद दिया, जिन्होंने लोकतंत्र के लिए खड़े होकर शांतिपूर्ण तरीके से आंदोलन किया।

शांति बनाए रखने की अपील की

उन्होंने कहा, 'मैं उन सबका सम्मान करता हूं, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने शांति बनाए रखी। मुझे उम्मीद है कि हम आगे भी यह शांति बनाए रखेंगे और भविष्य में कहीं कोई गलत काम नहीं होगा।' बता दें कि वांगचुक ने हाल ही में 26 दिनों का अनशन समाप्त किया था। उन्होंने शिक्षा सुधारों की मांग को जारी रखते हुए कहा, 'राष्ट्र केवल इस्तीफे से नहीं बनता। शिक्षा में सुधार होना चाहिए और उस पर आगे काम होना चाहिए। मुझे पूरी उम्मीद है कि सरकार ने जिस उदारता से यह कदम उठाया है, वही उदारता सुधार प्रयासों में भी दिखेगी। सिर्फ शिक्षा में ही नहीं बल्कि शासन में भी सुधार दिखना चाहिए।' उन्होंने आशा व्यक्त की कि अब देश 'प्यार और स्नेह से, न कि डर से चलाया जाएगा' और 'सत्य के रास्ते पर, न कि अन्याय के रास्ते पर' आगे बढ़ाया जाएगा। धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा सीजेपी के नेतृत्व वाले राष्ट्रव्यापी आंदोलन और वांगचुक के समर्थन के बाद आया है। इस आंदोलन ने परीक्षा प्रणाली में बार-बार हो रही गड़बड़ियों और जवाबदेही की कमी को उजागर किया था।

अवैध तरीके से संचालित शिवमाया हॉस्पिटल में ऑपरेशन तक होने का आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखीमपुर खीरी। जनपद के रामापुर कस्बे में स्वास्थ्य विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। आरोप है कि कस्बे में स्थित शिवमाया हॉस्पिटल के नाम से संचालित परिसर में बिना वैध पंजीकरण और बिना प्रशिक्षित चिकित्सकों के अस्पताल का संचालन किया जा रहा है। इतना ही नहीं, सूत्रों के अनुसार यहां मरीजों का उपचार ही नहीं बल्कि ऑपरेशन तक किए जाने की चर्चाएं क्षेत्र में आम हैं। स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन की ओर से अब तक कोई प्रभावी कार्रवाई न होना कई सवालों को जन्म दे रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि अस्पताल का संचालन वैधानिक मानकों के अनुरूप नहीं है तो आखिर किसके संरक्षण में यह गतिविधियां चल रही हैं? क्या विभागीय अधिकारियों को इसकी जानकारी नहीं है, या फिर सब कुछ जानकर भी आंखें मूंद ली गई हैं? स्वास्थ्य सेवाओं के नाम पर यदि मरीजों की जान से खिलवाड़ किया जा रहा है तो यह केवल नियमों का उल्लंघन नहीं बल्कि एक गंभीर अपराध भी है। बिना योग्य चिकित्सक और आवश्यक सुविधाओं के ऑपरेशन जैसी प्रक्रियाएं मरीजों के जीवन को सीधे खतरे में डाल सकती हैं। सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब सरकार अवैध अस्पतालों और झोलाछाप चिकित्सा के खिलाफ लगातार अभियान चलाने के दावे कर रही है, तब रामापुर में कथित रूप से इस तरह का अस्पताल खुलेआम कैसे संचालित हो रहा है।

चिंतपूर्णी मार्ग की यातायात व्यवस्था परखी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

होशियारपुर। माता चिंतपूर्णी मेले और आगामी त्योहारों को देखते हुए विधायक ब्रह्म शंकर जिम्पा ने अधिकारियों के साथ माता चिंतपूर्णी मुख्य मार्ग का निरीक्षण कर यातायात व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने श्रद्धालुओं की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं समय रहते पूरी करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान विधायक जिम्पा ने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों को सड़क की तकनीकी कमियों और दुर्घटना संभावित स्थानों को तत्काल दुरुस्त करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जनसुरक्षा से जुड़े मामलों में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने बताया कि मंगूवाल नाके के पास हुए एम्बुलेंस हादसे के बाद कई सुधार कार्य प्रस्तावित हैं, जिन्हें प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाना चाहिए, ताकि श्रद्धालुओं और अन्य यात्रियों को सुरक्षित एवं सुगम आवागमन मिल सके। साथ ही सड़क किनारे पड़े मलबे को शीघ्र हटाने के निर्देश भी दिए। विधायक जिम्पा ने कहा कि पंजाब सरकार ने आदमपुर से चौहाल तक लगभग 14.25 करोड़ रुपये की लागत से सड़क का नवीनीकरण कराया है, जिससे स्थानीय उद्योगों में कार्यरत हजारों कर्मचारियों और आम नागरिकों को बेहतर परिवहन सुविधा मिल रही है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि माता चिंतपूर्णी मेले शुरू होने से पहले सभी दुर्घटना संभावित स्थलों (ब्लैक स्पॉट) और अन्य कमियों को दूर कर लिया जाए। इस अवसर पर अपर उपायुक्त (विकास) राकेश कुमार मीणा, उपमंडल अधिकारी (एसडीएम) परमप्रीत सिंह, सहकारी बैंक के अध्यक्ष विक्रम शर्मा, पार्षद सुरिंदर कुमार, पार्षद प्रवीण सैनी तथा राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिशासी अभियंता राजिंदर कुमार सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

शिक्षा मंत्री के इस्तीफे पर अरविंद केजरीवाल का पहला रिएक्शन, Gen-Z को दी बधाई

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में चल रहे कॉकरोच जनता पार्टी के प्रदर्शन के बीच शनिवार को केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। वहीं, शिक्षा मंत्री के इस्तीफे पर दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का पहला रिएक्शन सामने आया है। पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे पर पूरे देश को बधाई। उन्होंने Gen-Z को भी बधाई दी है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि लोकतंत्र के लिए यह बड़ी जीत।

इस्तीफे की मांग पूरी

बता दें कि कॉकरोच जनता पार्टी के संस्थापक अभिजीत दीपके पिछले एक महीने से अपने समर्थकों के साथ दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर हैं। वे नीट पेपर लीक मामले को लेकर शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग कर रहे थे। सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने भी शिक्षा मंत्री के इस्तीफे पर रिएक्शन दिया है। उन्होंने कहा कि यह लोकतंत्र की जीत है।

कमिश्नर ओजस्वी अलंकार ने 580 MLD वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट की प्रोग्रेस का किया रिव्यू

हाई क्वालिटी स्टैंडर्ड बनाए रखते हुए काम में और तेज़ी लाने के निर्देश दिए

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लुधियाना- म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन कमिश्नर ओजस्वी अलंकार, IAS ने वर्ल्ड बैंक और AIIB से फाइनेंशियल मदद से चल रही लुधियाना कैनाल वॉटर सप्लाई स्कीम के तहत बिलगा गांव में बन रहे 580 MLD वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट का डिटेल्ड इंस्पेक्शन किया। इस विज़िट का मकसद प्रोजेक्ट की ओवरऑल प्रोग्रेस का रिव्यू करना, कंस्ट्रक्शन के कामों की क्वालिटी का रिव्यू करना और सभी चल रहे कामों को तय समय में पूरा करना पक्का करना था। इस विज़िट के दौरान, प्रोजेक्ट मैनेजर इंजीनियर गुरविंदर पाल सिंह, एग्जीक्यूटिव इंजीनियर (पाइपलाइन) इंजीनियर अमरजीत सिंह, एग्जीक्यूटिव इंजीनियर (WTP) इंजीनियर रोहित माली, प्रोजेक्ट इम्प्लीमेंटेशन यूनिट के अधिकारी और एग्जीक्यूटिंग एजेंसी के रिप्रेजेंटेटिव भी मौजूद थे। विज़िट के दौरान, कमिश्नर ने इनलेट पॉइंट, बन रहे मेन ट्रीटमेंट यूनिट्स समेत अलग-अलग स्ट्रक्चर का इंस्पेक्शन किया और पूरे वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट में सिविल कामों की प्रोग्रेस का रिव्यू किया। उन्होंने साइट पर अपनाए जा रहे क्वालिटी कंट्रोल सिस्टम का भी रिव्यू किया, जिसमें कंक्रीट क्यूब टेस्ट, कंस्ट्रक्शन मटीरियल की टेस्टिंग और ओवरऑल क्वालिटी एश्योरेंस प्रोसीजर शामिल थे, ताकि अप्रूव्ड इंजीनियरिंग स्पेसिफिकेशन्स और प्रोजेक्ट पैरामीटर्स का पूरा पालन पक्का हो सके। कमिश्नर ने वर्कर्स के रेजिडेंशियल कैंप का भी इंस्पेक्शन किया और अधिकारियों को साफ-सफाई, हाइजीन, सैनिटेशन और वर्कर वेलफेयर के सबसे ऊंचे स्टैंडर्ड बनाए रखने का निर्देश दिया। मानसून के मौसम में काम करने के सुरक्षित माहौल के महत्व पर जोर देते हुए, उन्होंने प्रोजेक्ट टीम को बचाव के उपायों को और मजबूत करने, साइट पर पानी की आसान निकासी पक्का करने, सही सैनिटेशन बनाए रखने और सभी सुरक्षा इंतजाम मजबूत रखने का निर्देश दिया, ताकि कंस्ट्रक्शन के काम में किसी भी तरह से रुकावट न आए।

किसानों पर मंडराया संकट: बहेड़ी और नवाबगंज चीनी मिलें बिकने की कगार पर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बरेली। वर्षों तक किसानों की आर्थिक मजबूती का आधार जिले की चीनी मिलें अब बिकने के कगार पर पहुंच चुकी हैं। इनके प्रबंधन ने किसानों का करोड़ों रुपये का भुगतान नहीं किया। नीलामी के बाद तय है कि ये मिलें फिर नहीं चल पाएंगीं। किसानों के हितों के लिए सरकार किसानों को बकाया भुगतान कर दे और खुद इन मिलों का संचालन संभालें... ऐसा हो सकता है जब स्थानीय जनप्रतिनिधि और अधिकारी इस बात को समझें, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा क्योंकि कोई इसमें रुचि नहीं ले रहा है। वजह साफ है, उन पर भूमाफियाओं का दबाव है या फिर उनकी सीधी साठगांठ हो गई है। तभी तो लंबे समय से इन चीनी मिलों की भूमि बेचने के प्रयास किए जा रहे हैं। अगर बहेड़ी और नवाबगंज की चीनी मिलें बंद हुई तो करीब 80 हजार किसान बर्बाद हो जाएंगे। बहेड़ी : केसर चीनी मिल की स्थापना 1933 में किलाचंद समूह ने कराई थी। स्टीम इंजन हालैंड से आयात किया गया था। यह क्षेत्र की सबसे पुरानी और प्रमुख औद्योगिक इकाइयों में से एक है। शुरूआत में चीनी मिल की पेराई क्षमता 800 टन प्रतिदिन थी, जिसे बाद में बढ़ाकर 7200 टन प्रतिदिन कर दिया गया था। मिल केवल चीनी उत्पादन तक सीमित नहीं है, गन्ने के उप-उत्पादों शीरा और खोई का उपयोग किया। परिसर में डिस्टिलरी (शराब और इथेनाल) और खोई आधारित कोजेनरेशन पावर प्लांट भी संचालित किए जा रहे हैं। चीनी मिल पर किसानों का 146 करोड़ रुपये का गन्ना मूल्य बकाया होने के कारण मिल प्रबंधन और किसानों के बीच तनाव की स्थिति बनी। बकाया गन्ना मूल्य भुगतान कराने के लिए मिल प्रबंधन के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई गई। आरसी जारी कर संपत्तियां कुर्क कर नीलाम की जाने लगी है। तहसील प्रशासन ने 31 मई को केसर चीनी मिल की 11.447 हेक्टेयर जमीन 28.05 करोड़ रुपये में नीलाम की थी, जिसे कारोबारी आदेश पांडे ने खरीदा था। इस पर जागरण ने सवाल उठाया तो किसानों और राजनेताओं ने भी 100 करोड़ की संपत्ति को मिलीभगत से कम कीमत में बेचने का मुद्दा उठाया। गन्ना समिति बोर्ड ने पुरानी नीलामी रद कर नए सिरे से प्रक्रिया चलाने की मांग की। इसके बाद प्रशासन बैकफुट पर आया और अधिक बोली लगाने वालों को आमंत्रित किया। जिसके बाद नए खरीदारों ने डिमांड ड्राफ्ट जमा किए हैं। अब एक अगस्त को नया सर्किल रेट जारी होने के बाद दोबारा नीलामी की तैयारी की जा रही है, लेकिन चीनी मिल को बचाने की दिशा में कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है। नवाबगंज : ओसवाल चीनी मिल की स्थापना 1996 में हुई थी, इसके लिए पूर्व मंत्री भगवत सरन गंगवार ने अतिरिक्त प्रयास किया था।

पेराई क्षमता 300 टन प्रतिदिन है। चीनी मिल का संचालन शुरू होने के बाद क्षेत्रीय किसानों की आर्थिक उन्नति हुई थी। क्षेत्र में गन्ने का रकबा बढ़ा और करीब 40 हजार किसान परिवार चीनी मिल से जुड़ गए। मिल में 50 स्थायी कर्मचारियों के अलावा 300 सीजनल कर्मचारी भी कार्य करते रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों से चीनी मिल की आर्थिक स्थिति खराब हो गई और 55 करोड़ का गन्ना मूल्य बकाया हो गया। मिल प्रबंधन पर प्राथमिकी दर्ज कराने और आरसी जारी होने के बाद भी भुगतान नहीं हुआ तो मिल नीलामी की प्रक्रिया शुरू हो गई है। गुजरे पेराई सत्र में शासन से इस मिल का गन्ना आवंटन ही नहीं किया गया, अब यह मिल बंदी के कगार पर पहुंच गई है। मूल्यांकन के लिए पुणे महाराष्ट्र से तकनीकी टीम बुलाई गई है। चीनी मिल बंद होने से चंद पूंजीपतियों को लाभ हो सकता है, लेकिन हजारों किसानों और कर्मचारियों के सामने आर्थिक संकट गहरा जाएगा।

19 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को नियुक्ति पत्र मिले

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अमृतसर/अजनाला। आम आदमी पार्टी के राज्य मुख्य प्रवक्ता, विधायक एवं पूर्व मंत्री कुलदीप सिंह धालीवाल ने अजनाला में आयोजित समारोह में 19 नवचयनित आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए। इस दौरान उन्होंने सभी को बधाई देते हुए पूरी निष्ठा और सेवा भाव से कार्य करने का आह्वान किया। धालीवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के नेतृत्व वाली सरकार ने योग्यता के आधार पर बिना रिश्वत, सिफारिश और भाई-भतीजावाद के करीब 69 हजार युवाओं को सरकारी नौकरियां देकर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि सरकार योग्य अभ्यर्थियों को पारदर्शी प्रक्रिया के तहत रोजगार उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि नव नियुक्त आंगनवाड़ी कार्यकर्ता मिशन पोषण 2.0 के तहत बच्चों, गर्भवती महिलाओं और धात्री माताओं तक पोषण एवं स्वास्थ्य संबंधी सरकारी योजनाओं का लाभ प्रभावी ढंग से पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। धालीवाल ने दावा किया कि राज्य सरकार महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए सामान्य वर्ग की महिलाओं को एक-एक हजार रुपये तथा अनुसूचित जाति की महिलाओं को डेढ़-डेढ़ हजार रुपये प्रतिमाह आर्थिक सहायता दे रही है। उन्होंने बताया कि 70 लाख से अधिक महिलाओं ने इस योजना के लिए पंजीकरण कराया है और पंजीकरण की प्रक्रिया अभी भी जारी है। उन्होंने कहा कि जिन महिलाओं को पहली किस्त नहीं मिल सकी थी, उनके खातों में भी आगामी चरण में राशि भेजने की तैयारी पूरी कर ली गई है। इस अवसर पर जिला शिक्षा समन्वयक अधिवक्ता अमनदीप कौर धालीवाल, बाल विकास परियोजना अधिकारी बिक्रमजीत सिंह, मुख्तार सिंह बलदरवाल, अमित औल, जसपाल सिंह ढिल्लों तथा अधिवक्ता संदीप कौशल सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

ड्राइविंग लाइसेंस मामले में परमार को राहत

चंडीगढ़। पंजाब सरकार ने विजिलेंस ब्यूरो के पूर्व प्रमुख निदेशक एवं वर्तमान अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (कानून-व्यवस्था) सुरिंदर पाल सिंह परमार को ड्राइविंग लाइसेंस मामले में विभागीय जांच से मुक्त कर दिया है। सरकार ने उनके विरुद्ध लगाए गए सभी आरोप निराधार मानते हुए विभागीय कार्रवाई समाप्त कर दी है। साथ ही निलंबन अवधि को भी सेवा अवधि के रूप में मान्य करने का निर्णय लिया गया है। गृह विभाग के सचिव द्वारा जारी आदेश के अनुसार, परमार के खिलाफ चल रही विभागीय कार्रवाई समाप्त कर दी गई है। उल्लेखनीय है कि 18 मई, 2025 को अखिल भारतीय सेवा (अनुशासन एवं अपील) नियम, 1969 के नियम-8 के तहत उनके विरुद्ध विभागीय जांच शुरू की गई थी। मामले की जांच विशेष पुलिस महानिदेशक अर्पित शुक्ला ने की। जांच रिपोर्ट में उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर परमार के खिलाफ लगाए गए आरोप सिद्ध नहीं पाए गए। इसके बाद पंजाब के राज्यपाल की मंजूरी मिलने पर सरकार ने उन्हें औपचारिक रूप से विभागीय कार्रवाई से मुक्त कर दिया तथा निलंबन अवधि को भी नियमित सेवा अवधि माना।

'एक शाम भगवान शिव के नाम' की तैयारियां तेज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पटियाला- पंजाब सरकार की तरफ से भगवान शिव की महिमा को समर्पित एक बड़ा धार्मिक कार्यक्रम 'एक शाम भगवान शिव के नाम' 28 जुलाई को आत्मा राम कुमार सभा ग्राउंड, पटियाला में आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम की तैयारियों का आम आदमी पार्टी शहरी ज़िला अध्यक्ष और ज़िला योजना समिति के चेयरमैन तेजिंदर मेहता और एडिशनल डिप्टी कमिश्नर (जनरल) अनुप्रिता जोहल ने रिव्यू किया। उन्होंने अलग-अलग विभागों के अधिकारियों के साथ मीटिंग की और कार्यक्रम से जुड़े इंतज़ामों का डिटेल में रिव्यू किया और हर विभाग को अपनी ज़िम्मेदारियों को समय पर और असरदार तरीके से पूरा करने के निर्देश दिए। इस मौके पर तेजिंदर मेहता ने कहा कि पंजाब सरकार धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए पूरी तरह तैयार है। उन्होंने कहा कि इस बड़े कार्यक्रम के दौरान भक्तों को किसी भी तरह की परेशानी न हो, इसके लिए सभी ज़रूरी सुविधाएं पक्की की जा रही हैं। उन्होंने अधिकारियों से सुरक्षा, ट्रैफ़िक मैनेजमेंट, सफ़ाई, बिजली, पीने का पानी, पार्किंग और इमरजेंसी स्वास्थ्य सेवाओं का सही इंतज़ाम करने को कहा। एडिशनल डिप्टी कमिश्नर अनुप्रिता जोहल ने कहा कि कार्यक्रम में आने वाले भक्तों की सुविधा के लिए सभी डिपार्टमेंट के बीच तालमेल से काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रशासन सुरक्षा के सही इंतज़ाम, आने-जाने का आसान इंतज़ाम, मेडिकल टीमों की तैनाती, साफ़-सफ़ाई और दूसरी ज़रूरी सुविधाएँ पक्का करेगा ताकि कार्यक्रम शांति और कामयाबी से पूरा हो सके। इस मौके पर जॉइंट कमिश्नर हरजोत कौर, जॉइंट कमिश्नर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन मनरीत राणा, सिविल सर्जन शैली जेटली, स्क्र पलविंदर सिंह चीमा और अलग-अलग डिपार्टमेंट के अधिकारी मौजूद थे।

बठिंडा पुलिस ने 20 किलो भुक्की के साथ 2 आरोपी किए काबू

बठिंडा- मैडम ज्योति यादव बैंस IPS सीनियर सुपरिंटेंडेंट ऑफ़ पुलिस बठिंडा के निर्देशों के अनुसार, ड्रग्स के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत, जसयजोत सिंह डिप्टी सुपरिंटेंडेंट ऑफ़ पुलिस तलवंडी साबो और SI दिलबाग सिंह एसएचओ पुलिस स्टेशन रामां, ऐएसआई कुलविंदर सिंह इंचार्ज चौकी रिफाइनरी के साथ, बाघा गांव से एक पुलिस पार्टी ने 2 महिलाओं रमनदीप कौर उर्फ रमन बेटी रेशम सिंह और सुखपाल कौर उर्फ बब्बू बेटी भोला सिंह को गिरफ्तार किया कर उनके कब्जे से 20.790 kg भुक्की बरामद की है। दोनों महिलाएं पुलिस स्टेशन रामां में पुलिस कस्टडी में हैं, जिन्हें कल माननीय कोर्ट में पेश किया जाएगा और उनसे गहराई से पूछताछ की जाएगी और आगे की जांच की जाएगी।

मनमानी के चलते सहायक अध्यापक विनय यादव विद्यालय पहुंचे 40 मिनट लेट

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

जंगबहादुरगंज खीरी। सहायक अध्यापक अपनी मनमानी और तानाशाही के चलते समय से विद्यालय नहीं पहुंचते है, जानकारी के अनुसार जनपद लखीमपुर खीरी के पसगवां ब्लॉक क्षेत्र में उच्च प्राथमिक विद्यालय (सल्लिया) जंगबहादुरगंज जो नेशनल हाइवे पर है,इस विद्यालय में विनय यादव नाम के सहायक अध्यापक कार्यरत है।जो शनिवार को विधालय का समय 8 बजे न आकर अपनी मनमानी के चलते 8:40 बजे विधालय गेट पर पहुंचे। जहां संवाददाता ने पूछा कि विद्यालय आने का क्या समय है,तो विनय यादव ने उत्तर दिया कि 8 बजे का है,पर मै कोटेदार के पास गया था। बल्कि नियम यह कहता है कि कोई भी सहायक अध्यापक स्कूल के समय में बिना अपनी उपस्थिति दर्ज कराए और बिना आधिकारिक अनुमति के स्कूल का गल्ला (मिड-डे मील का खाद्यान्न/राशन) लेने या उससे संबंधित बातचीत करने के लिए स्कूल से बाहर नहीं जा सकता है। अब सोचने की बात यह है कि अध्यापक को पहले विद्यालय आना चाहिए था या कोटेदार के यहां जाना चाहिए,यह तो एक बहाना है, विनय यादव को ठीक समय पर विद्यालय में उपस्थिति दर्ज कराने के बाद आधिकारिक अनुमति लेकर ही कोटेदार के पास जाना चाहिए। लेकिन उन्होंने मनमानी बहानाबाजी व तानाशाही है जिसके चलते विनय यादव मनमानी ने ऐसा नहीं किया। यह कोई नई बात नहीं है,इनके लेट आने के समाचार कई बार प्रकाशित हो चुके हैं,फिर भी यह अपनी मनमानी व तानाशाही पर ही उतारू रहते है,इन्होंने यह भी बताया कि मै शिक्षक संघ के संगठन से जुड़ा हुआ हूं मेरा कोई कुछ नहीं कर सकता है,क्या शिक्षक संघ संगठन ऐसे अध्यापकों को लेट आने की अनुमति देता है?,इस संबंध में खंड शिक्षा अधिकारी को फोन लगाया गया तो महोदय ने फोन उठाना उचित नहीं समझा। अब देखना यह है कि खंड शिक्षा अधिकारी विनय यादव पर क्या कार्यवाही करते या फिर इसी तरह से खुली छूट देकर सरकार के आदेशों पर पानी फेरते रहेंगे।

घर से निकला युवक रहस्यमय ढंग से लापता, मां ने दर्ज कराई गुमशुदगी

तिलहर, शाहजहांपुर। घर से निकला एक युवक रहस्यमय परिस्थितियों में लापता हो गया। परिजनों ने रिश्तेदारों और संभावित स्थानों पर कई दिनों तक तलाश की, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं लगा। इसके बाद मां की तहरीर पर पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर युवक की तलाश शुरू कर दी है। ग्राम खिरिया उदैत निवासी कैलाशो देवी ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उनका पुत्र रामनिवास 17 जुलाई की रात करीब नौ बजे घर से बिना बताए कहीं चला गया था। देर रात तक वापस न लौटने पर परिजनों ने उसकी खोजबीन शुरू की। रिश्तेदारों, परिचितों और आसपास के क्षेत्रों में काफी तलाश की गई, लेकिन उसका पता नहीं चल सका। परिजनों ने पुलिस से मदद की गुहार लगाई, जिस पर पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर जांच शुरू कर दी। पुलिस युवक की तलाश के लिए संभावित स्थानों पर दबिश देने के साथ ही अन्य माध्यमों से भी जानकारी जुटा रही है। सीओ विदुष सक्सेना ने बताया कि महिला की तहरीर पर गुमशुदगी दर्ज कर ली गई है। युवक की तलाश के लिए पुलिस टीम लगाई गई है। जल्द ही उसका पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है।

इफको कॉर्डेट, में नैनो उर्वरकों पर सहकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। इफको कॉर्डेट , फूलपुर, प्रयागराज में आज नैनो उर्वरकों के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं किसानों के मध्य इनके प्रभावी उपयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक दिवसीय सहकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रयागराज मंडल के सहकारिता विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की तथा नैनो उर्वरकों के उपयोग, लाभ एवं भविष्य की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उप आयुक्त एवं उप निबंधक, सहकारिता प्रयागराज मंडल, आशीष श्रीवास्तव रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में इफको राज्य कार्यालय, लखनऊ से राज्य विपणन प्रबंधक यतेन्द्र कुमार तेवतिया उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त प्रयागराज मंडल के समस्त अपर जिला सहकारी अधिकारी, सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक (सहकारिता) तथा विभिन्न जनपदों के सहकारिता विभाग के अधिकारी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि आशीष श्रीवास्तव ने कहा कि नैनो उर्वरक भारतीय कृषि के लिए एक क्रांतिकारी तकनीक है, जो कम लागत में अधिक उत्पादन, मृदा स्वास्थ्य संरक्षण तथा पर्यावरण संतुलन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने किसानों से प्राप्त अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि जिन किसानों ने नैनो उर्वरकों का वैज्ञानिक ढंग से उपयोग किया है, उन्हें उत्पादन एवं गुणवत्ता दोनों में सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं। उन्होंने कहा कि नैनो उर्वरकों को अधिकाधिक किसानों तक पहुँचाने के लिए सचिवों एवं किसानों के स्तर पर नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे इनका व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित हो सके। राज्य विपणन प्रबंधक यतेन्द्र कुमार तेवतिया ने नैनो यूरिया, नैनो डीएपी एवं अन्य नैनो उर्वरकों की वैज्ञानिक उपयोगिता, उनकी कार्यप्रणाली तथा पारंपरिक उर्वरकों की तुलना में उनके लाभों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने उपस्थित अपर जिला सहकारी अधिकारियों एवं सहकारिता विभाग के अधिकारियों से आह्वान किया कि वे सहकारी समितियों के माध्यम से नैनो उर्वरकों की उपलब्धता एवं बिक्री को बढ़ावा दें तथा किसानों को इनके उपयोग के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि नैनो उर्वरकों का व्यापक उपयोग आत्मनिर्भर एवं टिकाऊ कृषि व्यवस्था की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। कार्यक्रम के दौरान प्रयागराज मंडल के विभिन्न जनपदों से आए अधिकारियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए तथा नैनो उर्वरकों के प्रचार-प्रसार एवं सहकारी समितियों के माध्यम से इनके व्यवसाय को सुदृढ़ बनाने के लिए अपने सुझाव प्रस्तुत किए। इस अवसर पर प्रयागराज जनपद से सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक (सहकारिता) साधना सिंह, कौशाम्बी जनपद से श्याम लाल मौर्य तथा प्रतापगढ़ जनपद से उमाकांत कुशवाहा सहित अन्य अधिकारियों ने नैनो उर्वरकों के उपयोग, किसानों में जागरूकता तथा सहकारी समितियों की भूमिका पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम में उपस्थित अपर जिला सहकारी अधिकारियों एवं अन्य प्रतिभागियों ने इफको के नैनो उर्वरकों से संबंधित विभिन्न तकनीकी एवं व्यावसायिक विषयों पर प्रश्न पूछे, जिनका समाधान डॉ. डी.के. सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक, इफको प्रयागराज मंडल द्वारा विस्तारपूर्वक एवं सरल भाषा में किया गया। उन्होंने नैनो उर्वरकों की उपयोग विधि, किसानों को होने वाले लाभ, वैज्ञानिक तथ्यों तथा विपणन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला। इस अवसर पर कॉर्डेट फूलपुर , इफको के प्रधानाचार्य डॉ. विवेक दीक्षित ने संस्थान की प्रशिक्षण व्यवस्था, अनुसंधान गतिविधियों तथा कृषि क्षेत्र में किए जा रहे नवाचारों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम के समापन पर सभी अधिकारियों ने कॉर्डेट परिसर का भ्रमण किया गया । कार्यक्रम के समापन पर सभी अधिकारियों ने इफको फूलपुर स्थित नैनो उर्वरक संयंत्र का भ्रमण किया तथा नैनो उर्वरकों के निर्माण की संपूर्ण प्रक्रिया का प्रत्यक्ष अवलोकन किया। अधिकारियों ने यह जाना कि नैनो उर्वरकों का निर्माण किस प्रकार आधुनिक तकनीक एवं वैज्ञानिक गुणवत्ता मानकों के अनुरूप किया जाता है। साथ ही उत्पादन प्रक्रिया, गुणवत्ता नियंत्रण, पैकेजिंग एवं संयंत्र की कार्यप्रणाली की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। इस दौरान अधिकारियों ने संयंत्र में अपनाई जा रही अत्याधुनिक तकनीकों की सराहना की तथा इसे भारतीय कृषि के लिए एक महत्वपूर्ण नवाचार बताया। कार्यक्रम के अंत में इफको प्रयागराज के क्षेत्र प्रतिनिधि प्रतीक चौबे द्वारा सभी अतिथियों, अधिकारियों एवं प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

प्रयागराज मंडल में रेल हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देने तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति अभिरुचि विकसित करने के उद्देश्य से रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार अखिल रेल हिंदी प्रश्नोत्तरी (Quiz) प्रतियोगिता के प्रथम चरण का आयोजन आज उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज मंडल कार्यालय में सफलतापूर्वक किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रयागराज मंडल के विभिन्न स्टेशनों एवं कार्यालयों से कुल 21 कर्मचारियों ने पूरे उत्साह एवं प्रतिस्पर्धात्मक भावना के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता का आयोजन पूर्णतः हिंदी माध्यम में किया गया, जिसमें प्रतिभागियों से रेलवे संबंधी विषयों, हिंदी भाषा एवं साहित्य, राजभाषा तथा सामान्य ज्ञान से जुड़े प्रश्न पूछे गए। प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागियों ने अपने ज्ञान, त्वरित निर्णय क्षमता एवं टीम भावना का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता का उद्देश्य कर्मचारियों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ राजभाषा नीति के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा रेलवे से संबंधित ज्ञान का विस्तार करना है। इस प्रतियोगिता के माध्यम से चयनित टीम आगामी क्षेत्रीय स्तर की प्रतियोगिता में प्रयागराज मंडल का प्रतिनिधित्व करेगी। प्रतियोगिता का आयोजन राजभाषा विभाग द्वारा सुव्यवस्थित एवं सफलतापूर्वक संपन्न कराया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों में विशेष उत्साह एवं सकारात्मक प्रतिस्पर्धा का वातावरण देखने को मिला।

जौहर यूनिवर्सिटी बचाने की मांग को लेकर किया धरना प्रदर्शन

उलेमाओं व अन्य ने राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पूरनपुर (पीलीभीत)। जौहर यूनिवर्सिटी बचाने की मांग को लेकर उलमाओं के नेतृत्व में दर्जनों लोगों ने राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन उपजिलाधिकारी पूरनपुर को सौंपा है। जिसमें निष्पक्ष सुनवाई, कानून के अनुसार प्रक्रिया और विद्यार्थियों के हितों की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित कराये जाने की मांग की गई है तालीमी बेदारी मुहिम के बैनर तले कार्यकर्ताओं ने शनिवार सुबह 11 बजे साबरी आहता गेट पर बैठकर विरोध प्रदर्शन कर राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपा। ज्ञापन सौंप कर मौलाना मोहम्मद अली जौहर यूनिवर्सिटी, रामपुर की तालीमी विरासत की सुरक्षा और निष्पक्ष संवैधानिक हस्तक्षेप की मांग की। ज्ञापन में कहा गया कि यह मुद्दा किसी व्यक्ति या राजनीतिक दल का नहीं, बल्कि शिक्षा, संविधान और हजारों विद्यार्थियों के भविष्य से जुड़ा है। ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि यूनिवर्सिटी की स्थापना शिक्षा के प्रसार और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के छात्रों को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से की गई थी। यदि किसी प्रकार का कानूनी विवाद है तो उसका समाधान न्यायालय और विधिसम्मत प्रक्रिया के तहत होना चाहिए, न कि ऐसे कदमों से जिससे छात्रों और कर्मचारियों का भविष्य प्रभावित हो। उलमाओं ने कहा कि किसी भी कार्रवाई से पहले निष्पक्ष सुनवाई, कानून के अनुसार प्रक्रिया और विद्यार्थियों के हितों की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। उन्होंने राज्यपाल से पूरे प्रकरण में न्यायपूर्ण एवं संवैधानिक हस्तक्षेप की मांग करते हुए कहा कि शिक्षा संस्थानों की सुरक्षा लोकतंत्र और संविधान की मूल भावना के अनुरूप है। ज्ञापन पर तालीमी बेदारी मुहिम के संयोजक हाफिज नूर अहमद अजहरी, हाफिज जाकिर, हाफिज साकिर, मौलाना इरशाद, हाफिज अरबाज, मखदूम खान, हाफिज नाजिम, खुरशीद अंसारी, गुच्छन खान, सिदाकत खान, शरीफ, अरशद, अरमान, ईशान, मोहम्मद मुनीब सहित मुहिम से जुड़े कई उलमाओं और स्थानीय लोग मौजूद रहे।

नैनी बाजार में दुकान के कब्जे को लेकर महिला से मारपीट, मामला दर्ज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नैनी,प्रयागराज । नैनी कोतवाली क्षेत्र में दुकान के कब्जे को लेकर एक महिला के साथ मारपीट और गाली-गलौज का मामला सामने आया है। पीड़िता की तहरीर पर नैनी पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। नैनी पुलिस में दी गई तहरीर के अनुसार वादिनी संगीता केशरवानी पुत्री दुली चन्द्र केशरवानी निवासी 567बी चक रघुनाथ ने बताया कि वह 24 जुलाई को सुबह 11 बजे अपनी दुकान नैनी बाजार गई थीं। आरोप है कि वहां पहले से ही लक्ष्मण प्रसाद केशरवानी पिछले कुछ वर्षों से जबरन कब्जा करके बैठा हुआ था।तहरीर में कहा गया है कि जब संगीता ने विरोध किया तो लक्ष्मण प्रसाद गाली-गलौज करने लगा। विरोध करने पर उसने आसपास के लोगों को बुलाकर पीड़िता के साथ मारपीट शुरू कर दी। पीड़िता के भागने पर श्रीकान्त मिश्रा पुत्र अज्ञात पीयूषकान्त मिश्रा, प्रेम केशरवानी और 10-15 अज्ञात लोग निवासी शंकरढाल भी दौड़कर आए और गंदी-गंदी गालियां देते हुए पीड़िता के साथ मारपीट करने लगे और कपड़े फाड़ दिए। आसपास के लोगों ने बीच-बचाव कर किसी तरह पीड़िता को बचाया।पीड़िता का आरोप है कि लक्ष्मण प्रसाद ने पहले भी कई बार धमकी दी थी कि दुकान छोड़ दो वरना जान से हाथ धो बैठोगी।

पीड़िता ने बताया कि वह अकेले अपना जीवन यापन कर रही है और अगर दुकान मिल जाती तो रोजगार कर अपना जीवन चला पाती।नैनी थाना प्रभारी बृजकिशोर गौतम के अनुसार तहरीर के आधार पर 24 जुलाई को मुकदमा दर्ज कर ली गई है और मामले की जांच की जा रही है।

रहस्यमयी ढंग से लापता बालिका मामलें में गुमशुदगी दर्ज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पूरनपुर (पीलीभीत)। रहस्यमयी ढंग से लापता बालिका के मामले में गुमशुदगी दर्ज की गई है। ग्रामीण आशंका जता रहे हैं कि बालिका को तेंदुआ उठाकर ले गया। जिसको लेकर गांव में दहशत का माहौल बना हुआ है। कोतवाली क्षेत्र के गांव जटपुरा में अंशिका (07) के रहस्यमयी ढंग से लापता होने से ग्रामीणों में दहशत का माहौल है। बताते चलें कि गुरुवार शाम वह घर से गांव के बाहर सूखा बाबा धार्मिक स्थल के पास मवेशी चरा रही अपनी मां मीरा देवी के पास जाने के लिए निकली थी, लेकिन रास्ते में अचानक लापता हो गई। ग्रामीणों ने उसे जाते हुए देखा था, इसके बाद उसका कोई सुराग नहीं मिला। गांव के पास पीलीभीत टाइगर रिजर्व की हरिपुर रेंज का जंगल होने के कारण तेंदुआ उठा ले जाने की आशंका जताई जा रही है। सूचना पर पुलिस, तहसील प्रशासन, वन विभाग और सैकड़ों ग्रामीण लगातार खेतों व जंगल में सर्च अभियान चला रहे हैं। शनिवार सुबह तीसरे दिन भी मासूम का कोई सुराग नहीं लग सका। कोतवाल पवन पांडेय ने जानकारी दी है कि पुलिस ने बालिका के गायब होने के मामलें में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज की है। घटना के दूसरे दिन क्षेत्रीय भाजपा विधायक बाबूराम पासवान ने गांव पहुंचकर दूरभाष पर वन मंत्री अरुण सक्सेना से बात करते हुए बताया कि यहां के लोग जंगल के किनारे निवास करते है, यहां तार फेंसिंग की जाये। विधायक ने बताया कि वन मंत्री ने तार फेंसिंग कराने का आश्वासन दिया। इसके बाद विधायक ने पुलिस अधीक्षक सुकीर्ति माधव से दूरभाष पर वार्ता कर डाग स्क्वायड को बुलवाकर तथा सैकड़ों ग्रामीणों तथा जंगल विभाग के अधिकारी रेंजर तथा पुलिस विभाग के 50 जवानों के द्वारा सर्च अभियान चलवाया। उन्होंने कहा कि हर जगह खोजबीन करने के बाबजूद अभी तक बालिका का कोई सुराग नहीं लग सका। जिस पर उन्होंने संबंधितों को लगातार बालिका की खोज करने हेतु निर्देशित किया। साथ ही बालिका के परिवार जनो को ढांढ़स बंधाया।

व्यापार मंडल ने पुलियों के निर्माण से बाधित आवागमन पर जताई नाराज़गी, एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पूरनपुर (पीलीभीत)। पुलियों के निर्माण से बाधित आवागमन को लेकर नाराज़गी जताते हुए व्यापार मंडल ने उपजिलाधिकारी को ज्ञापन सौंप कर वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध करवाकर आवागमन को जल्द सुचारू रूप से शुरू करवाए जाने की मांग की है। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल (पंजी0) के पदाधिकारियों ने शनिवार दोपहर 12 बजे संपूर्ण समाधान दिवस के दौरान उपजिलाधिकारी पूरनपुर मयंक गोस्वामी को ज्ञापन सौंपकर पूरनपुर-खटीमा मार्ग पर चल रहे पुलियों के निर्माण कार्य से बाधित आवागमन की समस्या उठाई। व्यापार मंडल के प्रांतीय मंत्री विजय पाल विक्की के नेतृत्व में दिए गए ज्ञापन में बताया गया कि मार्ग पर कई स्थानों पर पुलियों का निर्माण होने से यातायात पूरी तरह प्रभावित है, जिससे आम नागरिकों, व्यापारियों और वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।ज्ञापन में कहा गया कि कई स्थानों पर वैकल्पिक मार्ग या उचित डायवर्जन की व्यवस्था नहीं होने से लोगों को कई किलोमीटर अतिरिक्त दूरी तय करनी पड़ रही है। इससे समय, ईंधन और धन की अनावश्यक बर्बादी हो रही है, वहीं आपातकालीन सेवाएं भी प्रभावित हो रही हैं।व्यापार मंडल ने मांग की कि माधोटांडा रेलवे फाटक के निकट दिशा-निर्देश बोर्ड लगाया जाए, ताकि खटीमा की ओर जाने वाले वाहन चालकों को समय रहते कलीनगर मार्ग की जानकारी मिल सके। साथ ही निर्माण कार्य के दौरान सुरक्षित वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध कराने और आवागमन जल्द सुचारु कराने के निर्देश संबंधित विभाग को दिए जाएं। एसडीएम ने ज्ञापन प्राप्त कर समस्या के समाधान के लिए आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया।

नैनी में पुलिस मुठभेड़: गौकशी के आरोप में एक आरोपी के पैर में लगी गोली

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

राहुल जायसवाल

नैनी ,प्रयागराज। नैनी पुलिस और एसओजी यमुनानगर जोन की संयुक्त टीम ने शनिवार को काशीराम कॉलोनी क्षेत्र में कार्रवाई करते हुए गौकशी के आरोप में नौ लोगों को गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार,घेराबंदी के दौरान आरोपियों की ओर से फायरिंग की गई, जिसके जवाब में आत्मरक्षार्थ की गई पुलिस फायरिंग में एक आरोपी के पैर में गोली लग गई। मौके से 355 किलोग्राम गोवंश मांस, गौकशी के उपकरण तथा एक अवैध 12 बोर तमंचा,एक खोखा और एक जिंदा कारतूस बरामद किए गए हैं।पुलिस के मुताबिक, संदिग्ध व्यक्तियों एवं वाहनों की चेकिंग के दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि काशीराम कॉलोनी के जंगल क्षेत्र में कुछ लोग गौकशी कर रहे हैं। सूचना पर नैनी पुलिस और एसओजी टीम ने संयुक्त रूप से घेराबंदी की। पुलिस का दावा है कि इस दौरान आरोपियों ने जान से मारने की नीयत से फायरिंग की, जिसके जवाब में की गई कार्रवाई में मो. आमिर (22) पुत्र मो. अंसार, निवासी उत्तरी लोकपुर करबला, के बाएं पैर में गोली लग गई। उसे उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया।इसके बाद पुलिस ने खंडहरनुमा कमरे में छापेमारी कर आठ अन्य आरोपियों को गौकशी करते हुए गिरफ्तार कर लिया।गिरफ्तार आरोपियों में फैजल, आकाश, विकास, बल्लू, रविंद कुमार, असरफ, आंशू तथा सुफियान शामिल हैं। पुलिस ने बताया कि तीन अन्य आरोपी मौके से फरार हो गए, जिनकी तलाश में दबिश दी जा रही है। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक नैनी की तहरीर पर थाना नैनी में मु0अ0सं0 352/2026 के तहत धारा 109 (1)/3(5) बीएनएस, गोवध निवारण अधिनियम की धारा 3/5/8 तथा आर्म्स एक्ट की धारा 3/25 के अंतर्गत मुकदमा दर्ज किया गया है।पुलिस ने बताया कि आरोपियों के कब्जे से एक अवैध 12 बोर तमंचा, एक खोखा कारतूस, एक जिंदा कारतूस, 355 किलोग्राम गोवंश मांस एवं गौकशी में प्रयुक्त उपकरण बरामद किए गए हैं। मामले में अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है।इस कार्रवाई में प्रभारी निरीक्षक बृजकिशोर गौतम के नेतृत्व में थाना नैनी पुलिस तथा उपनिरीक्षक नवीन कुमार सिंह के नेतृत्व में एसओजी यमुनानगर जोन की टीम शामिल रही।

चाइल्ड हेल्पलाइन ने 24 घंटे में घर से भटकी दिव्यांग बालिका को उसके परिजनों से मिलाया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पूरनपुर (पीलीभीत)। नानी के घर रह रही दिव्यांग बालिका घर पर बिना बताये ट्रेन पर बैठकर पीलीभीत आ गई थी। पीलीभीत आने के बाद बालिका रास्ता भटक गई। इस बात की जानकारी जब चाइल्ड हेल्पलाइन टीम को लगी तो मौके पर पहुंची टीम ने बालिका के परिजनों से संपर्क कर बालिका को उनके सुपुर्द कर दिया। चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 पर स्टेशन मास्टर, रेलवे स्टेशन शाही पीलीभीत द्वारा सूचना दी गयी कि रेलवे स्टेशन शाही पर एक दिव्यांग बालिका ट्रेन से उतरी है, जोकि अपना नाम पता बताने में असमर्थ है, क्योंकि बालिका स्पष्ट रूप से बोल नहीं पा रही हैं। सूचना प्राप्ति के उपरांत जिला प्रोबेशन अधिकारी अनुराग श्याम रस्तोगी के निर्देश पर संरक्षण आधिकारी मीनाक्षी पाठक के नेतृत्व में चाइल्ड हेल्पलाइन पर्यवेक्षक नीतू चौहान एवं केस वर्कर प्रतुल सिंह शाही रेलवे स्टेशन पहुँचे और बालिका को अपनी सुपुर्दगी में लेकर बालिका को वन स्टॉप सेंटर में आशय दिलाया गया। स्टेशन मास्टर शाही के द्वारा बताया गया कि बालिका बरेली से आने वाली ट्रेन से उतरी है, जिस कारण चाइल्ड हेल्पलाइन परियोजना समन्वयक निर्वान सिंह द्वारा बालिका के पता को ट्रेस करने के लिए जनपद बरेली में विभागीय संपर्क करने पर पता चला कि बालिका जनपद बरेली के एक गांव में अपनी नानी के घर रह रही थी जोकि पीलीभीत के थाना जहानाबाद क्षेत्र के एक गांव की रहने वाली है और अपनी नानी को बिना बताए ही पीलीभीत की तरफ आने वाली ट्रेन में बैठ गयी और अपने घर का रास्ता भटक गयी। चाइल्ड हेल्पलाइन टीम से बालिका के परिजनों से संपर्क कर बाल कल्याण समिति पीलीभीत के आदेश पर बालिका को उसके परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

अब बॉडी वॉर्न कैमरा पहनकर ड्यूटी करेंगे टिकट चेकिंग कर्मचारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। मंडल रेल प्रबंधक, प्रयागराज मंडल रजनीश अग्रवाल के नेतृत्व में एवं वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक/ कोचिंग हरिमोहन के मार्गानिर्देशन में उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज मंडल द्वारा यात्रियों की सुरक्षा, पारदर्शिता एवं जवाबदेही को और अधिक सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं अभिनव पहल करते हुए दिनांक 24 जुलाई, 2026 से बॉडी वॉर्न कैमरा (Body Worn Camera-BWC) पायलट परियोजना का शुभारंभ किया गया है। इस व्यवस्था के अंतर्गत टिकट चेकिंग कर्मचारी ड्यूटी के दौरान बॉडी वॉर्न कैमरा पहनकर टिकट जांच करेंगे, जिससे टिकट जांच के दौरान होने वाली प्रत्येक गतिविधि वीडियो एवं ऑडियो सहित रिकॉर्ड होगी। यह पायलट परियोजना महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे नरेश पाल सिंह के विशेष निर्देशों के अनुपालन में प्रारंभ की गई है। प्रथम चरण में प्रयागराज मंडल की दो प्रमुख प्रीमियम ट्रेनों– 12417/12418 प्रयागराज एक्सप्रेस (प्रयागराज-नई दिल्ली-प्रयागराज) तथा 12451/12452 श्रमशक्ति एक्सप्रेस (कानपुर-नई दिल्ली-कानपुर) में कार्यरत टिकट चेकिंग कर्मचारियों को बॉडी वॉर्न कैमरे उपलब्ध कराए गए हैं। पायलट परियोजना के सफल क्रियान्वयन एवं प्राप्त अनुभवों के आधार पर इस व्यवस्था का विस्तार चरणबद्ध रूप से प्रयागराज मंडल से प्रारंभ होने वाली अन्य ट्रेनों में भी किया जाएगा। रेलवे द्वारा उपलब्ध कराए गए बॉडी वॉर्न कैमरे अत्याधुनिक तकनीक से युक्त हैं, जिनमें एचडी (HD) वीडियो रिकॉर्डिंग, ऑडियो रिकॉर्डिंग, नाइट विज़न, लंबी अवधि का बैटरी बैकअप तथा टैंपर-प्रूफ रिकॉर्डिंग प्रणाली जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इन विशेषताओं के कारण लंबी दूरी की यात्रा के दौरान भी निर्बाध रिकॉर्डिंग सुनिश्चित होगी तथा रिकॉर्ड किए गए डेटा के साथ किसी प्रकार की छेड़छाड़ की संभावना नहीं रहेगी। टिकट जांच के दौरान कई बार यात्रियों एवं टिकट चेकिंग कर्मचारियों के मध्य विवाद अथवा शिकायतें उत्पन्न हो जाती हैं। ऐसी परिस्थितियों में कैमरे में उपलब्ध रिकॉर्डिंग निष्पक्ष एवं विश्वसनीय साक्ष्य के रूप में कार्य करेगी, जिससे वास्तविक तथ्यों के आधार पर शिकायतों का त्वरित एवं निष्पक्ष निस्तारण संभव होगा। इससे निराधार अथवा फर्जी शिकायतों पर प्रभावी अंकुश लगेगा। साथ ही यदि किसी यात्री के साथ अनुचित व्यवहार अथवा किसी कर्मचारी के साथ अभद्रता, दुर्व्यवहार या मारपीट जैसी घटना होती है, तो उसकी सत्यता का भी निष्पक्ष परीक्षण किया जा सकेगा। यह व्यवस्था टिकट चेकिंग प्रक्रिया में पारदर्शिता, जवाबदेही एवं व्यावसायिक आचरण को और अधिक सुदृढ़ बनाएगी। साथ ही यात्रियों एवं टिकट चेकिंग कर्मचारियों दोनों में सुरक्षा की भावना को बढ़ावा मिलेगा तथा टिकट जांच के दौरान अनुशासन एवं शालीन व्यवहार को प्रोत्साहन प्राप्त होगा। इस प्रणाली से प्राप्त होने वाले प्रमुख लाभ टिकट चेकिंग प्रक्रिया का निष्पक्ष एवं डिजिटल रिकॉर्ड उपलब्ध रहेगा। यात्रियों एवं टिकट चेकिंग कर्मचारियों दोनों के हितों का समान रूप से संरक्षण होगा। फर्जी शिकायतों एवं अनावश्यक विवादों में उल्लेखनीय कमी आएगी। शिकायतों एवं अपीलों के निस्तारण में साक्ष्य आधारित एवं त्वरित निर्णय लिए जा सकेंगे। कर्मचारियों के कार्य निष्पादन, व्यवहार एवं सेवा गुणवत्ता का अधिक प्रभावी मूल्यांकन संभव होगा। सुरक्षा संबंधी घटनाओं, संदिग्ध गतिविधियों अथवा कानून-व्यवस्था से जुड़े मामलों में उपलब्ध वीडियो फुटेज रेलवे सुरक्षा बल (RPF) एवं अन्य जांच एजेंसियों के लिए महत्वपूर्ण साक्ष्य सिद्ध होगी। यात्रियों का रेलवे के प्रति विश्वास और अधिक मजबूत होगा तथा रेलवे की सकारात्मक छवि को बढ़ावा मिलेगा। डिजिटल तकनीक के प्रभावी उपयोग से रेलवे प्रशासन में सुशासन (Good Governance), पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व को और अधिक मजबूती मिलेगी। प्रयागराज मंडल का विश्वास है कि यह अभिनव पहल यात्रियों को अधिक सुरक्षित, पारदर्शी एवं भरोसेमंद यात्रा अनुभव प्रदान करने के साथ-साथ टिकट चेकिंग व्यवस्था को भी अधिक आधुनिक, प्रभावी एवं विश्वसनीय बनाएगी। पायलट परियोजना के परिणामों के आधार पर भविष्य में इस व्यवस्था का विस्तार प्रयागराज मंडल की अन्य ट्रेनों में भी चरणबद्ध रूप से किया जाएगा।

श्रद्धापूर्वक मनाया गया कारगिल विजय दिवस

नैनी, प्रयागराज। सरस्वती विद्या मंदिर माधव ज्ञान केंद्र, में शनिवार को कारगिल विजय दिवस मनाया गया। इस अवसर पर छात्राओं श्रद्धा पांडे, नियति पटेल एवं साक्षी उपाध्याय तथा विद्यालय के शिक्षक

अगम पाठक ने कारगिल युद्ध के वीर सैनिकों के अद्वितीय शौर्य, बलिदान एवं राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण पर प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में विद्यालय देशभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर उपस्थित सभी का मन मोह लिया। प्रधानाचार्य अजय कुमार मिश्र ने कारगिल के अमर वीरों के त्याग और बलिदान को नमन करते हुए विद्यार्थियों से राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने तथा अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करने का संदेश दिया।

स्टारशिप ने 20 उन्नत स्टारलिंक उपग्रहों के साथ भरी सफल उड़ान

स्पेसएक्स के 13वें परीक्षण मिशन में बड़ी सफलता, नासा ने भी रखी करीबी नजर

नई दिल्ली(एजेंसी)। एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स ने शुक्रवार को अपने विशाल स्टारशिप रॉकेट का 13वां परीक्षण मिशन सफलतापूर्वक पूरा कर अंतरिक्ष क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की। इस दौरान स्टारशिप ने टेक्सास स्थित दक्षिणी प्रक्षेपण केंद्र से उड़ान भरते हुए 20 अत्याधुनिक स्टारलिंक उपग्रहों को सफलतापूर्वक पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थापित किया। लगभग 124 मीटर (407 फुट) ऊंचा यह रॉकेट दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली प्रक्षेपण यान माना जाता है। करीब एक घंटे तक चली उड़ान के दौरान स्टारशिप ने लगभग 200 किलोमीटर की ऊंचाई पर एक-एक कर सभी उपग्रहों को अंतरिक्ष में छोड़ा। इसके बाद अंतरिक्षयान ने पृथ्वी के वायुमंडल में दोबारा प्रवेश किया और निर्धारित योजना के अनुसार हिंद महासागर में सुरक्षित जल अवतरण किया। स्पेसएक्स ने इसे अब तक का सबसे सफल पुनः प्रवेश परीक्षण बताया है। इस मिशन पर अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा की भी विशेष नजर रही। भविष्य में चंद्रमा पर मानव मिशन के लिए स्टारशिप को लूनर लैंडर के रूप में इस्तेमाल करने की योजना है। उड़ान से पहले स्पेसएक्स ने पहले चरण के 33 इंजनों में से छह इंजनों को बदला था, क्योंकि पिछले सप्ताह तकनीकी खराबी के चलते प्रक्षेपण अंतिम समय में स्थगित करना पड़ा था। नए प्रक्षेपित 20 स्टारलिंक उपग्रहों में से छह पर विशेष कैमरे लगाए गए थे, जिन्होंने उड़ान के दौरान स्टारशिप की हीट शील्ड की उच्च गुणवत्ता वाली तस्वीरें भेजीं। हीट शील्ड पर लगे सेंसरों ने वायुमंडल में पुनः प्रवेश के समय पड़ने वाले अत्यधिक ताप और दबाव का भी सफलतापूर्वक रिकॉर्ड किया। स्पेसएक्स के अनुसार वर्तमान में 10,000 से अधिक स्टारलिंक उपग्रह दुनिया भर में इंटरनेट सेवा प्रदान कर रहे हैं। कंपनी की इंजीनियर केट टाइस ने मिशन को 'लकी फ्लाइट 13' बताते हुए इसकी सफलता पर खुशी जताई, जबकि नासा ने कहा कि इस परीक्षण से भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए महत्वपूर्ण तकनीकी अनुभव प्राप्त होंगे।

लगभग 124 मीटर (407 फुट) ऊंचा यह रॉकेट दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली प्रक्षेपण यान माना जाता है। करीब एक घंटे तक चली उड़ान के दौरान स्टारशिप ने लगभग 200 किलोमीटर की ऊंचाई पर एक-एक कर सभी उपग्रहों को अंतरिक्ष में छोड़ा। इसके बाद अंतरिक्षयान ने पृथ्वी के वायुमंडल में दोबारा प्रवेश किया और निर्धारित योजना के अनुसार हिंद महासागर में सुरक्षित जल अवतरण किया। स्पेसएक्स ने इसे अब तक का सबसे सफल पुनः प्रवेश परीक्षण बताया है।

विवाहिता पर जानलेवा हमले और उत्पीड़न मामलें में पति पर रिपोर्ट दर्ज

अवैध संबंधों के विरोध पर घटना को दिया अंजाम, घर वाली के जेवर बाहर वाली को देने का आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पूरनपुर (पीलीभीत)। अवैध संबंधों के विरोध पर पति ने विवाहिता पर जानलेवा हमला कर दिया। यही नहीं घर वाली के जेवरात बाहर वाली को दे दिए। विरोध करने पर उसके साथ मारपीट कर जान से मारने की कोशिश की। किसी तरह आरोपी के चंगुल से छूटकर अपने बच्चों को लेकर पीड़िता मायके आ गई। इस मामले में पीड़िता द्वारा की गई शिकायत के आधार पर पुलिस ने आरोपी पति के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कर ली है। थाना माधोटांडा क्षेत्र स्थित रामनगरा गाँव से पति के क्रूर अत्याचार का मामला सामने आया है। पीड़िता ने अपने पति देवा राय पर अवैध संबंध, मारपीट, गहने छीनने और गला दबाकर जान से मारने के प्रयास का आरोप लगाया है। पीड़िता के अनुसार, उसकी शादी लगभग 12 साल पहले हुई थी और उनके दो बच्चे हैं। आरोप है कि पति के किसी अन्य महिला के साथ संबंध हैं, जिसका विरोध करने पर आरोपी ने घर के सभी जेवरात उस महिला को दे दिए और पीड़िता के साथ मारपीट की। पीड़िता के बताये अनुसार हद तो तब हो गई जब 21 जुलाई को आरोपी पति ने पत्नी की हत्या की नीयत से उसका गला दबा दिया, जिससे वह बेहोश हो गई। होश में आने के बाद पीड़िता अपने दोनों बच्चों को बचाकर मायके आ गई और पुलिस से न्याय की गुहार लगाई। थाना माधोटांडा पुलिस ने पीड़िता की शिकायत के आधार पर 24 जुलाई 2026 को आरोपी पति देवा राय के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की सुसंगत धाराओं–85, 115(2), 109 और 351(3)–के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

अतिरिक्त दहेज की मांग पूरी न होने पर मारपीट कर विवाहिता को कमरे में रखा बन्द

पूरनपुर (पीलीभीत)। अतिरिक्त दहेज की मांग पूरी न होने पर विवाहिता के साथ मारपीट कर उसे जान से मारने की धमकी दी गयी। यही नही विवाहिता को कई दिनों तक कमरे में बंद रखा गया। इस दौरान उसे खाना पानी नहीं दिया गया। साथ ही मारपीट कर उसे घर से निकाल दिया गया। पीड़िता ने कोतवाली पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर पति सहित छः ससुरालियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है। थाना घुंघचाई क्षेत्र के गांव बिलंदपुर अशोक निवासी वर्षा पुत्री नेवराम ने पुलिस को दिए शिकायती पत्र में बताया कि उसका विवाह 05 मई 2026 को कोतवाली पूरनपुर क्षेत्र के गांव शिवपुरिया निवासी मन सिंह पुत्र होरालाल के साथ हुआ था। आरोप है कि शादी के बाद से ही पति, सास, ससुर, जेठ, जेठानी और देवर एक लाख रुपये नकद और सोने की चेन की मांग करने लगे। आर्थिक स्थिति कमजोर होने की बात कहने पर आरोपियों ने उसके साथ मारपीट शुरू कर दी। पीड़िता का आरोप है कि मांग पूरी न होने पर उसे गाली–गलौज कर जान से मारने की धमकी दी गई और तीन दिन तक कमरे में बंद रखकर मारपीट की गई।

नगर निगम की लापरवाही से मेवा लाल की बगिया में खुले नाले में गिरी कार

इसके पूर्व भी हो चुकी है घटना फिर भी नहीं चेता नगर निगम,लोगो में आक्रोश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नैनी, प्रयागराज। नगर निगम प्रयागराज की लापरवाही एक बार फिर सामने आई है। नैनी स्थित मेवा लाल की बगिया क्षेत्र में शुक्रवार रात करीब 10:30 बजे एक कार अचानक खुले नाले में जा गिरी। हादसे में चालक बाल-बाल बच गया और किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, जिस स्थान पर यह हादसा हुआ वहां नाला लंबे समय से खुला पड़ा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि कुछ दिन पहले भी इसी स्थान पर एक कार नाले में गिर चुकी थी, लेकिन उस घटना के बाद भी नगर निगम ने नाले को ढकने या सुरक्षा के लिए कोई ठोस व्यवस्था नहीं की।परिणामस्वरूप शुक्रवार रात फिर एक वाहन दुर्घटना का शिकार हो गया। घटना के बाद आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और चालक को सुरक्षित बाहर निकाला। स्थानीय नागरिकों ने नगर निगम की कार्यप्रणाली पर नाराजगी जताते हुए कहा कि यदि समय रहते खुले नालों को ढका जाता और सुरक्षा बैरिकेडिंग की जाती, तो इस तरह की घटनाओं से बचा जा सकता था। क्षेत्रवासियों ने नगर निगम प्रशासन से मांग की है कि खुले नालों को तत्काल ढका जाए, पर्याप्त चेतावनी संकेत और बैरिकेड लगाए जाएं, ताकि भविष्य में इस तरह की दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि समय रहते व्यवस्था नहीं की गई तो कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है।

संत रविदास महाराज की 650वीं जयंती पर भाजपा कार्यालय पर आयोजित हुई कार्यशाला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पीलीभीत। संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास महाराज की 650वीं जयंती के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय पीलीभीत पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज, डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलित एवं पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। कार्यशाला के मुख्य अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष गोकुल प्रसाद मौर्य रहे, जबकि संचालन जिला उपाध्यक्ष लेखराज भारती ने किया। कार्यशाला में पूरनपुर विधायक बाबूराम पासवान ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए संतों एवं महात्माओं के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संतों ने समाज को सदैव मानवता, समानता और भाईचारे का संदेश दिया है। बरखेड़ा विधायक स्वामी प्रवक्तानंद ने संत रविदास महाराज के संपूर्ण जीवन पर चर्चा करते हुए उनके जीवन से जुड़ी विभिन्न घटनाओं और समाज के प्रति उनके योगदान को विस्तार से बताया।बीसलपुर विधायक विवेक वर्मा ने कहा कि 29 जुलाई से पार्टी द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों में सभी कार्यकर्ताओं को मिलकर सक्रिय रूप से सहभागिता करनी है। उन्होंने कहा कि भाजपा विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है और महापुरुषों एवं संतों का सम्मान करने का कार्य भाजपा द्वारा निरंतर किया जा रहा है।जिलाध्यक्ष गोकुल प्रसाद मौर्य ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि पार्टी को सक्रिय एवं काम करने वाले कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। यदि कोई कार्यकर्ता अपने दायित्व का निर्वहन नहीं कर पा रहा है तो वह स्वयं अपना दायित्व छोड़ सकता है।उन्होंने कार्यकर्ताओं से पार्टी द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों को पूरी सक्रियता से संपन्न कराने के साथ ही डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म पर भी सक्रियता से कार्य करने का आह्वान किया।इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यसमिति सदस्य रजनीश पांडेय, जिला महामंत्री मंगली प्रसाद वर्मा, महादेव गाईन, अनुराग अग्निहोत्री, प्रदेश उपाध्यक्ष भाजयुमो सोनू वाल्मीकि, पूरनपुर नगर पालिका अध्यक्ष शैलेन्द्र गुप्ता, ललौरीखेड़ा ब्लॉक प्रमुख अजय सिंह गंगवार सहित भाजपा के विभिन्न पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे। कार्यशाला में जिला उपाध्यक्ष नमन प्रताप राजपूत, विकास श्रीवास्तव, रेखा परिहार, अतिंदर पाल सिंह, मनोज गुप्ता, आयुष मिश्रा, जिला मंत्री सत्यपाल वर्मा, अमित कुशवाहा, नागेंद्र सिंह गंगवार, विकास वाल्मीकि, रेनू राज, पंकज तिवारी, जिला कोषाध्यक्ष विकास पाल, संतोख सिंह संधू, शांति स्वरूप सोनकर, अभिषेक पटेल गोल्डी, हरिओम शर्मा, अभिमन्यु गंगवार, दीपक सोनकर, महेश वर्मा, डालचंद वर्मा सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

ड्राइवर पर एसडीएम के नाम पर धन उगाही करने का आरोप, सीएम से शिकायत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पूरनपुर (पीलीभीत)। उपजिलाधिकारी पूरनपुर के ड्राइवर पर साहब के नाम पर धन उगाही किए जाने के आरोप लगे हैं। यही नहीं ड्राइवर की माफियाओं से सांठ-गांठ की भी बात कही जा रही है। इसको लेकर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ और जिलाधिकारी से शिकायत कर कार्यवाही की मांग की गई थी। मामले को गंभीरता से लेते हुए जिलाधिकारी ने जांच पूरी होने तक ड्राइवर को हटा दिया है। तहसील में तैनात पूरनपुर एसडीएम के ड्राइवर नदीम के खिलाफ गंभीर आरोप लगाते हुए जिलाधिकारी और सीएम से निष्पक्ष जांच और कार्रवाई की मांग की गई है। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया है कि संबंधित चालक एसडीएम के नाम और पद का प्रभाव दिखाकर अवैध रूप से धन उगाही करता है तथा आपराधिक तत्वों से सांठगांठ रखता है। फिलहाल ये सभी आरोप शिकायतकर्ता के हैं और इनकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। नगर के मोहल्ला साहूकारा, लाइनपार निवासी वैभव सक्सेना ने 23 जुलाई को जिलाधिकारी को दिए गए प्रार्थना पत्र में आरोप लगाया है कि एसडीएम का चालक नदीम लंबे समय से खनन माफिया, अवैध लकड़ी कटान और गौकशी से जुड़े लोगों के संपर्क में रहता है तथा एसडीएम के नाम का प्रभाव दिखाकर अवैध तरीके से धन अर्जित करता है। शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि तहसील की फाइलों में मोटी रकम लेकर काम कराने का आश्वासन दिया जाता है और इसी कथित तरीके से करोड़ों रुपये की संपत्ति अर्जित की गई है। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि संबंधित चालक सरकारी वाहन के साथ अपनी तस्वीरें फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा कर अपना प्रभाव दिखाने का प्रयास करता है, जिससे आम लोगों पर रौब जमाया जा सके।प्रार्थना पत्र में पूरे मामले की गहन जांच कर संबंधित कर्मचारी को तत्काल हटाने तथा दोष सिद्ध होने पर विभागीय एवं कानूनी कार्रवाई की मांग की गई है। शिकायतकर्ता का कहना है कि इससे प्रशासन की साख बनी रहेगी और आम जनता को अवैध वसूली व प्रभाव के दुरुपयोग से राहत मिलेगी। एसडीएम मयंक गोस्वामी ने बताया कि जिलाधिकारी ने आरोपों की जांच कराने के आदेश दिए है। यह ड्राइवर उनसे पहले जो जिलाधिकारी थे, उनके समय में कार्य कर रहा था। वर्तमान में उसे काम से हटा दिया गया है। शिकायत सही पाए जाने पर निश्चित रूप से कार्रवाई की जाएगी।

सुप्रीम कोर्ट ने ज्ञानवापी मामले में याचिकाकर्ता से कहा - धैर्य रखें, अभी इसके लिए सही समय नहीं है

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। 'थोड़ा धैर्य रखें। कई मामले लंबित हैं।' सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को हिंदू पक्ष से यह बात कही। हिंदू पक्ष ने सावन के पवित्र महीने में वाराणसी में ज्ञानवापी परिसर के सील किए गए इलाके में मौजूद कथित शिवलिंग पर पूजा करने की अनुमति मांगी थी। चीफ जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली बेंच ने याचिका पर सुनवाई करते हुए वकील विष्णु शंकर जैन से कहा, 'इस तरह की प्रार्थना के लिए यह सही समय नहीं है।' हिंदू पक्ष ने ज्ञानवापी मस्जिद परिसर के सील किए गए वजूखाना इलाके के अंदर विशेष पूजा करने की अनुमति मांगी थी। सुप्रीम कोर्ट के अंतरिम आदेश के पालन में यह इलाका 2022 से सील है। विवादित ढांचा, जिसे हिंदू पक्ष शिवलिंग बताता है, 2022 में कोर्ट की निगरानी में हुए सर्वे के दौरान मिला था और सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुसार सील है। इस महीने की शुरुआत में, हिंदू और मुस्लिम दोनों पक्षों ने सुप्रीम कोर्ट के 'समाधान समारोह' पहल के तहत बातचीत से विवाद सुलझाने के प्रस्ताव को औपचारिक रूप से ठुकरा दिया था। इसके बजाय, उन्होंने कानूनी आधार पर नियमित न्यायिक प्रक्रिया के माध्यम से मामले का निपटारा करने का विकल्प चुना। जनवरी 2024 में, वाराणसी जिला अदालत ने हिंदू श्रद्धालुओं को ज्ञानवापी मस्जिद परिसर के दक्षिणी तहखाने, 'व्यास तहखाना' में पूजा करने की अनुमति दी थी।इसके बाद, इलाहाबाद हाई कोर्ट ने जिला अदालत के आदेश को चुनौती देने वाली ज्ञानवापी मस्जिद प्रबंधन समिति की अपील खारिज कर दी थी।

गांव की जर्जर सड़क व जलभराव से परेशान ग्रामीणों ने एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पूरनपुर (पीलीभीत)। गांव की जर्जर सड़क और उस पर होने वाले जलभराव की समस्या को लेकर जुलूस की शक्ल में तहसील परिसर पहुंचे ग्रामीणों ने उपजिलाधिकारी को एक ज्ञापन सौंपा है। जिसमें समस्या का समाधान न होने पर आंदोलन करने की चेतावनी दी गई है। तहसील क्षेत्र के ग्राम जादोपुर गहलुइया के ग्रामीणों ने गांव की जर्जर सड़क और जलभराव की समस्या को लेकर शनिवार दोपहर 12 बजे एसडीएम को ज्ञापन सौंपकर शीघ्र समाधान की मांग की। ग्रामीणों का कहना है कि मुख्य सड़क लंबे समय से बदहाल है। हल्की बारिश होते ही सड़क पर पानी भर जाता है और कीचड़ के कारण पैदल चलना भी मुश्किल हो जाता है। इसी मार्ग से स्कूली बच्चे, किसान, महिलाएं, बुजुर्ग और मरीज रोजाना आवागमन करते हैं, जिससे उन्हें भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीणों ने बताया कि कई लोग फिसलकर घायल भी हो चुके हैं, लेकिन अब तक समस्या का स्थायी समाधान नहीं किया गया। ज्ञापन में सड़क का शीघ्र निर्माण कराने और जल निकासी के लिए नाली बनवाने की मांग की गई है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो वह आंदोलन करने को मजबूर होंगे। ज्ञापन पर अकील बेग, कमरुद्दीन, शाकिर, अनस खान, मुजाहिद, जाकिर, आरिफ, मोहम्मद आकिब, अब्दुल कादिर, साजिद बेग, अफजाल, अरबाज, अयान खान सहित कई ग्रामीणों के हस्ताक्षर हैं।

जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने थाना समाधान दिवस में सुनीं फरियादियों की शिकायतें

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पीलीभीत। थाना समाधान दिवस में आने वाले फरियादियों की शिकायतों को सुनने के बाद जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने अधीनस्थों को जनता की समस्याओं का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने के निर्देश दिए हैं। थाना समाधान दिवस के अवसर पर शनिवार को थाना न्यूरिया परिसर में पुलिस अधीक्षक पीलीभीत सुकीर्ति माधव एवं जिलाधिकारी पीलीभीत ज्ञानेन्द्र सिंह ने पहुंचकर क्षेत्रीय जनता की समस्याएं सुनीं। दोनों अधिकारियों ने फरियादियों से सीधे संवाद करते हुए उनकी शिकायतों एवं प्रार्थना पत्रों को गंभीरता से सुना और संबंधित अधिकारियों को शिकायतों का समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।समाधान दिवस में विभिन्न मामलों से संबंधित शिकायतें अधिकारियों के समक्ष पहुंचीं। जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि शिकायतों के निस्तारण में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए। फरियादियों की समस्याओं का निष्पक्षता के साथ समाधान करते हुए उन्हें अनावश्यक रूप से अधिकारियों और कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें, इसका विशेष ध्यान रखा जाए। अधिकारियों ने विशेष रूप से राजस्व से संबंधित शिकायतों के निस्तारण को लेकर निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राजस्व संबंधी मामलों में राजस्व एवं पुलिस विभाग की संयुक्त टीमें गठित कर मौके पर भेजी जाएं और स्थलीय निरीक्षण करते हुए निष्पक्ष एवं न्यायोचित कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। अधिकारियों ने कहा कि शिकायतों का निस्तारण केवल कागजी कार्रवाई तक सीमित न रहे, बल्कि मौके पर जाकर वास्तविक स्थिति की जांच करने के बाद ही प्रभावी समाधान किया जाए। थाना समाधान दिवस के दौरान थाना क्षेत्र के आसपास के सभी ग्राम प्रधानों को भी बुलाया गया। जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने ग्राम प्रधानों से उनके-अपने गांवों की समस्याओं तथा जनहित से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी प्राप्त की। ग्राम प्रधानों द्वारा बताई गई समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए अधिकारियों ने संबंधित विभागों को उनके त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान अधिकारियों ने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप जनता की समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान करना पुलिस और प्रशासन की जिम्मेदारी है। आमजन को त्वरित न्याय दिलाने और उनकी समस्याओं के प्रभावी निस्तारण के लिए प्रशासन एवं पुलिस विभाग पूरी गंभीरता के साथ कार्य कर रहा है।

बाइकों की भिड़ंत में तीन घायल, दो गम्भीर

पूरनपुर (पीलीभीत)। किसान नेता के घर से वापस लौट रहे राजमिस्त्री और मजदूर की बाइक की दूसरी बाइक से भिड़न्त हो गयी। इस हादसें में तीन लोग घायल हो गये। घायलों को प्राथमिक उपचार के उपरांत जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। बताया जाता है कि घायलों में दो लोगों की हालत गम्भीर बनी हुई है। कोतवाली क्षेत्र के गांव टांडा छत्रपति निवासी राजमिस्त्री संजीव शर्मा पुत्र मंगरेलाल गुरुवार को गांव के भगवानदीन के साथ पचपेड़ा निवासी किसान नेता मंजीत सिंह के घर निर्माण कार्य करने गए थे। शाम को काम खत्म कर दोनों बाइक से घर लौट रहे थे। खमरिया के पास पहुंचते ही उनकी बाइक की दूसरी बाइक से आमने-सामने टक्कर हो गई। हादसे में सर्वेश शर्मा, भगवानदीन तथा दूसरी बाइक सवार पूरनपुर की रजा कॉलोनी निवासी सर्वेश पुत्र रामकिशन घायल हो गए।दुर्घटना की सूचना मिलते ही मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। स्थानीय लोगों की मदद से तीनों घायलों को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) पूरनपुर पहुंचाया गया।